

संपादक

अभिजीत कुमार, 9431006107

समाचार संपादक

अखिलेश कुमार, 9431089053

राजनीतिक संपादक

प्रो. नीरज कुमार सिंह, 9431049337

सहायक संपादक

प्रभाकर कुमार राय/एस. एन. श्याम

संपादकीय सलाहकार

राजीव कुमार सिंह 9431210181

रंजीत कुमार 8800689555

कॉन्सेप्ट एडिटर

अनूप कुमार शर्मा, 7004821433

विधि सलाहकार

वीणा कुमारी जयसवाल, पटना हाई कोर्ट

राजनीतिक व्यूगे

गौतम सुमन गर्जना, 9934880594

बिहार व्यूगे

अनूप नारायण सिंह

मुख्य संवाददाता

सोनू सिन्हा, 9431006189

आशीष कुमार

जिला व्यूगे

बेगूसराय : विरेश कुमार सिंह, 9430415316

अमित सिंह, 9430595995

भागलपुर प्रमंडल : राजेश पंजिकार,

(व्यूगे चीफ), 9334114515

समस्तीपुर : राजेश कुमार

चांदन : अमोद कुमार दूबे : 8578934993

मुंगेर : सिद्धांत

बाराहाट : हेमन्त कुमार (संवाददाता)

सुईया : चन्द्रशेखर मिश्र (संवाददाता)

बिहार-झारखण्ड : अभिनव कुमार 7903292877

दिल्ली : नवल वत्स, 9818901841

स्वाति

ग्रेटर नोएडा : गौरीशंकर, 8920215318

प्रधान कार्यालय

गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली मंदिर रोड नं.- 7, पटना - 800 020 (बिहार)

मो.- 9431006107, 9939815347

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक : अभिजीत कुमार

गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली

मंदिर रोड नं.- 7 पटना - 800 020 (बिहार) से

प्रकाशित व एस. एम. ऑफसेट पंडुईकोटी लंगर टोली,

डीएन दास लेन, पटना-800 004, से मुद्रित।

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के विवाद के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे। इसके लिए संपादक से सहमति जरूरी नहीं। पत्रिका से संबंधित सभी विवादों का निवाटा पटना उच्च न्यायालय से होगा।

संरक्षक



डॉ. संजय मयूर

राष्ट्रीय साह मीडिया प्रभारी  
माजपा

जय जयराम सिंह

JJRS CONSTRUCTION  
PVT. LTD.

# चर्चित बिहार

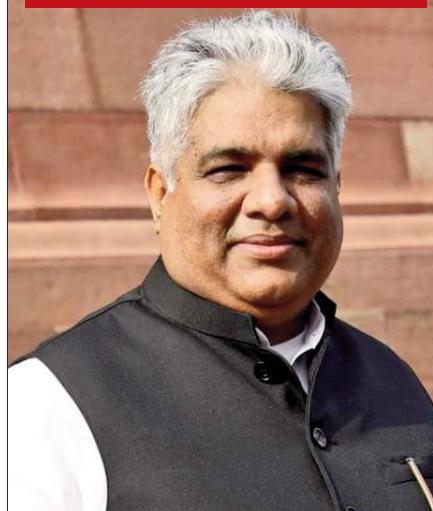
वर्ष : 7, अंक : 6, फरवरी 2020, मूल्य : 25/- राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका



10

जातीय राजनीति करने वाले लोगों के मुँह पर तमाचा है ...

नए भारत की परिकल्पना... 12



ग्रामीण भारत को खुशहाल ... 14



चिराग की बढ़ी चमक... 16



लॉ एंड आर्डर पर भड़के... 17

# विस चुनाव नतीजे : दिल्ली से आगे दि



**अभिजीत कुमार**  
संपादक  
9431006107

[cbhindi.news@gmail.com](mailto:cbhindi.news@gmail.com)

ली की विधानसभा भले ही छोटी हो, राज्य सरकार के अधिकार भी सीमित हों, लेकिन देश की राजधानी होने के कारण इसके चुनाव पर पूरे भारत की नजर रहती है। कम से कम बीजेपी ने तो दिल्ली असेंबली इलेक्शन को बाकायदा राष्ट्रीय महत्व के चुनाव की तरह ही लड़ा है। प्रधानमंत्री इसमें अपेक्षाकृत कम सक्रिय रहे, लेकिन पार्टी के चाणक्य कहलाने वाले गृह मंत्री अमित शाह ने इसमें अपनी पूरी ताकत झोंक दी। बीजेपी के लगभग सभी केंद्रीय मंत्री, सांसद, यूपी के मुख्यमंत्री और कई वरिष्ठ सांगठनिक नेता चुनाव प्रचार में लगे रहे। उन सबने अपने प्रचार के दौरान राष्ट्रीय मुद्दे ही उठाए। ऐसे में दिल्ली के जनादेश को स्थानीय नहीं माना जा सकता। इसका राष्ट्रीय राजनीति पर असर पड़ना स्वाभाविक है। एक बात फिर से साफ हुई कि राज्यों के चुनावों में न तो मोदी मैजिक काम आ रहा है, न अमित शाह की रणनीति। आम चुनाव 2019 को अपवाद मान लें तो 2015 के गुजरात विधानसभा चुनाव के बाद से ही बीजेपी की अजेयता संकटप्रस्त है। गुजरात में पार्टी बड़ी मुश्किल से जीती। कर्नाटक में सबसे बड़ी पार्टी होकर भी तुरंत सरकार नहीं बना सकी। पंजाब, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान और झारखण्ड में पार्टी को हार मिली। हरियाणा में वह अकेले सरकार नहीं बना पाई और महाराष्ट्र में जीतकर भी सत्ता गंवा दी। अब दिल्ली में उसके लिए नतीजे इतने खराब रहने से विपक्ष का मनोबल बढ़ेगा। राष्ट्रीय स्तर पर इसका संदेश यह गया है कि मिली-जुली ताकत और सधी रणनीति से बीजेपी को चित किया जा सकता है। मतलब यह कि जनता अब आंख मूंदकर बीजेपी के हर मुद्दे को समर्थन नहीं दे रही। मोदी ब्रैंड के कमज़ोर होने का एक संकेतक यह है कि नरेंद्र मोदी ने दिल्ली में दो रैलियां कीं और शाहीनबाग के मुद्दे को बहुत ही आक्रामक तरीके से उठाया, लेकिन मतदाताओं पर उसका कोई असर नहीं पड़ा। दिल्ली के नतीजों का एक असर यह भी देखने को मिलेगा कि उसके सहयोगी दल अब उससे कड़ी सौदेबाजी कर सकते हैं। यह सबसे पहले बिहार में देखने को मिलेगा। वहां इस साल नवंबर में होने वाले इलेक्शन में जेडीयू नेता और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार राज्य बीजेपी को कम सीटों पर मान जाने के लिए मजबूर करेंगे, जिससे गिरिराज सिंह जैसे बीजेपी क्षत्रप कमज़ोर होंगे। दिल्ली के चुनाव ने यह भी साबित किया कि जनांदोलनों के जरिये चुनावी राजनीति में हस्तक्षेप किया जा सकता है। शाहीनबाग ने साबित किया कि धीरे-धीरे एक अलग तरह का विपक्ष तैयार हो रहा है। संभव है, राष्ट्रीय राजनीति के संदर्भ में अरविंद केजरीवाल के इर्द-गिर्द देश के अपोजिशन की कोई गोलबंदी तैयार हो। प्रश्न यह भी है कि विकास के अंडे को दोहराते हुए तमाम जरूरी सियासी प्रश्नों से किनारा करने और सॉफ्ट हिंदुत्व अपनाने की केजरीवाल मार्का राजनीति क्या बीजेपी मॉडल की काट बन सकती है? बीजेपी को भी सोचना होगा कि जनाकांक्षाओं को समझने में उससे कहीं कोई बड़ी चूक तो नहीं हो रही?

# दुनियां की बड़ी पार्टी को महज सात साल की पार्टी ने बुरी तरह से पछाड़ा

केजरीवाल ने नीति और नियती को एक कर जीता दिल्ली वालों का दिल बड़े नाम पर चोट और मिला काम पर वोट

गौतम सुमन गर्जना/भागलपुर



दिल्ली विधानसभा चुनाव 2020 ऐसे वक हुए, जब दिल्ली सहित देश भर में संशोधित नागरिकता कानून, राष्ट्रीय नागरिक पंजी और राष्ट्रीय जनसंघ पंजी के विरोध में प्रदर्शन हो रहे थे। भाजपा पर विभाजनकारी राजनीति करने के आरोप लगे थे और राष्ट्रीय राजधानी के शाहीन बाग क्षेत्र में 50 दिन से चले रहे महिलाओं के प्रदर्शन का मुद्दा उठाने के लिए उस पर मतदाताओं के ध्वनीकरण का आरोप लगा था।

इस चुनाव में एक ओर भाजपा का प्रचार जहां राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दे पर केंद्रित था वहाँ आप ने अपना प्रचार बिजली, पानी शिक्षा, स्वास्थ्य और मूलभूत ढांचे के विकास पर केंद्रित रखा था।

गैरतंत्र है कि अन्ना हजारे के आंदोलन से निकले अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी के गठन के महज 7 साल हुए हैं और उन्होंने दिल्ली के दंगल में दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी होने का दम भरने वाली भाजपा को लगातार दूसरी बार करारी मात्र दी है। केजरीवाल को मात्र देने के लिए बीजेपी ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी थी, इसके बाद भी वह अपने सत्ता के बनवास को खत्म नहीं कर सकी।

महज सात साल पहले अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में बनी आम आदमी पार्टी ने दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी होने का दावा करने वाली बीजेपी को दिल्ली में करारी मात्र दी है। इस तरह से बीजेपी की दिल्ली में 22 साल के सत्ता के बनवास को खत्म करने की कोशिशें धरी की धरी रह गईं। इस तरह से बीजेपी का बनवास 5 साल का इजाफा और हो गया है। बीजेपी को आम आदमी पार्टी ने लगातार दूसरी बार शिक्षस्त दी और भाजपा दोनों बार डबल डिजिट भी पार नहीं कर सकी। दिल्ली में फिर से आम आदमी पार्टी की मिली प्रचंड जीत ने बीजेपी की रणनीति पर सवाल खड़े कर दिए हैं।

अन्ना आंदोलन से निकले 16 अगस्त 1968 में



जन्मे अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी के गठन के महज सात साल हुए हैं। कह सकते हैं कि आप का सियासी आधार दिल्ली तक ही सीमित है और थोड़ा बहुत पंजाब में है। वहाँ, बीजेपी के 12 करोड़ से ज्यादा सदस्य हैं और मौजूदा समय में बीजेपी या उसके सहयोगियों की 16 राज्यों में सरकार में है। ऐसे में बीजेपी ने दिल्ली की सलतनत पर काबिज होने के लिए अपने सभी बड़े नेताओं ने प्रचार में उतारा था, लेकिन केजरीवाल के विजय रथ को नहीं रोक सके।

आम आदमी पार्टी के मुफ्त बिजली, पानी व महिलाओं को डीटीसी में फ्री यात्रा के मुद्दे का बीजेपी कोई तोड़ नहीं निकाल सकी। हालांकि बीजेपी ने शाहीन बाग को भी मुद्दा बनाया और इसका उसे लाभ भी मिला, लेकिन इतना नहीं कि वह आम आदमी पार्टी से बराबरी का मुकाबला कर सके।

जिस तरह से 2019 के लोकसभा चुनाव में नरेंद्र मोदी के साथ हुआ था, ठीक उसी तरह दिल्ली में अरविंद केजरीवाल के लिए रहा कि (कोई विकल्प नहीं) फैक्टर ने काम किया। आम आदमी पार्टी ने बेहद चुनूर्गी से दिल्ली के मतदाताओं को समझाया कि बीजेपी के पास केजरीवाल की जगह लेने के लिए कोई योग्य शब्दिस्यत है ही नहीं। पिछले छह माह के दौरान

केजरीवाल सरकार ने और मुफ्त चीजों की घोषणा की जिसमें बसों और मेट्रो में महिलाओं और विद्यार्थियों को मुफ्त यात्रा शामिल है। इसके चलते महिलाओं के बीच केजरीवाल की पकड़ मजबूत हुई।

दिल्ली में बीजेपी जिस तरह से शाहीन बाग मुद्दे पर आक्रमक रही, उससे मुस्लिम मतदाता आम आदमी पार्टी के पक्ष में एकजुट हो गया, जिसने करीब एक दर्जन सीटों को प्रभावित किया। वहाँ, केजरीवाल ने सॉफ्ट हिंदुत्व की राह को भी अपनाया और उन्होंने हनुमान चालीसा का पाठ किया। इससे वह हिंदू बोटों का बीजेपी के पक्ष में ध्वनीकरण होने से भी रोकने में सफल रहे।

बीजेपी के केंद्रीय नेतृत्व ने इस बार के चुनाव को प्रतिष्ठा का चुनाव बनाकर लड़ा। गृह मंत्री अमित शाह की अगुआई में भाजपा ने गली-कूचे तक पहुंचकर आम आदमी पार्टी को बराबरी की टक्कर देने की कोशिश की। दिल्ली चुनावों में पीएम मोदी ने दो जनसभाएं कीं और गृहमंत्री अमित शाह ने करीब 50 रैलियां और रोड शो किए। शाह ने डोर टू डोर कैपेन भी किया। बीजेपी अध्यक्ष जेपी नन्हा ने 30 आम सभाएं कीं। वहाँ, केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने 25 से ज्यादा रैलियों को संबोधित किया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने 12 और केंद्रीय मंत्री

नितिन गडकरी ने 10 रैलियों को संबोधित किया.

मुख्यमंत्रियों की बात करें तो बीजेपी के फायरब्राउंड नेता और यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ ने दिल्ली में 15 रैलियों को संबोधित किया। हिमाचल के सीएम जयराम ठाकुर, उत्तराखण्ड के सीएम त्रिवेंद्र सिंह रावत और हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर ने भी कई रैलियां कीं। एमपी के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और महाराष्ट्र के पूर्व सीएम देवेंद्र फडणवीस ने भी दिल्ली में पार्टी के लिए कैपेन किया। इसके अलावा कई और मंत्री और मुख्यमंत्रियों के आक्रामक प्रचार के बावजूद बीजेपी दहाई के अंक को पार नहीं कर सकी। 2015 में बीजेपी ने 3 सीटें जीती थीं, तो इस बार पार्टी 8 सीटों तक पहुंच सकी।

दूसरी ओर, आम आदमी पार्टी को 62 सीटें मिलीं और उसे दिल्ली में 54 फीसदी वोट मिले। 2015 के मुकाबले बीजेपी का वोट शेयर 32 से बढ़कर 38 तक पहुंचा, लेकिन इससे उसकी सीटें ज्यादा नहीं बढ़ीं। बीजेपी को सिर्फ 8 सीटों पर जीत मिली। इस बार के चुनाव में भी कांग्रेस अपना खाता नहीं खोल सकी। खास बात तो यह रही कि कांग्रेस की 67 सीटों पर जमानत जब्त हो गई।

दरअसल, बीजेपी की रणनीति दिल्ली में दस फीसदी वोट बढ़ने की थी, लेकिन वह साढ़े छह फीसदी वोट ही बढ़ा सकी। कांग्रेस भी थोड़ा बेहतर प्रदर्शन करती तो बीजेपी की राह आसान होती, क्योंकि कांग्रेस आम आदमी पार्टी का वोट काट सकती थी। लेकिन यह सब रणनीति सफल नहीं हो सकी। बीजेपी को तीनों नगर नियम में सत्ता में होने और सभी सात लोकसभा सांसदों के होने का भी कोई लाभ नहीं मिल सका। दिल्ली के चार संसदीय क्षेत्रों में तो बीजेपी का खाता भी नहीं खुला।

गौतम गंभीर के संसदीय क्षेत्र पूर्वी दिल्ली में चार, प्रदेश अध्यक्ष व उत्तर पूर्व दिल्ली के सांसद मनोज तिवारी के क्षेत्र में तीन और उत्तर पश्चिम दिल्ली के सांसद हंसराज हंस के क्षेत्र में एक सीट मिली है। दिल्ली के नतीजे बीजेपी के लिए चिंता से ज्यादा चिंतन का विषय हैं। बीजेपी में अब नया नेतृत्व आ गया है। यह असफलता बीजेपी के नए अध्यक्ष जेपी नड्डा के सिर तो नहीं बंधेगी, लेकिन उनको अब दिल्ली का तोड़ निकालना होगा तभी दुनिया की सबसे बड़ी पॉलिटिकल पार्टी का भारत के दिल पर काबिज होने का सपना साकार हो सकेगा।

## क्यों जनता का नब्ज नहीं पकड़ पाई भाजपा, ये हैं हार के प्रमुख कारण

दिल्ली के चुनावी रण का नतीजा आ चुका है। अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी ध्वांसांघर प्रदर्शन करते हुए 62 सीटों पर जीत का परचम लहराया। वहीं बीजेपी 8 सीटों पर ही सिमट कर रह गई। कांग्रेस का इस बार भी खाता नहीं खुला है। बीजेपी के लिए चुनाव के ये नतीजे किसी सदमे से कम नहीं हैं। पार्टी के कई नेता चुनाव में जीत का दावा कर रहे थे। लेकिन जब नतीजे आए तो हर कोई आम आदमी पार्टी की सुनामी देखकर हैरान रह गया। वोटिंग से पहले बीजेपी नेताओं ने जमकर जुबानी बाण छोड़े। शाहीन बाग से लेकर अरविंद केजरीवाल पर हमला बोला। आइए



आपको बताते हैं कि बीजेपी से विधानसभा चुनाव में जनता की नब्ज पकड़ने में अखिर कहां चूक गई।

## शाहीन बाग को बनाया मुद्दा

पूरे विधानसभा चुनाव में शाहीन बाग को बीजेपी ने जमकर मुद्दा बनाया। गृह मंत्री अमित से लेकर अन्य नेताओं ने खूब बयानबाजी की। दिल्ली के स्थानीय मुद्दों पर बात न करके बीजेपी राष्ट्रवाद, अर्टिकल 370 और शाहीन बाग को ही उछालती रही। बीजेपी ने न तो दिल्ली के विकास का कोई विजन पेश किया और न ही लोगों को भरोसा दिलाया कि अगर उन्हें वोट मिला तो किस तरह राजधानी की सूरत बदलेंगे।

## चेहरा नहीं होना

अरविंद केजरीवाल के सामने किसी चेहरे को पेश न करना भी बीजेपी के हार की एक वजह है। दरअसल हरियाणा और झारखण्ड की रणनीति से इतर बीजेपी ने दिल्ली में किसी चेहरे पर दाव नहीं लगाया और पीएम नरेंद्र मोदी के नाम पर ही चुनाव लड़ा। इसे लेकर मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने चुनौती भी दी थी कि बीजेपी अपना सीएम उम्मीदवार घोषित करे। हालांकि केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने कहा था कि मनोज तिवारी की अगुआई में चुनाव लड़ा जाएगा, ताकि बाद में उन्होंने इस पर यू-टर्न ले लिया।

## विकास पर फोकस नहीं

केजरीवाल की आम आदमी पार्टी जहां लोगों के बीच अपने 5 साल में किए काम का लेखा-जोखा पेश किया। वहीं बीजेपी ने स्थानीय मुद्दों पर कोई बात नहीं की। हालांकि बीजेपी ने दिल्ली में पानी की खराब क्वालिटी पर बात रखी। लेकिन इतने जोरदार तरीके से नहीं कि लोग उससे प्रभावित हो सकें। बीजेपी सिर्फ पीएम नरेंद्र मोदी की सरकार के ही कामकाज गिनाती रही। बीजेपी दिल्ली म्युनिसिपलिटी में 15 साल से है। उसके पास कामकाज गिनाने का मौका था। लेकिन उसने इसे गंवा दिया।

## केजरीवाल की मुफ्त स्कीमों का जवाब नहीं

200 यूनिट तक प्री बिजली, 20 हजार लीटर पानी, बेहतर शिक्षा और विकित्सा, मोहल्ला क्लिनिक। अरविंद केजरीवाल की इन स्कीमों का बीजेपी के पास कोई जवाब नहीं था। बीजेपी ने इसका कोई रोडमैप पेश नहीं किया कि सरकार में आने पर वह जनता को केजरीवाल सरकार से बेहतर क्या सुविधाएं मुहैया कराएगी। बीजेपी ने अपने मेनिफेस्टो में भी इन्हीं प्री बिजली और पानी की स्कीम को कायम रखने की बात कही।

## केजरीवाल को धेरने में नाकाम

दिल्ली चुनावों में बीजेपी नेता मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर जुबानी हमला बोलते रहे। उन्हें आतंकवादी तक कहा गया। लेकिन नीतियों या काम को लेकर बीजेपी सीएम को धेरने में पूरी तरह नाकाम दिखी। दरअसल बीजेपी ने अपना पूरा फोकस शाहीन बाग और सीएम केजरीवाल पर व्यक्तिगत हमला करने में किया, जो उनके लिए उल्टा पड़ गया।

## कांग्रेस की 63 सीटों पर जमानत तक हो गई जब्त, पिछली बार की तरह इस बार भी नहीं खुला खाता

पूरे चुनावी कैपेन में कांग्रेस ने बीजेपी को अपना धूर विरोधी बताया लेकिन उसका वोट शेयर कहीं न कहीं आम आदमी पार्टी और बीजेपी के बीच बंट गए। कांग्रेस ने यहां तक कहा कि बीजेपी से पार पाने के लिए वह कोई भी बलिदान देने को तैयार है। उसकी बात अश्वराशः साबित हुई और उसके सभी वोटर्स बीजेपी और आम आदमी पार्टी के बीच बंट गए।

अरविंद केजरीवाल-नीत आम आदमी पार्टी दिल्ली विधानसभा चुनाव में जीत के साथ फिर एक बार सरकार बनाने जा रही है। इससे लगता है यह आम आदमी पार्टी जोरदार तरीके से सत्ता पर तीसरी बार काबिज होने जा रही है और बीजेपी ने पहले से बेहतर प्रदर्शन किया है। लेकिन कांग्रेस के लिए यह चुनाव निराशा भरा है। कांग्रेस को 2015 की तरह अबतक शून्य सीट मिली है और इस बार तो पार्टी का मत प्रतिशत भी कम हो गया है।

दिलचस्प बात यह है कि कुल 66 (70 में 4 सीटों पर आरजेडी के प्रत्याशी चुनाव लड़े) उम्मीदवारों में 3 प्रत्याशियों की बड़ी मुश्किल से जमानत बच पाई है। कांग्रेस की 63 सीटें ऐसी हैं जहां कांग्रेस की जमानत राशि भी जब्त हो गई। कांग्रेस ने 4 सीटें लालू प्रसाद की पार्टी आरजेडी को दी थी। पालम, किराड़ी, बुराड़ी और उत्तम नगर में गठबंधन के तहत आरजेडी ने अपने उम्मीदवार उतारे थे।

### कांग्रेस का वोट शेयर फिसला

कांग्रेस गठबंधन को 70 में एक भी सीट मिली। कांग्रेस के लिए दुखद बात यह भी है कि उसके बोट शेयर लगातार गिरते जा रहे हैं। इस बार 4.36 प्रतिशत लोगों का समर्थन मिला है। हालांकि यह बोट शेयर सीट में तब्दील नहीं हो पाया। ठीक वैसे ही जैसे बीजेपी का बोट शेयर तकरीबन 39 फीसदी रहा लेकिन सीटें मजह 8 मिली हैं। 2015 के लिहाज से 2020 का चुनाव देखें तो कांग्रेस एक पायदान भी आगे नहीं बढ़ पाई क्योंकि पिछले चुनाव में भी वह शून्य पर रही और इस बार भी यही स्थिति देखी जा रही है।

### पोस्टर पर शीला, झोली में हार

कांग्रेस पार्टी ने इस बार स्टार कैपेनर में राहुल गांधी और प्रियंका गांधी को उतारा। पार्टी अध्यक्ष सेनियर गांधी का भी नाम था लेकिन ऐन वक्त उनकी तबीयत खराब हो गई। पूरे चुनावी कैपेन में कांग्रेस ने बीजेपी को अपना धूर विरोधी बताया लेकिन उसके बोट शेयर कहीं न कहीं आम आदमी पार्टी और बीजेपी के बीच बंट गए। कांग्रेस ने यहां तक कहा कि बीजेपी से पार पाने के लिए वह कोई भी बलिदान देने को तैयार है। उसकी बात अक्षरशः साबित हुई और उसके सभी वोटर्स बीजेपी और आम आदमी पार्टी के बीच बंट गए।

कांग्रेस ने अपने पोस्टर पर पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित को जगह दी और नारा दिया-फिर से कांग्रेस वाली दिल्ली लाएंगे। हालांकि पोस्टर पर शीला दीक्षित नजर जरूर आई लेकिन उनकी विरासत दिल्ली से पूरी तरह गयब हो गई। शीला ने दिल्ली पर 15 साल एकछत्र राज किया, हालांकि उनके जाते ही पार्टी आज 5 फीसदी बोट शेयर के लिए ज़ज़्जती दिख रही है।

इसकी नाराजगी कांग्रेस में देखी जा रही है। तभी उनके बेटे संदीप दीक्षित ने खुलेआम कहा कि दिल्ली में कांग्रेस के बड़े-बड़े नेता अब नेता नहीं बल्कि ऑफिस बॉय ज्यादा हैं, जिनके बड़े-बड़े फार्महाउस हैं। ऐसे नेता कॉर्पोरेशन का चुनाव भी नहीं जीत सकते। संदीप दीक्षित ने कहा, दिल्ली में कांग्रेस ने शीला जी की सरकार को बदनाम किया। लोकसभा चुनाव के बाद वोट प्रतिशत बढ़ने के बावजूद कांग्रेस शीला दीक्षित को जलीत करने में लग गई। यही वजह है कि लोगों को कांग्रेस नहीं भा सकी। संदीप दीक्षित की यह बात कांग्रेस के लिए सबक समझी जा सकती है।

### अलका लांबा की बुरी हार

चांदनी चौक संसदीय क्षेत्र की तीनों सीटों चांदनी चौक, बल्लीमारान और मटिया महल (जामा मस्जिद) पर आम आदमी पार्टी का परचम लहरा गया है। इन तीनों ही सीटों से कांग्रेस और बीजेपी ने अपने दिग्गज नेताओं को मैदान में उतारा था। जहां कांग्रेस के लिए इन सीटों



पर जमानत बचाना मुश्किल हो गया, बहीं बीजेपी भी आम आदमी पार्टी को कोई टक्कर नहीं दे पाई। चांदनी चौक सीट से कांग्रेस प्रत्याशी अलका लांबा को महज पांच फीसदी बोट ही हासिल हो पाए। दिल्ली की 70 में 66 सीटों पर कांग्रेस बुरी तरह पराजित हुई और तीन सीटें ऐसी रहीं जहां हार तो हुई ही, मुश्किल से जमानत बच पाई। ये 3 सीटें रही हैं-गांधी नगर, बादली और कस्तूरबा नगर।

कांग्रेस की सहयोगी पार्टी आरजेडी की भी 4 सीटों पर करारी हार हुई। उधर, अलका लांबा के साथ खास बात यह है कि पिछले चुनाव में उन्होंने आम आदमी पार्टी से भाय आजमाया और विजयी घोषित हुई लेकिन इस बार कांग्रेस में जाते ही वोटर्स ने उनका साथ छोड़ दिया। पिछली बार अलका लांबा ने 18287 बोटों से चुनाव जीता था।

### हार नहीं, बराबरी है...

दिल्ली में कांग्रेस की हार कोई हार नहीं बल्कि बराबरी है, यानी पिछली बार भी शून्य सीट थी और इस बार भी यहीं दशा है। कांग्रेस नेता और पंजाब के कैबिनेट मंत्री सधू सिंह धर्मसोत ने कहा कि दिल्ली में पार्टी की हार नहीं हुई बल्कि 2015 के मुकाबले यह टैली बराबरी पर है। धर्मसोत के मुताबिक यह बीजेपी का नुकसान है। धर्मसोत ने मीडिया से कहा, हम पहले भी शून्य पर थे और इस बार भी शून्य पर हैं। इसलिए यह हमारी हार नहीं, बीजेपी की हार है। बता दें, 2015 के चुनाव में भी कांग्रेस को एक भी सीट नसीब नहीं हुई थी।

बहरहाल, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने वर्तमान चुनाव में जिस तरह के सधी और संयत राजनीति की है, उसकी उम्मीद एक वर्ष पूर्व तक किसी को नहीं रही होगी। उन्होंने इस चुनाव के दौरान अपने किसी भाषण में नरेंद्र मोदी का नाम तक नहीं लिया। जबकि यहीं केजरीवाल पिछले चार वर्षों तक प्रधानमंत्री मोदी को ना जाने किन-किन विशेषताओं से विभूषित किया करते थे। उन्होंने शाहिनबाग को लेकर भी कोई ऐसा वक्तव्य देना मुनासिब नहीं समझा जिससे कि भारतीय जनता पार्टी(भाजपा) को उन्हें धेरने का मौका मिले। जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकसभा में राम

जन्मभूमि निर्माण के लिए ट्रस्ट की घोषणा की, तो अन्य पार्टियों ने इसे चुनाव को ध्यान में रखते हुए की गई घोषणा करार दे दिया; लेकिन केजरीवाल ने अपनी टिप्पणी में इसका चुनाव से कोई लेना-देना नहीं बताया और कहा कि मंदिर तो बनना ही चाहिए क्योंकि यह सुप्रीम कोर्ट का आदेश है और सुप्रीम कोर्ट ने ही ट्रस्ट बनाने का निर्देश दिया है। सवाल यह है कि आखिर केजरीवाल ने ऐसी रणनीति क्यों बनाई? जो व्यक्ति बात-बात पर सीधे प्रधानमंत्री को ही निशाना बनाया करते थे, अचानक उसमें इस तरह का बदलाव कर दिया और कैसे आ गया? इसी सवाल के उत्तर में केजरीवाल के भविष्य की राजनीति हमें कुछ सबक सिखा रही है। गैर करें कि 2011 में अन्ना हजारे के अभियान से लेकर 2020 के केजरीवाल के वक्तव्यों और व्यवहार दोनों में आमूल परिवर्तन आ गया है, जो कुछ उन्होंने कहा उसके विपरीत डंके की चोट पर बोलने और कर्म करने में उन्हें जरा भी कभी हिचक नहीं हुआ। इस तरह का व्यक्तित्व भारत की क्षरित राजनीति में विरले को ही मिलता है।

व्यक्ति अनुभवों से सीखता है। केजरीवाल के सीखने का तरीका अपने किस्म का है। कुछ लोग उन्हें राजनीति में अभिनय सप्त्राट का खिलाव यू ही नहीं दिये हैं। वह कल क्या बोलेंगे... क्या करेंगे... इस का पूर्वानुमान लगाना तो उनके धुरंधर साथियों के लिए भी कठिन है। तभी तो अन्ना अभियान से लेकर पार्टी की स्थापना और चुनाव में उनके विजय के लिए काम करने वाले ज्यादातर प्रमुख साथी आज उनके साथ नहीं हैं या तो उन्होंने उनको मजबूर कर दिया कि वह बाहर चले जाएं और जो स्वयं नहीं गए उनको बाहर महज इसलिए कर दिया कि उनकी नीति और नियति एक नहीं दिखी। केजरीवाल जो कुछ बोलते हैं और जो कुछ नहीं बोलते हैं उससे उनके चिंतन और भावी व्यवहार का आकलन करना बिल्कुल गलत होगा। ये भी सच है कि केजरीवाल को समझ में आ गया है कि मोदी की लोकप्रियता देश में अतुलनीय है। उन्होंने उन पर हमला करने की प्रक्रिया में जनता का गुस्सा देखा है। 2019 के लोकसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी दिल्ली में तीसरे नंबर की पार्टी बनने को विवश हो गई थी। इससे यह नहीं मानना

चाहिए कि मोदी के प्रति उनके अंदर का सम्मान का भाव पैदा हो गया है, या वे हिंदुत्व के पैरोकार हो गए हैं या अचानक इन्हें सेक्यूरिटी बनाने की आवश्यकता महसूस नहीं होती। दरअसल, केजरीवाल को पता था कि कांग्रेस मैदान में कहीं नहीं है इसलिए मुसलमानों का ज्यादातर बोट तो आम आदमी पार्टी को यानी कि उन्हें ही मिलना है तो उनके बारे में उन्हें कुछ बोलने की क्या आवश्यकता थी।

बहरहाल, 2020 दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी का दर्जा रखने वाली भाजपा के लिए बड़ी तो कुछ माह परिणाम के लिहाज से सही साबित नहीं हो रहे हैं। पहले वर्ष 2019 के अंत में झारखण्ड और अब साल 2020 के पहले ही चुनावों में दिल्ली में करारी हार मिली है। लोकसभा चुनावों में जबरदस्त प्रदर्शन करने के बावजूद भाजपा के हाथों से राज्य लगातार खिसकते जा रहे हैं। जबकि 2015-16 का एक बक्त था जब भारत के मानचित्र पर हर अधिकतर जगहों पर भगवा ही दिख रहा था, मगर अब ऐसा नहीं है। इस बार उम्मीद जताई जा रही थी कि भाजपा दिल्ली में सत्ता का दो दशक का बनवास खत्म कर सकती है, लेकिन ऐसा नहीं हुआ और इसके साथ ही भाजपा के सियासी नक्शे में दिल्ली का नाम नहीं जुड़ पाया।

भारत में इस समय दिल्ली को मिलाकर 12 राज्यों में भाजपा विरोधी दलों की सरकार है। जबकि एनडीए के पास 16 राज्य हैं, विधानसभा चुनावों में हार की बात करें तो पिछले दो साल में भाजपा के नेतृत्व वाला एनडीए सात राज्यों में सत्ता गंवा चुका है और दिल्ली में यह आठवीं हार है। हाल की बात करें तो महाराष्ट्र में करीब एक महीने चले सियासी झाँपे में भी भाजपा सत्ता बचाने में नाकामयाब रही वहीं, दिल्ली से सटे हरियाणा में भी बहुमत नहीं मिला। हालांकि वहां गठबंधन करके उसने अपनी सरकार बचा ली। लेकिन झारखण्ड में भाजपा को करारी हार झेली पड़ी। दो साल पहले 2017 की बात करें तो भाजपा व सहयोगी पार्टियों के पास 19 राज्य थे, मगर उसने मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में सत्ता गंवा दी। इसके बाद 2019 में आंध्र प्रदेश में वाईएसआर कांग्रेस ने सरकार बनायी। दिल्ली जीतने के लिए भाजपा ने इस बार भी जी-जान लगा दी थी। यहां तक कि भाजपा ने दिल्ली फतह करने के लिए अपने करीब 350 सांसदों व नेताओं को मैदान में उतार दिया था। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने खुद गली-गली घूमकर बोट मांगे थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जोरदार भाषणों से आम आदमी पार्टी और कांग्रेस पर जमकर हमला बोला था, लेकिन पिछले दो लोकसभा चुनावों और कई विधानसभा चुनावों में मोदी लहर चलने के बावजूद पिछले दो दशक से भाजपा दिल्ली की सत्ता में वापसी नहीं कर पायी। इस बार तो दिल्ली वालों का दिल जीतने के लिए आक्रामक चुनाव अभियान शुरू किया गया था। पार्टी के शीर्ष नेताओं ने कई रैलियों को संबोधित किया और रोड शो और डोर-टू-डोर अभियान चलाए। भाजपा ने 200 सांसदों, कई मुख्यमंत्रियों और लगभग सभी केंद्रीय मंत्रियों को चुनाव प्रचार में शामिल किया, मगर सब ढाक के तीन पात।

अब भाजपा के लिए बड़ा चैलेंज बिहार विधानसभा चुनाव होगा, जो इसी वर्ष होना है। भाजपा के नए अध्यक्ष जेपी नड्डा शायद अब चुनाव की रणनीति

बदलें।

बहरहाल, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में राष्ट्रीय पार्टी को शिक्षित देने वाले आम आदमी पार्टी की नीति और अरविंद केजरीवाल की नियति से अन्य राजनीतिक दलों को बहुत कुछ अब सीखने का समय आ गया है। साथ ही उन्हें राजनीति के थार्मार्टर से आम लोगों के मिजाज को भी अब देखने होंगे कि प्रजातंत्र का वास्तविक लाभ उठाना किस तरह वे सीख गए हैं? अब लोग भावना में बहकर मतदान नहीं करते हैं बल्कि विवेकशील होकर अपने नेतृत्व का चयन करते हैं।

दिल्ली में इस बंपर जीत के बाद कहा जा रहा है कि दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का राष्ट्रीय राजनीति में कद बढ़ेगा और वह विपक्ष के चेहरे के तौर पर उभर सकते हैं। हालांकि राजनीतिक जानकारों का मानना है कि केजरीवाल के लिए अभी यह रस्ता लंबा है। एक्सपर्ट्स का मानना है कि आप के राष्ट्रीय संघोजक अरविंद केजरीवाल को राष्ट्रीय नेता के रूप में उभरने में अभी बक्त लगेगा।

विशेषज्ञों की राय है कि केजरीवाल को अपने आप को राष्ट्रीय नेता के तौर पर स्थापित करने के लिए अखिल भारतीय स्तर पर आधार बनाने की जरूरत होगी। अभी आम आदमी पार्टी को निर्वाचन आयोग द्वारा प्रादेशिक पार्टी की मान्यता प्राप्त है। वह 2017 में पंजाब में मुख्य विपक्षी दल के रूप में उभरी थी। हालांकि उसकी राष्ट्रीय आकांक्षाओं को तब झटका लगा जब गोवा चुनाव तथा पिछले दो लोकसभा चुनावों में उसे असफलता हाथ लगी थी।

उन्होंने 2014 में पंजाब में चार लोकसभा सीटें जीतीं और 2019 में महज एक, जबकि दिल्ली के मतदाताओं ने दोनों बार लोकसभा चुनावों में उसे नकार दिया। केजरीवाल ने 2014 में बीजेपी के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेंद्र मोदी के खिलाफ वाराणसी लोकसभा सीट से चुनाव लड़ा और उन्हें तीन लाख से अधिक वोटों से हार का स्वाद चखना पड़ा था।

### 2017 में नगर निगम में हार के बाद केजरीवाल ने बदली रणनीति

दिल्ली में बीजेपी के हाथों 2017 के नगर निगम चुनावों में हार के बाद आप की रणनीति में बदलाव देखा गया और उसने फिर से राष्ट्रीय राजधानी में विकास पर ध्यान देना शुरू कर दिया था। इस बावत समाज सेवी सह पीड़ि साह दमडिया मजार के नायब सज्जाद नशीं सेवद साह फकरे आलम हसन ने कहा कि, अभी यह कहना जल्दबाजी होगा, चूंकि यह स्थानीय चुनाव था लेकिन क्या वह अखिल भारतीय स्तर पर इसे दोहरा सकते हैं, यह कहना मुश्किल होगा। उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी के पास कोई ठोस आधार या बुनियादी ढांचा नहीं है और यह अभी पुरी तरह से परिपक्व भी नहीं है। हालांकि इस ऐतिहासिक जीत के लिए उन्होंने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को मुबारकबाद पेश की और कहा कि नेक कामों का इनाम इसी तरह मिलता है। वहीं हिंदी-अंगिका के लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ. अमरेन्द्र ने कहा कि भारतीय राज व्यवस्था बहुत जटिल है जहां लोगों की अलग-अलग राय होती है। उन्होंने कहा कि, अरविंद को अखिल भारतीय नेता बनने में अभी बक्त लगेगा, लेकिन

उन्होंने जो किया वह स्पष्ट करता कि लोगों को जो चाहिए वह देकर तथा उन्हें सशक्त बनाकर अलग तरह की बहस शुरू की जा सकती है और यह महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि उनका कद बढ़ेगा लेकिन राष्ट्रीय नेता बनने में बक्त लगेगा। उन्होंने यह भी कहा कि लगभग 30 सालों से दिल्ली में रह रहे 30 लाख अंगिकाराओं ने अपनी लोकभाषा अंगिका को सविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल नहीं किये जाने और समृच्छ समान व अधिकर से इसे उपेक्षित करने को लेकर केन्द्र सरकार से असंतुष्ट हैं, अपनी इसी असंतुष्टि को वे चुनाव के इन दिनों स्मरण कर एसे नेताओं की उपेक्षा करते हैं। उन्होंने बक्त रहते हैं इस भूल को सुधार कर राजनेताओं से आग्रह किया कि उन्हें यथशीघ्र दुनिया की प्राचीन भाषा अंगिका को भारतीय सविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करें।

दिल्ली में आम आदमी पार्टी (आप) की बंपर जीत के बाद दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के परिवार में भी जश्न का माहौल है। संयोग की बात है कि जिस दिन नीतीजे आए उस दिन केजरीवाल की पती सुनीता केजरीवाल का जन्मदिन भी था। इसके साथ ही उनके बेटे पुलकित ने भी दिल्ली चुनाव में पहली बार बोट किया था।

आइए जानते हैं कि अरविंद केजरीवाल की प्रचंद जीत पर उनकी पती, बेटी और बेटे ने क्या कहा?

केजरीवाल के बेटे पुलकित से जब पूछा गया तो उन्होंने जवाब दिया कि उन्होंने अपने पिता के लिए ही बोट किया था। दिल्ली के लोगों ने जितनी बड़े बहुपत से जिताया है, उससे उन्हें खुशी है कि उनका बोट भी काम आ गया। केजरीवाल की बेटी हर्षिता ने कहा कि विपक्षी दलों को जनता ने बोटों से जवाब दिया है। वह बोलीं, 'जिस तरह से गाली-गलौच की राजनीति दूसरी पार्टियां कर रही थीं, उसके ऊपर बोट नहीं मिलता है। काम के ऊपर बोट मिलता है। अस्पताल बनाने, मोहल्ला विलानिक, स्कूल बनाने पर बोट मिलता है।'

वहीं केजरीवाल की बेटी हर्षिता ने कहा कि उन्होंने बूथ लेवल वर्कर के तौर पर अभी भी काम किया था। वह बोलीं, 'हम लोग वॉलनटियर की तरह काम कर रहे थे। कैपेन में लोगों का उत्साह देखकर अच्छा लगता था।' आप की ऐतिहासिक जीत पर उनकी बेटी ने कहा कि हमेशा हम 60 से ऊपर की बात करते थे। 60 से नीचे तो हम जाते ही नहीं थे।

केजरीवाल की पती सुनीता से जब पूछा गया कि क्या आपको यकीन था कि आप को इतनी बंपर जीत मिलेगी, तो उन्होंने कहा कि उन्हें काफी बेचैनी थी। वहा बोलीं, 'जिस तरह से दिल्ली में चुनावी लड़ाई चल रही थी। अजेंडा पॉलिटिक्स एक तरफ थी, हालांकि हमें अपने काम पर भरोसा था।'

दिल्ली ने सच को जिताया है। केजरीवाल के अगले पांच साल पर उनकी पती ने कहा, 'अब लेवल टू का काम होगा। जो उन्होंने 10 गरंटी दी है, उस पर तो होना ही होना है। मुझे उम्मीद है कि दिल्ली में इससे भी अच्छा काम होगा।' बंदे मातरम, इन्कलाब-जिन्दाबाद, भारत माता की जय और दिल्ली वालों के इस कमाल के सुझ-बुझ को हमारी ओर भी नमन और नीति व नियती के पथ पर एक होकर चलने वाले मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के पुरी टीम को बहुत-बहुत बधाई और अशेष शुभकामनाएं।

# आईआईटी के खामोश छात्र से दिल्ली के एंग्री यंग मैन तक का सफर

दो अक्टूबर 2012 को हाफ बाजू की कमीज, ढीली पैट और सर पर 'मैं हूं आम आदमी' की टोपी पहनकर एक समान्य समान्य सा युवा आया तो किसी ने कल्पना नहीं की होगी कि अपनी नई राजनीतिक सोच के साथ यह युवक भारत की राजधानी दिल्ली एक नई सोच के साथ देश के प्रमुख राजनीतिक दलों को धाराशायरी कर देगा। वह व्यक्ति था अरविंद केजरीवाल, जो कांस्टीट्यूशन क्लब में मंच पर जब आया था तो मनीष सिसोदिया, प्रशांत भूषण, योगेंद्र यादव, कुमार विश्वास, गोपाल राय और भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन में उनके साथ रहे कई और लोग थे।

राजनीति में आने का ऐलान करते हुए केजरीवाल ने कहा, "आज हम इस मंच से ऐलान करना चाहते हैं कि अब चुनाव लड़ कर दिखाएंगे। आज से देश की आम जनता चुनावी राजनीति में कूद रही है और तुम अब अपने दिन गिनना चालू कर दो।"

उन्होंने कहा, "हमारी परिस्थिति उस अर्जुन की तरह है जो कुरुक्षेत्र के मैदान में खड़ा है और उसके सामने दो दुविधाएं हैं, एक तो ये कि हार तो नहीं जाऊंगा और दूसरा ये कि मेरे अपने लोग सामने खड़े हुए हैं। तब अर्जुन से कृष्ण ने कहा था, हार और जीत की चिंता मत करो, लड़ो।"

भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन को राजनीतिक पार्टी में बदलने के बाद केजरीवाल ने न सिर्फ़ चुनाव लड़े और जीते बल्कि तीसरी बार दिल्ली का चुनाव जीतकर उन्होंने जता दिया है कि केजरीवाल के पास ही मोदी मैजिक का तोड़ है।

भारतीय राजस्व सेवा के अधिकारी और आईआईटी के छात्र रहे केजरीवाल ने अपनी राजनीतिक जमीन 2011 में अन्ना हजारे के साथ भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन में तैयार की थी। लेकिन एक सामाजिक कार्यकर्ता के तौर पर अपनी एक अलग पहचान वो इससे पहले ही बना चुके थे। साल 2002 के शुरूआती महीनों में केजरीवाल भारतीय राजस्व सेवा से छुट्टी लेकर दिल्ली के सुंदरनगरी इलाके में एक्टिविज्म करने लगे। साथ ही केजरीवाल ने एक गैर-सरकारी संगठन स्थापित किया जिसे 'परिवर्तन' नाम दिया गया। केजरीवाल अपने कुछ दोस्तों के साथ मिलकर इस इलाके में जमीनी बदलाव लाना चाहते थे।

कुछ महीने बाद दिसंबर 2002 में केजरीवाल का एनजीओ परिवर्तन ने शहरी क्षेत्र में विकास के मुद्दे पर पहली जनसुनवाई रखी। उस वक्त पैनल में जस्टिस पीबी सावंत, मानवाधिकार कार्यकर्ता हर्ष मंदर, लेखिका अरुंधति राय, सूचना का अधिकार कार्यकर्ता अरुणा राय जैसे लोग सामिल थे।

अगले कई साल तक केजरीवाल यूनी की सीमा से लगे पूर्वी दिल्ली के इस इलाके में बिजली, पानी और



राशन जैसे मुद्दों पर जमीनी काम करते रहे।

उन्हें पहली बड़ी पहचान साल 2006 में तब मिली जब 'उभरते नेतृत्व' के लिए उन्हें रेमन मैसेसे अवॉर्ड दिया गया।

उस वक्त अरविंद केजरीवाल के साथ जुड़े और अब तक उनके साथ काम कर रहे अमित मिश्र बताते हैं- "अरविंद काफी स्ट्रेट फॉर्मर्ड थे। जो काम करना होता था स्पष्ट बोलते थे, किंतु-परंतु की गुंजाइश नहीं थी। हाँ, लॉजिकल तर्क वो सुनते थे। उन दिनों हम परिवर्तन के तहत मोहल्ला सभाएँ करते थे। मोहल्ला सभा के दौरान हम लोकल गवर्नेंस पर चर्चा करते थे। हम लोगों की सभा में अधिकारियों को बुलाकर उनसे सवाल करते थे।"

अमित याद करते हैं- "अरविंद केजरीवाल उस वक्त छोटी-छोटी पॉलिसी बनाते थे और अधिकारियों और नेताओं से उनके लिए मिलते थे और भिड़ते थी थे। वो समय लेकर नेताओं से मिलते, उनकी कोशिश रहती थी कि उनके उठाए मुद्दों पर संसद में सवाल पूछा जाए।"

केजरीवाल अगले कई साल तक सुंदरनगरी में जमीनी मुद्दों पर काम करते रहे, सूचना के अधिकार के लिए चल रहे अधियान में भी उनकी सक्रिय भूमिका रही।

अमित कहते हैं- "सुंदरनगरी के लोगों और उनकी समस्याओं को समझने के लिए अरविंद केजरीवाल एक झुग्गी किराए पर लेकर रहे और लोगों की बुनियादी जरूरतों को समझा। उनकी पूरी कोशिश यही रहती कि वो लोगों की जरूरतों को सरकार की नीतियों में लाएं।"

साल 2010 में दिल्ली में हुए कॉमनवेल्थ गेम्स के अयोजन में हुए कथित घोटाले की खबरें मीडिया में

आने के बाद लोगों में भ्रष्टाचार के खिलाफ गुस्सा बढ़ रहा था। सोशल मीडिया पर इंडिया अॉस्ट करपान मुहिम शुरू हुई और केजरीवाल इसका चेहरा बन गए। दिल्ली और देश के कई इलाकों में भ्रष्टाचार के खिलाफ जनसभाएँ होने लगी।

अप्रैल 2011 में गांधीवादी समाजसेवी अन्ना हजारे ने दिल्ली के जंतरमंतर पर भ्रष्टाचार के खिलाफ जनलोकपाल की माँग को लेकर धरना शुरू किया। मंच पर अन्ना थे तो पीछे केजरीवाल। देश के अलग-अलग हिस्सों से आए नौजवान इस आंदोलन से जुड़ गए थे। हर बीते दिन के साथ प्रदर्शन में भीड़ और भ्रष्टाचार के खिलाफ लोगों का गुस्सा बढ़ता जा रहा था।

9 अप्रैल को अन्ना ने अचानक अपने अनिश्चितकालीन अनशन को खत्म कर दिया। जोशीले युवाओं की एक भीड़ ने हाफ शर्ट पहने काली मूँछों वाले एक छोटे-कट के व्यक्ति को धेर लिया जो केजरीवाल ही थे। युवा भारत माता की जय और इंकलाब ज़िदाबाद के नारे लगा रहे थे। उनसे जब लोग सवाल कर रहे थे कि अन्ना को अनशन नहीं खत्म करना चाहिए तो केजरीवाल खामोश थे।

केजरीवाल अब तक भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन के आकिंटेक्ट बन चुके थे। अगले कुछ महीनों में उन्होंने 'टीम अन्ना' का विस्तार किया। समाज के हर वर्ग से लोगों को जोड़ा, सुझाव माँगे और एक बड़े जनआंदोलन की परिकल्पना की। फिर अगस्त 2011 में दिल्ली के रामलीला मैदान में अन्ना हजारे का जनलोकपाल के लिए बड़ा आंदोलन शुरू हुआ। सर पर मैं अन्ना हूं कि टोपी लगाए लोगों का हुजूम उमड़ने लगा। मीडिया ने इसे अन्ना क्रांति का नाम दिया। केजरीवाल इस क्रांति का चेहरा बन गए। पत्रकार उन्हें घेरने लगे, टीवी पर उनके इन्टरव्यू चलने लगे, लेकिन आंदोलन से वो हासिल नहीं हुआ जो केजरीवाल चाहते थे।

अब केजरीवाल ने दिल्ली के अलग-अलग इलाकों में बड़ी सभाएँ करनी शुरू की। वो मंच पर आते और नेताओं पर बरसते। उनके कथित भ्रष्टाचार के चिह्न खोलते। उनकी छवि एक एंग्री यंग मैन की बन गई, जो व्यवस्था से हताश था और बदलाव चाहता था। देश के हजारों युवा उनसे अपना जोड़ रहे थे और फिर केजरीवाल ने अपना पहला बड़ा धरना जुलाई 2012 में 'अन्ना हजारे के मार्गदर्शन में' जंतर-मंतर पर शुरू किया। अब तक उनके और उनके कार्यकर्ताओं के सिर पर 'मैं अन्ना हूं' की ही टोपी थी। और मुद्दा भी भ्रष्टाचार और जनलोकपाल ही था। जनता से सड़कों पर उत्तरने का आह्वान करते हुए केजरीवाल ने कहा- "जिस दिन इस देश की जनता जाग गई और सड़कों पर उत्तर कर आ गई तो बड़ी से बड़ी सत्ता को उठाकर फेंक सकती है।" इस धरने में केजरीवाल का हौसला बढ़ाने के लिए

अन्ना हजारे भी जंतर-मंतर पहुँचे थे। केजरीवाल का बजन कम होता गया और देश में उनकी पहचान बढ़ती गई। जब केजरीवाल का ये अनशन खत्म हुआ तो ये स्पष्ट हो गया कि वो राजनीति में आने जा रहे हैं। ये अलग बात है कि वो बार-बार कहते रहे थे कि वो कभी चुनावी राजनीति में नहीं आएंगे। अब तक सड़क पर सर्वर्ष को अपनी पहचान बना चुके केजरीवाल ने 10 दिन चला अनशन खत्म करते हुए कहा- "छोटी लड़ाई से बड़ी लड़ाई की तरफ बढ़ रहे हैं, संसद का शुद्धीकरण करना है, अब आंदोलन सड़क पर भी होगा और संसद के अंदर भी होगा। सत्ता को दिल्ली से खत्म करके देश के हर गांव तक पहुँचाना है।" केजरीवाल ने साफ कर दिया कि अब वो पार्टी बनाएंगे और चुनावी राजनीति में उत्तरेंगे। उन्होंने दावा किया था- "ये पार्टी नहीं, ये आंदोलन होगा, यहां कोई हाई कमान नहीं होगा।" केजरीवाल राजनीति में आने का निर्णय सुना रहे थे, और प्रदर्शन में शामिल भ्रष्टाचार विरोधी कार्यकाताओं के चेहरों के भाव बदल रहे थे। कई कार्यकाताओं ने जहां इसका फैसले को स्वीकार किया और आगे की लड़ाई के लिए अपने आप को तैयार किया तो कई ऐसे भी थे जिन्होंने उनके इस फैसले पर सवाल उठाए। केजरीवाल के राजनीति में आने के फैसले को याद करते हुए अमित कहते हैं, "शुरूआत में अरविंद हमेशा कहते थे कि मेरा राजनीति में आने का कोई झरादा नहीं है। वो कहते थे कि अगर अस्पताल में डॉक्टर इलाज नहीं करते तो इसका मतलब ये नहीं है कि हम डॉक्टर बन जाएं। लेकिन जब जनलोकपाल आंदोलन के दौरान हर और से निराशा मिली तो अरविंद ने ये निर्णय लिया कि अब राजनीति में आना ही होगा।" लेकिन केजरीवाल कभी राजनीति में नहीं आना चाहते थे। आईआईटी में उनके साथ रहे उनके दोस्त राजीव सराफ कहते हैं, "कॉलेज के टाइम में हमने कभी राजनीति पर बात नहीं की। मुझे याद नहीं आता कि चार साल में हमने कभी भी राजनीति पर कोई बात की हो। जब अरविंद को हमने राजनीति में देखा तो ये काफी हैरान करने वाला था।" सराफ कहते हैं - "लेकिन उनकी अपनी यात्रा रही है। कॉलेज के बाद वो कोलकाता में नौकरी कर रहे थे। जहां वो मदर टेरेसा के संपर्क में आए। इसके बाद वो आईआईएस में गए और वहाँ उन्होंने देखा कि काफी भ्रष्टाचार है। मुझे लगता है कि राजनीति में उनका एक लॉजीकल कनकलूजन था, ऐसा नहीं था कि उन्होंने तय कर रखा था कि राजनीति में आना है।" भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन में केजरीवाल की छवि एंग्री यंग मैन की बनी लेकिन कॉलेज के दिनों में वो शांत स्वभाव के खामोश युवा थे। सराफ याद करते हैं- "जब हम कॉलेज में थे तब अरविंद काफी शमीरा और शांत था। हम साथ ही घूमते थे। हमने कभी उसे बहुत ज्यादा बोलते नहीं देखा था। अन्ना आंदोलन के बाद से हमने उनकी यंग एंग्री मैन की छवि देखी है और ये उनके कॉलेज दिनों के बिलकुल विपरीत है। उस समय में वो शांत रहते थे, लोग वक्त के साथ बदलते हैं, केजरीवाल में भी बदलाव आया है।" 26 नवंबर 2012 को केजरीवाल ने अपनी पार्टी के विधित गठन की घोषणा की। केजरीवाल ने कहा कि उनकी पार्टी में कोई हाई कमान नहीं होगा और वो जनता के मुदों पर जनता के पैसों से चुनाव लड़ेंगे। केजरीवाल ने राजनीति का रास्ता चुना तो उनके गुरु अन्ना हजारे ने भी कह दिया कि वो सत्ता के

रास्ते पर चल पड़े हैं। शुरूआती दिनों में अरविंद को जो मिल रहा था उसे वो पार्टी से जोड़ रहे थे। उनकी ये संगठनात्मक क्षमता ही आगे चलकर उनकी सबसे बड़ी ताकत बनी। केजरीवाल ने ऐसे स्वयंसेवक जोड़े जो भूखे रहकर भी उनके लिए काम करने के लिए तैयार थे, लाठी डंडे खाने के लिए तैयार थे।

अंकित लाल इंजीनियर की नौकरी छोड़कर जनलोकपाल आंदोलन से जुड़े थे और जब केजरीवाल ने पार्टी बनाई तो इसी में शामिल हो गए। अंकित कहते हैं- "केजरीवाल अपने स्वयंसेवकों पर भरोसा करते हैं और स्वयंसेवक उन पर, यही पार्टी की सबसे बड़ी ताकत है।"

अभी आम आदमी पार्टी में सोशल मीडिया रणनीतिकार अंकित कहते हैं, "मैं एक साधारण इंजीनियर था, अरविंद ने मुझ पर भरोसा किया और सोशल मीडिया टीम बनाने की जिम्मेदारी दे दी। अरविंद ने अपने वॉर्ल्टियर्स पर विश्वास किया तो उन्होंने भी पार्टी में अपना जी-जान लगा दी।"

इन्हीं स्वयंसेवकों के दम पर केजरीवाल ने 2013 में दिल्ली विधानसभा चुनाव लड़ा। राजनीति में पदार्पण करने वाली उनकी पार्टी ने 28 सीटें जीतीं। स्वयं केजरीवाल ने नई दिल्ली सीट से तत्कालीन सीएम शीला दीक्षित को पच्चीस हजार से अधिक वोटों से हराया। लेकिन उन्हें सरकार इहीं शीला दीक्षित की कांग्रेस पार्टी के साथ मिलकर बनानी पड़ी।

केजरीवाल दिल्ली मेट्रो से बैठकर शपथ लेने के लिए रामलीला मैदान पहुँचे। जिस रामलीला मैदान में वो अन्ना के साथ अनशन पर बैठे थे वही अब उनकी संविधान की शपथ का गवाह बन रहा था। शपथ लेने के बाद केजरीवाल ने भारत माता की जय, इंकलाब जिंदाबाद और वंदे मातरम का नारा लगाया और कहा - "ये अरविंद, केजरीवाल ने शपथ नहीं ली है, आज दिल्ली के हर नागरिक ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली है, ये लड़ाई अरविंद केजरीवाल को मुख्यमंत्री बनाने के लिए नहीं थी, ये लड़ाई सत्ता जनता के हाथ में देने के लिए थी।" अपनी जीत को कुदरत का करिश्मा बताते हुए केजरीवाल ने ईश्वर, अल्लाह और भगवान का शुक्रिया अदा किया।

शपथ लेने के कुछ दिन बाद ही केजरीवाल दिल्ली पुलिस में कथित भ्रष्टाचार के खिलाफ रेल भवन के बाहर धरने पर बैठ गए। दिल्ली की ठंड में तिहाप में दुबके केजरीवाल जब भ्रष्टाचार के खिलाफ बोले तो जनता को लगा कि कोई है जो उनकी बात कर रहा है। केजरीवाल की ये सरकार सिर्फ 49 दिन ही चल सकी, लेकिन इन 49 दिनों में दिल्ली ने राजनीति का एक नया युग देखा लिया। केजरीवाल अपने सार्वजनिक भाषणों में भृष्ट अधिकारियों का वीडियो बनाने का आह्वान करते, केजरीवाल जल्द से जल्द जनलोकपाल विल पारित करना चाहते थे, लेकिन गठबंधन सरकार में साझीदार कांग्रेस तैयार नहीं थी। अंततः 14 फरवरी 2014 को केजरीवाल ने दिल्ली के सीएम पद से इस्तीफा दे दिया और फिर सड़क पर आ गए। केजरीवाल ने कहा- "मेरे को अगर सत्ता का लोभ होता, तो मुख्यमंत्री पद नहीं छोड़ता, मैंने उस्लूं पर मुख्यमंत्री की कुर्सी छोड़ी है।"

कुछ महीने बाद ही लोकसभा चुनाव होने थे। केजरीवाल बनारस पहुँच गए नरेंद्र मोदी को चुनौती

देने। अपने नामांकन से पहले दिए भाषण में उन्होंने कहा- "दोस्तों मेरे पास तो कुछ भी नहीं है, मैं तो आपमें से ही एक हूँ, ये लड़ाई मेरी नहीं है, ये लड़ाई उन सबकी है जो भ्रष्टाचार मुक्त भारत का सपना देखते हैं।"

बनारस में केजरीवाल तीन लाख सतर हजार से अधिक मतों से हारे। उन्हें पता चल गया था कि राजनीति में लंबी रेस के लिए पहले छोटे मैदान में प्रैविटिस करनी होगी और उन्होंने फिर दिल्ली में ही अपना दिल लगा दिया।

निराश पार्टी कार्यकाताओं के लिए एक बयान जारी कर केजरीवाल ने कहा- "हमारी पार्टी अभी नई है, कई स्टूकर ढूले हैं। हम सबको मिल कर ये संगठन तैयार करना है। आने वाले समय में हम मिलकर संगठन को मजबूत करेंगे मुझे उम्मीद है ये संगठन इस देश को दोबारा आजाद करने में बड़ी भूमिका निभाएगा।"

केजरीवाल ने बिल्कुल आम आदमी का हुलिया अपनाया। वो सादे कपड़े पहन वैगन आर कार में चलते, धरना देते, लोगों के बीच सो जाते।

इसी दौरान एक वीडियो जारी कर केजरीवाल ने कहा, "मैं आपमें से एक हूँ, मैं और मेरा परिवार आपके ही जैसे हैं, आपकी ही तरह रहते हैं, मैं और मेरा परिवार आपकी ही तरह इस सिस्टम के अंदर जीते की कोशिश कर रहे हैं।" और इसी दौरान खाँसते हुए केजरीवाल का मफलरमैन स्वरूप सामने आया। गले में मफलर डाले केजरीवाल को दिल्ली में जहां जगह मिलती वहीं जनसभा कर देते।

दिल्ली के लिए हुए विधानसभा चुनावों में केजरीवाल ने दिल्ली की जनता से पूर्ण बहुमत माँगा और जनता ने उन्हें ऐतिहासिक जीत दी। 70 में से 67 जीत कर केजरीवाल ने 14 फरवरी 2015 को फिर दिल्ली के मुख्यमंत्री की शपथ ली।

इस बार उनके पास पूर्ण से भी ज्यादा बहुमत था। वारे पूरे करने के लिए पूरे पाँच साल थे। लेकिन जिस जनलोकपाल को लाने का उन्होंने बात किया था वो नहीं आ सका। पाँच साल उन्होंने दिल्ली की स्वास्थ्य, शिक्षा और अन्य सार्वजनिक सेवाओं पर काम करने में लगाए। बीच-बीच में वो केंद्र सरकार पर सहयोग न करने का आरोप लगाते रहे। बिजली-पानी मुफ्त करने जैसी लोकलुभावन योजनाएँ लागू कीं। बार-बार उन्होंने अपने आप को ईमानदारी का सर्टिफिकेट दिया।

लेकिन इस सबके बीच भ्रष्टाचार और जनलोकपाल का मुद्दा कहीं खो गया। दिल्ली से कितना भ्रष्टाचार कम हुआ है ये दिल्ली वाले जानते हैं। जनलोकपाल का तो अब बहुत से लोगों को नाम भी याद नहीं। और जिन केजरीवाल ने कहा था कि वो कभी राजनीति में नहीं आएँगे वो अब तीसरी बार मुख्यमंत्री बनने जा रहे हैं। उन्होंने कहा था कि वो आम आदमी की तरह रहेंगे, लाल बत्ती का इस्तेमाल नहीं करेंगे। अब वो दिल्ली में आलीशान मुख्यमंत्री निवास में रहते हैं, वैगन आर की जगह लग्जरी कार ने ले ली है। जिस पार्टी का गठन करते हुए उन्होंने कहा था कि इसमें कोई हाई कमान नहीं होगा अब वहीं उसके अकेले हाई कमान है। पार्टी में जिन नेताओं का कद उनके बराबर हो सकता था वो सब एक-एक करके चले गए या निकाल दिये गए। अब केजरीवाल 51 साल के हैं। देश की राजनीति में बड़ा कदम रखने के लिए उनके पास अनुभव भी है और आगे बहुत वक्त भी।

# बिहार ने जीता दिल्ली दरबार, हारीं बिहार की राजनीतिक पार्टियां लेकिन 13 बिहारी बनें दिल्ली के विधायक

दिल्ली चुनाव में भले ही बिहार की राजनीतिक पार्टियां शून्य पर आउट हो गयीं लेकिन बिहार का परचम अब भी दिल्ली में लहरा रहा है। एक तो बल्कि पूरे तेरहे बिहारी दिल्ली के विधायक बने हैं।` बिहारी और पूर्वांचली बोटरों से भरे सीट पर बिहारी नेताओं ने अपना परचम फहरा दिया है। अरविंद केजरीवाल की अखंड से जहां 12 बिहारी विधायक बने हैं तो वहीं बीजेपी से भी एक बिहारी ने दिल्ली में चुनाव जीता है। पहले आपको बताते हैं कि दिल्ली से किन तेरह बिहारियों ने वहां अपना झँड़ा गाड़ा है। दिल्ली की बुराड़ी सीट से मधुबनी के संजीव ज्ञा ने जीत हासिल की है। किराड़ी से समस्तीपुर के रितुराज, शालीमारबाग से मुजफ्फरपुर की वंदना मिश्रा, जनकपुरी से पटना के राजेश ऋषि, मालवीयनगर से बिहार के सोमनाथ भारती, तिमारपुर से बक्सर के दिलीप पांडेय, बाबरपुर से गोपाल राय और द्वारिका ने विनय मिश्रा ने आम आदमी पार्टी के टिकट पर जीत हासिल की है जबकि लक्ष्मीपुर विधानसभा सीट से बीजेपी उम्मीदवारों के तौर पर दरभंगा के अभय वर्मा ने बाजी मारी है। बिहारी उम्मीदवारों ने तो दिल्ली में बिहार का परचम तो खुब लहराये लेकिन इसके विपरीत दिल्ली के चुनावी जंग में कूदी बिहार की सारी राजनीतिक पार्टियां मैदार में ढेर हो गयी। जेडीयू, आरजेडी, एलजेपी और मांझी की हम सब इसमें फिसड़ी ही साक्षित हुए। अरविंद केजरीवाल के जादू के आगे सब फीके पड़ गए। सीएम नीतीश कुमार की जेडीयू और चिराग पासवान की एलजेपी ने अपने-अपने विधानसभा क्षेत्रों में दूसरे स्थान पर रहकर कुछ तो लाज बचा ली लेकिन चार सीटों पर लड़ रही तेजस्वी की आरजेडी तो कहीं से जमानत भी नहीं बचा सकी।

बुराड़ी विधानसभा क्षेत्र से कुल 22 उम्मीदवारों में जेडीयू के शैलेंद्र कुमार को 48 हजार 220 वोट मिले। उन्हें कुल 22.73 फीसदी वोट मिले। वहां दूसरी सीट संगम विहार विधानसभा क्षेत्र में कुल नौ उम्मीदवारों में जेडीयू के शिवचरण लाल गुप्ता को कुल 32 हजार 803 वोट मिले। यह कुल वोट का 28.13 फीसदी है। एनडीए में एलजेपी को दिल्ली में एक सीट सीमापुरी सुरक्षित दी गयी थी। पार्टी उम्मीदवार शार्ति लाल 32138 वोट पाकर दूसरे नंबर पर रहे। इधर बुराड़ी में आरजेडी के उम्मीदवार प्रमोद त्यागी 2256 वोट लाकर चौथे स्थान पर रहे। किराड़ी सीट पर अरजेडी उम्मीदवार मो रियाजुद्दीन को 256, पालम सीट पर दल के उम्मीदवार निर्मल कुमार सिंह को 547 और उत्तमनगर सीट पर आरजेडी उम्मीदवार शक्ति सिंह विश्वेन्द्र महज 377 वोट पाकर छठे पायदान पर रहे। वहां, हम को दो सीटों को जोड़ कर मात्र 68 वोट मिले।

## समाजसेवी, फिल्म निर्माता को दिल्ली सीएम अरविंद केजरीवाल ने पार्टी में कराया शामिल

फिल्म निर्माता और मिथिला के चर्चित चेहरे विष्णु पाठक को आगामी चुनाव के मद्देनजर मिथिला एवं मैथिल बोटरों को देखते हुए दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने आप पार्टी में शामिल कराया।

विष्णु पाठक काफी लंबे समय से मुख्यमंत्री केजरीवाल के संपर्क में थे और पिछले कई महीनों से इस तरह के कथास लगाए जा रहे थे कि उन्हें कभी भी पार्टी में शामिल कराया जा सकता है जिसकी अधिकारिक घोषणा हो गई। दिल्ली में विधानसभा चुनाव और मिथिलांचल बोटरों का वहां अपना एक अलग प्रभाव है जिसमें विष्णु पाठक काफी चर्चित चेहरे माने जाते हैं, जिस बात का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि खुद सीएम केजरीवाल ने उन्हें पार्टी में शामिल कराया।

**ऐ दिल्ली तेरे आंगन में नया सूरज छढ़ा है, सुना है महंगे सूटों पर मफ्लर भारी पड़ा है आईलवयू दिल्ली, चुनाव जीतने के बाद बोले अरविंद केजरीवाल**

दिल्ली विधानसभा

चुनाव में प्रचंड बहुमत मिलने के बाद आम आदमी पार्टी के सूप्रीमो अरविंद केजरीवाल ने अपने कार्यालय पहुंचे। यहां पर कार्यक्रमों को संबोधित करते हुए कहा कि दिल्ली वालों आपलोगों ने गजब कर दिया। सभी दिल्ली वालों को तहे दिल से



शुक्रिया करना चाहता हूं। आईलवयू दिल्ली। समर्थकों के साथ बातचीत किया। उन्होंने कहा कि हनुमान जी ने आज बहुत कृपा बरसाइ है, प्रभु का बहुत-बहुत धन्यवाद और आने वाले पांच साल यही शक्ति दें। बोले, दिल्ली के दो करोड़ लोग अपनी भूमि को अच्छा बना सकें। सभी कार्यक्रमों को शुक्रिया करता हूं और मेरे परिवार ने भी खुब मेहनत किया है। आज मेरी वाईफ का जन्म दिन है। उन्होंने कहा कि तीसरी बार आपने बेटा को जिताया है। यह जीत मेरी नहीं है, उस परिवार की जीत है, जिन्होंने हमें अपना बेटा मानकर बोट किया। जिसके बच्चों को शिक्षा, मोहल्ले में पानी आदि विकास योजनाएं पर उन्होंने हमें साथ दिया। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि आज देश के लिए बहुत शुभ दिन है, शुभ संदेश है। यही राजनीति 21 वीं सदी में ले जाएगी। अगले पांच साल यह शक्ति दें। अगले पांच साल में यह मेहनत करेंगे। अगले पांच साल आराम का नहीं, काम करने का समय है। इस द्वौरान उनके पती के जन्म दिन के अवसर पर केक भी काटा गया। साथ ही जय हनुमान जी के नारे भी खुंब लगे।



# जातीय राजनीति करने वाले लोगों के मुंह पर तमाचा है केजरीवाल की जीत

अखिलेश कुमार

दिल्ली विधानसभा चुनाव में अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में आम आदमी पार्टी को दूसरी बार भी अपार जन समर्थन प्राप्त हुआ है। यह जन समर्थन भारतीय राजनीति और राजनेता तथा युवा वर्ग को एक नई संदेश भी दे रहा है। और वह संदेश है 'जाति तथा धर्म की राजनीति से ऊपर उठकर आम लोगों के हित में कार्य करने शैली।' दरअसल 2015 में जब अरविंद केजरीवाल की नेतृत्व वाली आम आदमी पार्टी को 70 में 67 सीटें हासिल हुई थीं तो यह कहा जा रहा था कि यह भ्रष्टाचार की लड़ाई के विरुद्ध जनादेश है। लेकिन गत 11 फरवरी 2020 को जो दिल्ली विधानसभा का जो चुनाव परिणाम आया है उसका संदेश अलग है। यह संदेश भारतीय लोकतंत्र की आत्मा का आवाज है। इस चुनाव परिणाम ने न केवल कांग्रेस जैसे राष्ट्रीय पार्टी को हाशिए पर ला कर खड़ा कर दिया है, बल्कि आड़े, पिछड़े, दलित, महादलित जैसे जातिय राजनीति करने वाले नेताओं के मुंह पर तमाचा भी जड़ दिया है। खासकर बिहार तथा उत्तर प्रदेश के क्षेत्रीय दलों के शीर्ष नेताओं को सबक सिखाने का काम किया है। इस चुनाव परिणाम ने भारतीय जनता पार्टी के गुरुर को भी तोड़ डाला है। दिल्ली विधानसभा चुनाव में विहार तथा उत्तर प्रदेश के कई दल क्षेत्रवाद यानि पूर्वीवाल और बिहारी लोगों के नाम पर वोट मांग रहे थे। यह वही लोग थे जो अपने यहां अगड़ा पिछड़ा दलित महादलित के खेल में आम जनता को उलझाकर विकास मुद्दे को गौण कर देते हैं। उन्हें उम्मीद थी कि दिल्ली भी उनका यह खेल किसी न किसी विधानसभा क्षेत्र में जादू दिखाएगा। लेकिन उन्हें निराशा और हताशा हाथ लगी। जदयू ने तो बुराड़ी सीट जितने के लिए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार गृह मंत्री अमित शाह के साथ संयुक्त रूप से रैली किए। लेकिन करारी हार का सामना करना। वहीं पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी के उम्मीदवार 22 से 25 वोट में सिमट कर रह गए। लालू प्रसाद के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय जनता दल के साथ ही साथ रामविलास पासवान के नेतृत्व वाली लोक जनशक्ति पार्टी को भी मतदाताओं ने पूरी तरह नकार दिया। सब तो सब भारतीय जनता पार्टी की स्थिति भी बदतर रही। यदि भाजपा के दिल्ली में कुल प्राप्त मतों तथा भाजपा के सदस्यों के बीच का फासला देखा जाए तो मतदाताओं के मूड का सोच स्वतः स्पष्ट हो जाता है। दरअसल अपार बहुमत के साथ 2015 में सता में आने पर अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व वाली आम आदमी पार्टी की सरकार ने दिल्ली में कभी भी लोगों को सुविधाएं मुहैया कराई। चाहे वह फ्री में पानी देने का मामला हो, बिजली देने का मामला हो, सरकारी विद्यालयों में शिक्षा देने का मामला हो, महिलाओं को मेट्रो और बस में निशुल्क यात्रा का मामला हो या फिर



फैलाने के जगह इस सरकारने आम लोगों को सम्मान भाव से सुविधाएं मुहैया कराई। चाहे वह फ्री में पानी देने का मामला हो, बिजली देने का मामला हो, सरकारी विद्यालयों में शिक्षा देने का मामला हो, महिलाओं को मेट्रो और बस में निशुल्क यात्रा का मामला हो या फिर

चिकित्सा का मामला हो। अरविंद केजरीवाल का आम जनता के साथ समझाव से सरकारी सुविधाएं उपलब्ध कराने की रणनीति ने उन्हें दूसरी बार अपार जन समर्थन हासिल होने में अहम भूमिका निभाई। इससे देश के अन राजनीतिक दलों को भी सबक लेनी चाहिए।

# ‘बिहार फर्स्ट, बिहारी फर्स्ट’ अभियान की शुरूआत

आगामी बिहार विधानसभा चुनाव के महेनजर लोक जनशक्ति पार्टी ने राज्य में अपनी गतिविधियां तेज कर दी है। राजधानी पटना में प्रेस कॉन्फ्रेंस करके पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं जमुई सांसद चिराग पासवान ने “बिहार फर्स्ट, बिहारी फर्स्ट” अभियान की शुरूआत की। सांसद चिराग पासवान के नेतृत्व में आगामी 21 फरवरी से बिहार के अलग-अलग जिलों में दर्जनों रैलियों एवं सभाओं का आयोजन सुनिश्चित किया गया है।

राज्य में पार्टी की आगामी रणनीतियों पर लोजपा के बिहार प्रदेश अध्यक्ष एवं समस्तीपुर सांसद प्रिंस राज से बातचीत की हमारी विशेष संवाददाता अनूप नारायण सिंह:

**प्रश्न :** दलितों के नाम पर कई नेता आए-गए, पर दलितों का अब तक समुचित विकास नहीं हो सका। आप एक युवा दलित नेता हैं, दलितों के उत्थान के लिए आपके पास क्या योजनाएं हैं?

**उत्तर :** दलित समाज के लोगों के बीच शिक्षा का अलख जगाना होगा। प्रत्येक दलित टोलों में एक-एक दलित उत्थान केन्द्र खोले जाने की आवश्यकता है, जहां अब तक पिछड़े रह गए दलितों के बच्चे प्राइमरी स्कूल की शिक्षा पा सकेंगे। चूंकि दलित पिछड़े हैं, इसलिए अगड़ी जाति के लोगों के बच्चों के साथ अधिकतर दलित बच्चे प्रतिवेगिताओं में टिक ही नहीं पाते। इसलिए ऐसे पिछड़े पारिवारिक पृष्ठभूमि के बच्चों के लिए अलग से स्कूल की जरूरत है।

साथ ही, उन दलितों उत्थान केंद्रों पर 10 से 15 साल उम्र के वैसे बच्चों के लिए हाई स्कूल स्तरीय ब्रिज कोर्स की व्यवस्था होनी चाहिए, जो किसी कारणवश प्राइमरी स्कूल की शिक्षा से वंचित रह गए।

दलित उत्थान केंद्रों पर प्रौढ़ शिक्षा से लेकर स्किल डेवलपमेंट ट्रेनिंग तक की व्यवस्था होनी चाहिए। दलित महिला एवं पुरुष काफी मेहनती होते हैं। अगर उन्हें किसी भी विधा में स्किल डेवलपमेंट की ट्रेनिंग करा दी जाए तो उनकी आय दुगुनी हो सकती है। दलित उत्थान केंद्रों एक लघु पुस्तकालय की भी व्यवस्था होनी चाहिए। दलित उत्थान केंद्रों का संचालन भी दलितों के हाथ में ही होना चाहिए।

देश भर के प्रत्येक दलित मुहल्लों में दलित उत्थान केन्द्र स्थापित करने के प्रस्ताव पर मैं तैयारी कर रहा हूं। शीघ्र ही यह प्रस्ताव केन्द्र सरकार एवं समस्त राज्य सरकारों के समक्ष रखूंगा।

ऐसे ही उत्थान केंद्रों की व्यवस्था आदिवासी इलाकों में भी होनी चाहिए। अपने प्रस्ताव में मैं आदिवासियों के हक की भी आवाज उठाऊंगा।



**प्रश्न :** आगामी बिहार विधानसभा चुनाव में लोजपा की भूमिका क्या रहेगी? कैसी तैयारियों के साथ लोजपा चुनावी मैदान में उतरेगी?

**उत्तर :** लोजपा की जन्मभूमि बिहार है। सबसे महत्वपूर्ण कर्मभूमि भी बिहार है। बिहार राज्य में रामविलास पासवान जी एवं चिराग पासवान जी की लोकप्रियता सबसे अधिक है। बिहार के हर जिलों में लोजपा का संगठन है, हर विधानसभा में लोजपा के कार्यकर्ता एवं समर्थक हैं। किन्तु लोजपा केन्द्र में एनडीए के साथ गठबंधन में है, इसलिए गठबंधन धर्म का निर्वाह करते हुए लोजपा एनडीए की सहयोगी पार्टी के रूप में ही बिहार विधानसभा चुनाव में ही उतरेगी। लोजपा का मुख्य टारगेट वे विधानसभा क्षेत्र हैं जहां पर राजद एवं कांग्रेस का कब्जा है। ऐसे क्षेत्रों में लोजपा ने 25-25 हजार सदस्य बनाने एवं बूथ स्तरीय टीम के निर्माण कार्य में जुट गई है।

**प्रश्न :** सी ए ए, एन आर सी एवं एन पी आर पर आप क्या सोच रहे हैं?

**उत्तर :** देश में घट रही हर एक राजनैतिक घटनाक्रमों पर लोजपा के नेताओं की पैनी नजर है। किसी भी हालत एवं परिस्थिति में देश के एक भी दलित एवं एक भी मुसलमान नागरिक को देश से बाहर नहीं किया जा सकता है। इस बात की मैं व्यक्तिगत रूप से

गरंटी लेता हूं। आपके माध्यम से यह बात मैं प्रत्येक दलित एवं मुसलमान समुदाय के लोगों से कहना चाहता हूं कि अगर एक भी दलित या मुसलमान को देश से बाहर किया गया तो सबसे पहले बाहर होने वाला मैं होऊंगा। मैं कहना चाहता हूं प्रत्येक दलित, आदिवासी एवं मुसलमान से, कि वे निश्चित रहें, निश्चित होकर दिन-प्रति-दिन का अपना काम-काज करें। सभी इस देश के नागरिक हैं। किसी नागरिक का कोई कुछ नहीं बिगड़ सकता।

**प्रश्न :** बिहारवासियों के लिए आप क्या कुछ खास संदेश देना चाहेंगे?

**उत्तर :** खास संदेश यही है कि आगामी 21 फरवरी से लोजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष बड़े भाई श्री चिराग पासवान जी के नेतृत्व में बिहार-यात्रा के दौरान दर्जनों रैलियों का आयोजन किया गया है। इस क्रम की अंतिम रैली 14 अप्रैल को पटना के गांधी मैदान में होगी। सभी लोगों से निवेदन है कि जिला-जिला आयोजित होने वाले इन रैलियों में जरूर आएं, एवं पटना के गांधी मैदान में 14 अप्रैल को होने वाली रैली में रिकॉर्ड संख्या में उपस्थित होकर बड़े भैया चिराग पासवान जी के कंधों को मजबूती प्रदान करें।



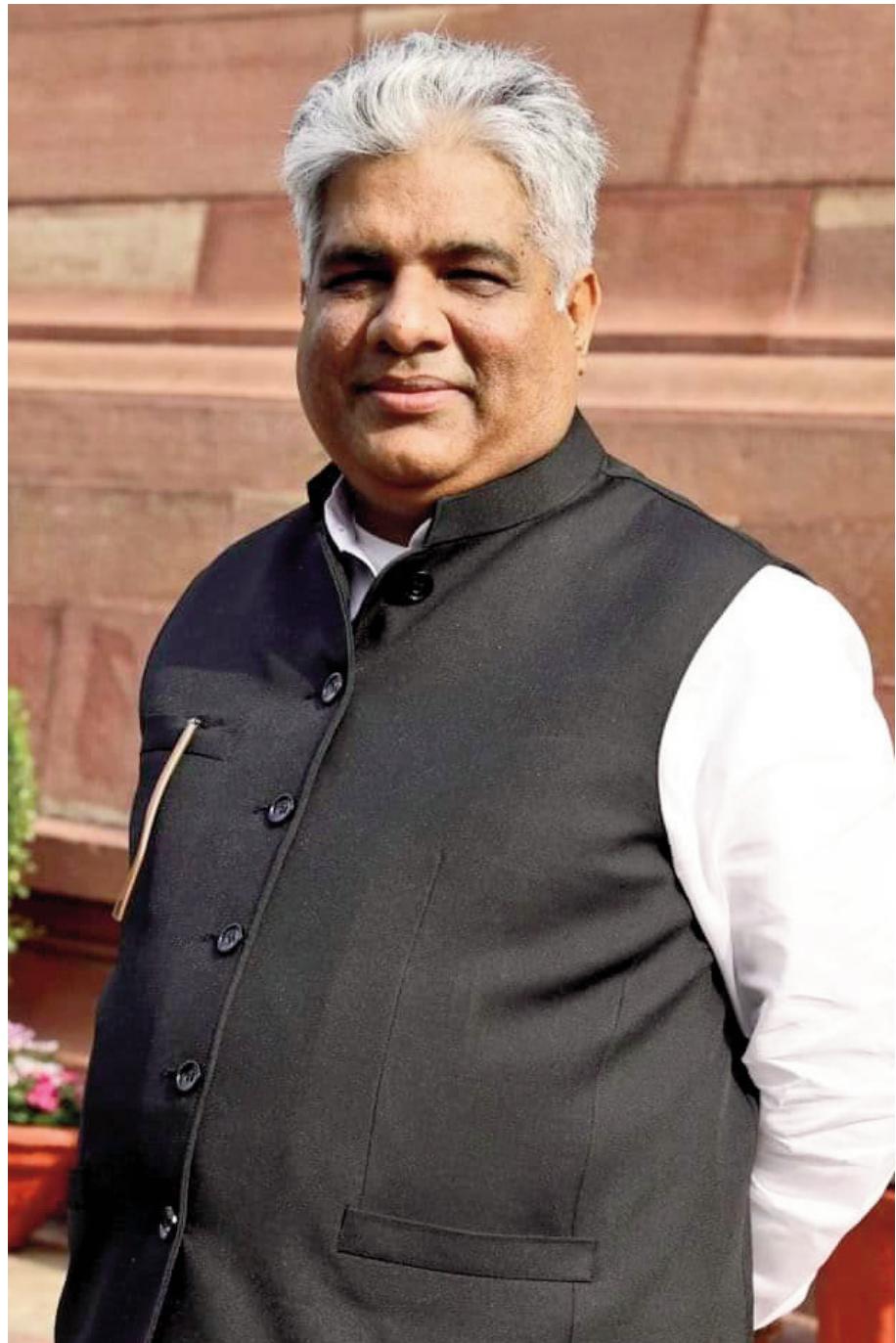
# नए भारत की परिकल्पना - भूपेंद्र यादव

भूपेंद्र यादव

( लेखक बीजेपी के महासचिव और बिहार के प्रभारी हैं।)

बजट सत्र के पहले दिन राष्ट्रपति अधिभाषण में भविष्य के भारत के जिन बिंदुओं का उल्लेख हुआ, वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की वृष्टि में नए भारत के निर्माण की संकल्पना भी है। आज प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में देश विकास के उन्हीं बिन्दुओं को छूते हुए आगे बढ़ रहा है। निश्चित ही गत वर्षों में भारत को लेकर दुनिया का दृष्टिकोण बदला है। ऐसे में भारत के सामने भी यह प्रश्न है कि वैश्वीकरण के इस दौर में उसकी क्या भूमिका है? जब हम इस संदर्भ में नए भारत के निर्माण की बात करते हैं, तो उसका निहितार्थ यह है कि एक ऐसा भारत, जिसकी जड़ें अपनी पुरानी संस्कृति से जुड़ी हों और उसमें इक्विसर्वीस दृष्टि के अनुरूप स्वयं का तैयार रखने की ऊर्जा भी हो। एक ऐसा भारत जहां पाषाण जैसी ठहर चुकी पुरानी समस्याओं को समाप्त कर विकास की नई इमारतों को खड़ा किया जा सके। भविष्य के भारत के रूप में इस सरकार की एक ऐसे भारत की संकल्पना है जहाँ गरीब, दलित, महिला, युवा, आदिवासी, पिछड़े तथा अल्पसंख्यकों सहित समाज के सभी वर्गों को आगे बढ़ने का अवसर हो। दरअसल ये वो लक्ष्य हैं जिनको एक सौ तीस करोड़ देशवासियों की संपूर्ण सकारात्मक क्षमता का उपयोग करके ही हासिल किया जा सकता है।

उदाहरण के तौर पर देखें तो हाल ही में पद्म पुरस्कारों की घोषणा हुई। पिछले कुछ वर्षों में पद्म पुरस्कारों अथवा अन्य सम्मानों को लेकर लोगों के मन में जिज्ञासा बढ़ी है। आम लोग पुरस्कारों को लेकर सकारात्मक भाव रख रहे हैं। इस बदलाव के पीछे बड़ी बजह सरकार द्वारा देश के सभी वर्गों, क्षेत्रों तथा समुदायों की प्रतिभा और योग्यता की सही पहचान करके उन्हें सम्मानित किया जाना है। लोगों में यह भरोसा बढ़ा है कि पर्यावरण, खेल, कला, संगीत, सेवा सहित समाज जीवन में उनके द्वारा किये जा रहे प्रयासों को सरकार देख रही है और उसके प्रति गंभीर भी है। इसबार के पुरस्कारों की घोषणा ने दूर-सुदूर काम करने वाले अलग-अलग जाति, क्षेत्र और धर्म के उन अनेक लोगों से देश का परिचय कराया जो अपने स्तर पर बिना कोई शिकायत किये देश के विकास में योगदान दे रहे हैं। देश की ऐसी विविध प्रतिभाओं को दुनिया से परिचित कराने की दिशा में मोदी सरकार ने अनूठी शुरूआत की है। राजनीतिक क्षेत्र में भी पद्म पुरस्कार में घोषित अनेक लोगों से सकारात्मकता से अपने काम को करने की प्रेरणा प्राप्त की जा सकती है। यह सच है कि हर कालखड़ में देश के सामने कुछ चुनौतियां आती हैं और कुछ चुनौतियां ऐसी भी होती हैं जो अतीत से चली आ रही हैं। किंतु यह भी सच है कि एक युवा देश होने के नाते हम अपनी चुनौतियों से उबरने में अधिक सक्षम और सबल हैं। मोदी सरकार ने देश के युवाओं पर भरोसा दिखाया है। गत दिनों प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि



हमारा युवा अब देश बदलना चाहता है, स्थितियां बदलना चाहता है। उसने तय किया है कि अब टाला नहीं जाएगा, अब टकराया जाएगा, निपटा जाएगा। प्रधानमंत्री का यह कथन युवाशक्ति पर उनके भरोसे को दिखात है। हाल की बात करें तो अतीत से मिली अनेक समस्याओं का सविधान सम्पत्ति समाधान करने में सरकार कामयाबी से आगे बढ़ रही है। जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 और 35अ हटाने के फैसले को देश और खासकर जम्मू-कश्मीर व लेह-लद्दाख की जनता

का पूरा भरोसा हासिल हुआ। इसकी ताजा मिसाल जम्मू-कश्मीर में 4400 से अधिक पंचायतों के चुनाव शांतिपूर्ण ढंग से होना है। वहां 300 से ज्यादा प्रखंडों के चुनाव हुए, जिसमें स्थानीय मतदाताओं ने हिस्सा लिया। पंचायतों के चुनावों में वहां की जनता का उत्साह और भागीदारी, इस बात का प्रमाण है कि वे अपने इस लोकतात्त्विक अधिकार से विचित्र नहीं रहना चाहते थे। लेकिन केवल अपने निजी राजनीतिक स्वार्थों की बजह से वहां के कुछ राजनीतिक परिवारों ने लंबे समय तक

यह सच है कि हर कालखंड में  
देश के सामने कुछ चुनौतियाँ  
आती हैं और कुछ चुनौतियाँ ऐसी  
भी होती हैं जो अतीत से चली आ  
रही हैं। किंतु यह भी सच है कि  
एक युवा देश होने के नाते हम  
अपनी चुनौतियों से उबारने में  
अधिक सक्षम और सबल हैं।  
मोदी सरकार ने देश के युवाओं  
पर भरोसा दिखाया है। गत दिनों  
प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि  
हमारा युवा अब देश बढ़ाना  
चाहता है, स्थितियाँ बढ़ाना  
चाहता है। उसने तय किया है कि  
अब टाला नहीं जाएगा, अब  
टकराया जाएगा, निपटा  
जाएगा। प्रधानमंत्री का यह  
कथन युवाशक्ति पर उनके भरोसे  
को दिखाता है।

ऐसा नहीं होने दिया। संविधान में अस्थायी तौर पर रहे  
अनुच्छेद 370 के समाप्त होने से वहाँ निचले स्तर पर  
लोकतंत्र की बहाली तो हुई ही, सरकार की योजनाओं  
को राज्य के जरूरतमंदों तक पारदर्शी ढंग से पहुंचाना  
भी सरल और सुगम हुआ। एक आंकड़े के मुताबिक  
2018 तक जम्मू-कश्मीर क्षेत्र में केवल 3500 घर  
"प्रधानमंत्री आवास योजना" के अंतर्गत बने थे, किंतु  
अब उनकी संख्या बढ़कर 24000 हो गयी है। इसबार  
नैफेड ने जम्मू-कश्मीर से सेब की पूरी खरीद भी की  
है। कहने का आशय यह है कि पुरानी समस्याओं का  
उन्मूलन करने से आम जन जीवन के विकास के  
अविरोध कम होते हैं। यह अलग बात है कि कांग्रेस  
सहित अनेक दलों को वहाँ के विकास से ज्यादा जरूरी  
अपने बोटबैंक को दुरुस्त रखना लगता है, तो वे  
अनुच्छेद 370 हटाने का विरोध करते हैं। विरोध  
विचारों का हो तो ठीक है, लेकिन विरोध आदत बनकर  
आपके विचारों को प्रभावित करने लगे तो विचार कहीं  
पीछे छूट जाते हैं। आज कांग्रेस के विरोध का तरीका  
उसके आजतन विरोधी होने जैसा हो गया है। अगर  
कांग्रेस किन्हीं विचारों या किसी विचारधारा को मानती  
तो नागरिकता संसोधन कानून का विरोध नहीं करती।  
चूंकि, कांग्रेस के अनेक नेता, जिसमें पूर्व प्रधानमंत्री डॉ.  
मनमोहन सिंह भी हैं, पाकिस्तान और बांग्लादेश में  
धार्मिक कारणों से प्रताड़ित लोगों को भारत की  
नागरिकता देने की मांग पूर्व में कर चुके हैं। लेकिन  
आज कांग्रेस अपने ही विचारों के खिलाफ जाकर खड़ी  
हो गयी है। एकबार के लिए अगर यह मान लें कि  
नागरिकता संसोधन कानून पर कांग्रेस ने अपने पुराने  
विचारों को बदल दिया है, तो कम से कम उसे विरोध  
और असहमति की न्यूनतम मर्यादा की तिलांजलि तो



नहीं देनी चाहिए! सीएए को लेकर दिल्ली के शाहीन  
बाग में चल रहे विरोध प्रदर्शन के मंच से प्रधानमंत्री  
और गृहमंत्री के लिए मासूम बच्चों के मुंह से हिंसक  
बातें बुलवाई गयीं, उस पर ताली बजी लेकिन कांग्रेस ने  
इसकी निंदा तक नहीं की। राजनीति में विरोध और  
असहमति दोनों को भाजपा स्वीकार करती है। 1951  
से लेकर आजतक के इतिहास में भाजपा को जीत से  
ज्यादा विपक्ष में रहने का जनादेश मिला, किंतु कभी  
भाजपा ने जनादेश के खिलाफ आवाज नहीं उठाई। हार  
और जीत दोनों ही परिस्थितियों को स्वीकार करके  
अपने विचारों के लिए संघर्ष करना भाजपा की परंपरा  
रहा है, किंतु पिछले कुछ वर्षों में जिस तरह से कांग्रेस  
ने ईवीएम के बहाने जनादेश पर संदेह करके  
लोकतान्त्रिक प्रक्रियाओं में अवरोध पैदा करने का प्रयास

किया है, वो न तो लोकतंत्र की मजबूती के लिए अच्छा  
है और न ही देश के विकास के लिहाज से उचित है।  
'सबका साथ, सबका विकास' का भाव वर्तमान केंद्र  
सरकार की नीति, नीयत और नेतृत्व में साफ नजर आता  
है। इस सरकार ने बिना कोई भेदभाव किये 115  
आकांक्षी जिलों का चयन करके उन्हें जरूरत के  
अनुरूप विकसित करने की दिशा में काम किया है।  
आज देश उस दौर से निकल चुका है जब पूर्वोत्तर के  
विषय दिल्ली की मीडिया की रुचि में नहीं थी। आज देश  
के विकास में पूर्वोत्तर का भाग भी उसी रफ्तार से दौड़  
रहा है, जैसे देश के अन्य हिस्से दौड़ रहे हैं। नए भारत  
के निर्णायक का लक्ष्य इसलिए अब करीब लगता है,  
क्योंकि देश में एक सर्वस्पर्शी, समावेशी और  
जनभागीदारी की सरकार चल रही है।

# ग्रामीण भारत को खुशहाल बनाने वाला बजट - 2020-21



इसमें दो गय नहीं कि नरेंद्र मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल का दूसरा बही-खाता ग्रामीण भारत के चौतरफा विकास का स्पष्ट संकेत देता है। इसमें सबसे अधिक घोषणाएं ग्राम, कृषि और किसान केंद्रित हैं। कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र एवं विकास के लिए 4.06 लाख करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है। इनमें से 2.83 लाख करोड़ रुपए कृषि के लिए और 1.23 लाख करोड़ रुपए ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज के लिए देने की घोषणा की गई है। 20 लाख किसानों को सौर उर्जा संवर्त लगाने के लिए प्रधानमंत्री कुसुम योजना के

अंतर्गत धन उपलब्ध रहेगा। 2025 तक दूध उत्पादन क्षमता दोगुनी करने का लक्ष्य है। फिलहाल 108 लाख टन दूध और उसके सह-उत्पाद, उत्पादित होते हैं। इसी तरह 2022-23 तक मत्स्य उत्पादन बढ़ाकर 200 लाख टन किया जाएगा। कृषि उत्पादनों को शोध मंडियों तक पहुंचाने की विष्टि से किसान रेल और हवाई-जहाज के भी प्रावधान किए गए हैं। ये सभी लक्ष्य ऐसे हैं, जो खेती-किसानी एवं पशुपालन से आजीविका चलाने वाले लोगों को राहत देते हुए 2022 तक उनकी आमदनी दोगुनी कर सकते हैं। साफ है, वित्त मंत्री निर्मला

सीतारमण द्वारा संसद में प्रस्तुत किया गया यह वार्षिक लेखा-जोखा देश के धरातल को मजबूत करेगा। वित्त मंत्री ने महात्मा गांधी के उस कथन को फलीभूत करने की कोशिश की है, जिसमें उन्होंने कहा था, कि हावाभारत की आत्मा गांवों में बसती है, इसलिए भारत का पहला लक्ष्य अंत्योदय का उत्थान होना चाहिए। हावा अंत्योदय शब्द भाजपा के प्रेरणा पुरुष दीनदयाल उपाध्याय ने ही दिया है। इस शब्द का अर्थ है, जो जातियां हाशिए पर पड़ी गरीबी का दंश झेल रही हैं, उनके उत्थान के उपाय सरकार की प्राथमिकता में हों। मध्यम वर्ग को

नजरअंदाज कर और अमीरों की तिजोरी से अतिरिक्त धन निकालकर ग्रामीण भारत के विकास में लगाना, इस बात को दर्शार्ता है कि सरकार ग्रामीण और शहरी भारत की असमानता की जो खाई बढ़ती जा रही है, अगले पांच सालों में उसे पाने के ठोस उपायों में लग गई है। निचले तबके की आमदनी बढ़ाने और बुनियादी संसाधन उपलब्ध कराना ही ऐसे उपाय हैं, जो समावेशी विकास के लक्ष्य को पूरा करने में सहायक हो सकते हैं। इस नजरिए से किसान की आय दोगुनी करना, गरीबों को स्वास्थ्य बीमा, महिलाओं को उज्ज्वला गैस चूल्हा उपलब्ध कराना, गांव के हर घर को बिजली और पाइप लाइन के जरिए नल देना, ग्रामीणों को आवास और शौचालय बनाना निःसंदेह ऐसे उपाय हैं, जो लाचार को सशक्त बनाने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। ग्राम आधारित इस बजट से किसान की आय प्रसन्न होना चाहिए, क्योंकि अंततः इन सभी योजनाओं की आपूर्ति उन्हीं के द्वारा संभव होगी। बजट में एक नया उपाय दुर्घट उत्पादन दोगुना करना और मछुआरों को किसान का दर्जा देना है। साफ है, कृषि क्षेत्र को मिलने वाले सरकारी लाभ से ये मछुआरों भी जुड़ जाएंगे। मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में करीब 3 करोड़ मछुआरों को इसका लाभ मिलेगा। इस बजट में नवाचारी प्रयोग करते हुए अनन्दाता को ऊजार्दता बनाने का लक्ष्य रखा गया है। हमारे अनेक किसान अपने स्तर पर ऊर्जा का निर्माण करते हैं, किंतु उन्हें महत्व नहीं दिया जाता। अब किसान अपनी बंजर भूमि में सौर ऊर्जा संयंत्र लगा सकेंगे। यदि किसान अपनी जरूरत से ज्यादा बिजली बनाते हैं तो उन्हें इसे बेचने का भी अधिकार होगा। इस बजट में 20 लाख किसानों को ग्रिड से जुड़े सोलर पंप लगाने के लिए आर्थिक मदद दी जाएगी। इस लक्ष्यपूर्ति के लिए 1.69 लाख करोड़ का प्रावधान किया गया है।

मालूम हो, बुदेलखण्ड में मंगल सिंह नाम का एक ऐसा ग्रामीण अन्वेषक है, जिसने हामंगल टर्बाइनहू नाम से एक ऐसा आविष्कार किया है, जो सिंचाई में डीजल व बिजली की कम खपत का बड़ा व देशज उपाय है। यह चक्र उपकरण जलधारा के प्रवाह से गतिशील होता है और फिर इससे आठा चक्रकी, गन्ना पिराई व चारा कटाई मशीन आसानी से चला सकते हैं। साफ है, मंगल सिंह द्वारा निर्मित यह उपकरण उसे अनन्दाता के साथ-साथ ऊजार्दता का भी दर्जा देता है। इस टर्बाइन का व्यावसायिक प्रयोग शुरू हो जाए तो यह मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के किसानों को ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने का काम करेगा। लेकिन ऐसे ग्रामीण आविष्कारकों के साथ अकादिमिक डिग्री नहीं होने के कारण इन्हें मान्यता नहीं मिलती है।

हाल ही में कर्नाटक के एक अशिक्षित किसान गणपति भट्ट ने पेड़ पर चढ़ जाने वाली बाइक का आविष्कार करके देश के उच्च शिक्षित वैज्ञानिकों व विज्ञान संस्थाओं को हैरानी में डाल दिया। गणपति ने ऐसी अनूठी मोटरसाइकल का निर्माण किया है, जो कम खर्च में नारियल एवं सुपारी के पेड़ों पर आठ मिनट में चढ़ जाती है। इस बाइक से एक लीटर पेट्रोल में 80 पेड़ों पर आसानी से चढ़ा जा सकता है।

अब ऐसे लोगों द्वारा निर्मित रचनात्मक उत्पादों को भारत सरकार बौद्धिक संपदा कानून के तहत पेटेंट कराएगी और इन्हें औद्योगिक उत्पादों के रूप में राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय बाजार उपलब्ध कराएगी। यदि ऐसा होता है



तो धान के खेतों में उपजने वाली पराली का बड़ी मात्रा में ऊर्जा के लिए उपयोग होने लग जाएगा। इस समय देश में कृषि उत्पादन चरम पर है। वर्ष 2017-18 में करीब 290 मिलियन टन खाद्यान्न और करीब 325 मिलियन टन फलों व सब्जियों का रिकॉर्ड उत्पादन हुआ है। बावजूद किसान सड़कों पर उपज फेंकने को मजबूर होते हैं। मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में टमाटर और प्याज की पैदावार बहुत है, ऐसे में इनके मुनासिब दाम नहीं मिलते हैं।

भविष्य में यह उत्पाद खराब न हो, इस नजरिए से दो नई योजनाओं ह्यूकृषि उड़ानह्या और ह्याकिसान रेलह्या के जरिए जलदी खराब होने वाली उपजों को देशभर की मडियों में पहुंचाने के प्रावधान किए हैं। कृषि उड़ान से विदेशों में भी कृषि उत्पाद बेचने की व्यवस्था होगी। भारतीय रेलवे जो किसान रेलों पीपीपी आधार पर चलाएगी, उनसे दूध, मछली, फल व सब्जियां मडियों तक पहुंचाए जाएंगे। ये रेलें वातानुकूलित होंगी। मनरेगा

में भी आवंटन बढ़ाकर ग्रामीण आधारित नए रोजगार सुजित होने का अवसर मिलेगा। कुल 16 बड़ी घोषणाएं किसानों के हित में की गई हैं। इस लिहाज से बजट यदि कृषि, किसान और गरीब को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रहा है तो यह सरकार की कृपा नहीं बल्कि दायित्व है, क्योंकि देश की आबादी की आजीविका और कृषि आधारित उद्योग अंततः किसान द्वारा खून-पसीने से उगाई फसल से ही गतिमान रहते हैं। यदि ग्रामीण भारत पर फोकस नहीं किया गया होता तो जिस आर्थिक विकास दर को 7 से 9 प्रतिशत तक ले जाने की उमीद जाताई जा रही है, वह संभव ही नहीं है। इस समय पूरे देश में ग्रामों से मांग की कमी दर्ज की गई है। निःसंदेह गांव और कृषि क्षेत्र से जुड़ी जिन योजनाओं की श्रृंखला को जमीन पर उतारने के लिए जो बजट प्रावधान किए गए हैं, वह वाकई ईमानदारी से खर्च होता है तो गांव से शहर तक खुशहाली आना तय है। ऐसे ही उपायों से शहरी और ग्रामीण भारत की खाई भी कम होगी।

# चिराग की बढ़ी चमक



एलजेपी के अध्यक्ष नियुक्त 36 वर्षीय चिराग पासवान ने अपने करियर की शुरूआत फिल्मों में अभिनय से की थी। उन्हें समीक्षकों की वाहवाही तो मिली लेकिन फिल्म बॉक्स ऑफिस पर सफल नहीं रही। 2011 में उन्होंने मिले न मिले हम फिल्म में काम किया। लोक जनशक्ति पार्टी (लोजपा) के संस्थापक और केन्द्रीय मंत्री राम विलास पासवान अपने स्वास्थ्य को लेकर कम और अपनी पार्टी को लेकर अधिक चिंतित हैं। बीमारी और उम्र ने उनको व्हील चेयर पर पहुंचा दिया है और इसी को देखते हुए आनन फानन में उन्होंने अपने पुत्र और सांसद चिराग पासवान को पार्टी की सारी जिम्मेदारी दे दी है। पिछले दिनों पटना में पार्टी के 20वें स्थापना दिवस पर आयोजित एक समारोह में बहुत ही साफ सन्देश दे दिया कि पार्टी के लिए असली लड़ाई 2020 में नहीं बल्कि 2025 में होगी यानी अब जो कुछ भी करना है वह पासवान जूनियर को करना है। जिनके हाथों में पूरा अधिकार दे दिया गया है। हो सकता है कि राम विलास के इस निर्णय से पार्टी में कम लेकिन परिवार में अधिक असंतोष हो। क्योंकि पासवान सीनियर ने इस मामले पर भी अपनी बात बिल्कुल साफ-साफ रख दी है। उन्होंने कहा कि हम सभी पुराने नेताओं को कहते हैं दूसरी पाईढ़ी को मौका दें। यह सन्देश अपने परिवार के बरिष्ठ सदस्य और छोटे भाई पशुपति कुमार पारस के लिए ज्यादा था। अभी हाल ही में पारस को बिहार लोजपा के

अध्यक्ष पद से हटाकर युवा प्रिंस राज को बिठाया गया है। जो पासवान के दूसरे छोटे भाई राम चन्द्र पासवान, जिनका तीन महीने पहले देहांत होगया था, का बेटा है। राम चन्द्र समस्तीपुर से सांसद थे और अब उपचुनाव में प्रिंस राज ही वहाँ के सांसद बने हैं। प्रिंस राज की ताजपोशी के कुछ ही दिनों बाद चिराग लोजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष हो गये। पारस जो हाजीपुर से लोजपा के नए सांसद बने हैं, उनके हाथ से दो महत्वपूर्ण पद निकल गए। बिहार में मंत्री का पद और बिहार लोजपा के अध्यक्ष का पद। राम विलास ने इस बार अपनी सीट हाजीपुर को छोड़ दिया और उनके स्वास्थ्य ने उन्हें चुनाव लड़ने की अनुमति नहीं दी। हाजीपुर से पासवान ने कई बार चुनाव जीता और एक बार तो सबसे अधिक अंतर से जीत कर गिनीज बुक में नाम दर्ज कराया। लेकिन वह नहीं चाहते थे कि यह सीट परिवार से बाहर जाए इसलिए पारस को विधान परिषद् और मंत्री परिषद् से निकाल कर लोकसभा पहुंचा दिया हालांकि पारस दिल्ली नहीं जाना चाहते थे। उधर राम विलास की पत्नी रीना पासवान चुनाव लड़ने के लिए तैयार नहीं थीं। लोजपा संरक्षक पासवान अब चिराग को आगे करके पार्टी के लिए लाल्ही लड़ाई का मंसूबा बना रहे हैं। कार्यकरकताओं से उन्होंने कह दिया कि सभी सीटों पर तैयारी करें और यह भी बता दिया कि गठबंधन में कौन सीट पार्टी लड़ेगी यह फैसला चिराग करेंगे। जो राष्ट्रीय अध्यक्ष

होने के साथ साथ केन्द्रीय संसदीय बोर्ड के अध्यक्ष भी हैं।

यानी अब आगे से पार्टी में जो कुछ भी होगा चाहे वह तालमेल की बात हो या सीट बंटवारे और उम्मीदवार चुनने की बात हो। हर मामले में चिराग ही फैसला लेंगे इस में किसी और का हस्तक्षेप नहीं होगा। अभी तक विधानसभा चुनाव में तालमेल की बात और उम्मीदवारों के चयन की जिम्मेदारी पारस की हुआ करती थी और उनका ही फैसला आखिरी होता था। पासवान के बयान से अब वह चैप्टर केवल बंद ही नहीं हो गया बल्कि पारस का पार्टी में कोई महत्व ही नहीं रह गया। राम विलास पासवान की स्थापना दिवस पर कही गई बातें हो सकता है बहुत लोगों को चुभ रही हों लेकिन उन्होंने बड़ी ईमानदारी से से जata दिया कि नेतृत्व परिवर्तन करके नौजवानों को जिम्मेदारी दी जानी चाहिए और वह भी समय रहते हुए उन्होंने कहा कि अगर समय रहते सही फैसला नहीं किया गया तो वही हश्र होगा जो उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह यादव का और कर्नाटक में देवेगोडा का हुआ।

साथ ही उन्होंने पुराने मित्र और राष्ट्रीय जनता दल सुप्रीमो लालू प्रसाद को भी सलाह दे डाली कि अपनी संतानों तेजस्वी प्रसाद यादव, तेज प्रताप यादव या मीसा भारती में से किसी एक को पार्टी की जिम्मेदारी सौंप दें। लालू जेल में रहने के बावजूद अभी तक पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं।

# लॉ एंड आर्डर पर भड़के केंद्रीय मंत्री श्री गिरिराज सिंह बेगूसराय एसपी को सबके सामने जमकर डांटा



बिहार में इन दिनों लॉ एंड आर्डर की स्थिति बिगड़ी हुई है। बेगूसराय में बिंगड़े कानून व्यवस्था को लेकर केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह का सबका बांध टूट गया है। गिरिराज सिंह ने सबको सामने बेगूसराय एसपी अवकाश कुमार को जमकर फटकार लगाई। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि दारू लेकर बेगूसराय में हत्या हो रही है। पुलिसवाले घर से औरत को खींच कर ले आते हैं। उन्होंने पुलिस कानून से कहा कि 'आप गलती को छुपाइये मत, आपके यहां अपराधी सिर चढ़कर बोल रहा है।' केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह गुरुवार को अपने संसदीय इलाके में पहुंचे हुए थे। जहाँ उन्होंने कई लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याओं के बारे में जाना और उसके निवारण के लिए आश्वस्त किया। इसी क्रम में अपराध को लेकर भी उनका गुस्सा भड़का और उन्होंने एसपी को फोन कर सबके सामने जमकर डांट-फटकार लगाई। 4 फरवरी को फुलवरिया थाना इलाके के आरक्षीसी विद्यालय के पास एक युवक को अपराधियों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी। आरोप है कि पुलिस ने उसे एक्सीडेंट साबित कर दिया। बरौनी थाना इलाके के रजाबाड़ा गांव रहने वाले मृतक गौतम कुमार उर्फ़ प्रिंस कुमार के परिजनों से गिरिराज सिंह ने मुलाकात कर उन्हें इंसाफ दिलाने का आश्वासन दियो। प्रिंस हत्याकांड में पुलिस की कार्रवाई पर गिरिराज सिंह ने नाराजगी जताई। क्योंकि आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए उसके परिजनों ने एसपी कार्यालय में हंगामा दिया था।

**पुलिसवाले घर से औरत को खींच कर ले आते हैं। उन्होंने पुलिस कानून से कहा कि 'आप गलती को छुपाइये मत, आपके यहां अपराधी सिर चढ़कर बोल रहा है।' केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह गुरुवार को अपने संसदीय इलाके में पहुंचे हुए थे। जहाँ उन्होंने कई लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याओं के बारे में जाना और उसके निवारण के लिए आश्वस्त किया। इसी क्रम में अपराध को लेकर भी उनका गुस्सा भड़का और उन्होंने एसपी को फोन कर सबके सामने जमकर डांट-फटकार लगाई। 4 फरवरी को फुलवरिया थाना इलाके के आरक्षीसी विद्यालय के पास एक युवक को अपराधियों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी। आरोप है कि पुलिस ने उसे एक्सीडेंट साबित कर दिया। बरौनी थाना इलाके के रजाबाड़ा गांव रहने वाले मृतक गौतम कुमार उर्फ़ प्रिंस कुमार के परिजनों से गिरिराज सिंह ने मुलाकात कर उन्हें इंसाफ दिलाने का आश्वासन दियो। प्रिंस हत्याकांड में पुलिस की कार्रवाई पर गिरिराज सिंह ने नाराजगी जताई। क्योंकि आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए उसके परिजनों ने एसपी कार्यालय में हंगामा दिया था।**

जिसके बाद रात में पुलिसीवाले घर से महिलाएं समेत 4 लोगों को लेकर गए और उन्हें जेल भेज दिया। इस मामले में नगर थाना अध्यक्ष को कोर्ट में सदैव उपस्थित होने का आदेश भी जारी किया गया है। 24 घंटे की समय सीमा से ज्यादा तक आरोपियों को हाजत में रखने का आरोप लगा है। हत्या के मामले के अभियुक्तों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर 8 फरवरी को प्रदर्शन कर



रहे लोगों पर प्राथमिकी दर्ज कर जेल भेजने के मामले में मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी ठाकुर अमन कुमार ने नगर थाना अध्यक्ष अमरेंद्र कुमार ज्ञा को शो कॉर्ज करते हुए सभी उपस्थित होने का आदेश दिया है। साथ ही इस मामले में गिरफ्तार किए गए राजबाला बरौनी के नंद कुमार सिंह समेत अन्य चार आरोपियों को तत्काल बंध पत्र पर मुक्त करने का आदेश दिया है। फुलवरिया थाना कांड संख्या 14 / 2020 के नामजद आरोपियों की गिरफ्तारी के संबंध में कुछ आक्रोशित लोग एसपी ऑफिस के सामने 8 फरवरी को प्रदर्शन कर रहे थे।

नगर थाना अध्यक्ष अमरेंद्र कुमार ज्ञा के द्वारा प्रदर्शन कर रहे लोगों के विरुद्ध अन्य धाराओं के अलावे सरकारी कार्य में बाधा डालने का आरोप लगाते हुए नगर थाना कांड संख्या 106 / 2020 दर्ज किया गया था। दर्शन कर रहे लोगों को 8 फरवरी को ही गिरफ्तार कर लिया गया था। बावजूद इसके उन लोगों को मंगलवार को रिमांड के लिए पुलिस ने न्यायालय में प्रस्तुत किया। रिमांड के लिए न्यायालय के समक्ष लाए जाने के बाद आरोपियों ने अपनी आपकीती मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी कुमार के सामने रखी। जिसके आधार पर न्यायालय ने अमरेंद्र कुमार ज्ञा को सदेह उपस्थित होकर कारण पृथक् देने को कहा है। न्यायालय ने शिकायत की गंभीरता को देखते हुए इसकी एक प्रति बेगूसराय के पुलिस उप महानीरीक्षक को भी भेजने का आदेश दिया है।

# दिल्ली में केजरीवाल की आंधी से बिहार में नीतीश की चांदी

## हाथ से राज्यों का खिलकना भाजपा के लिए चिंतनीय

अखिलेश कुमार

देश की राजधानी दिल्ली में अरविंद केजरीवाल को दूसी बार भी उम्मीदों से अधिक मिली सफलता के बाद जहां भाजपा के केंद्रीय नेताओं की चिंताएं बढ़ गई हैं वहीं इस चुनाव परिणाम के बाद बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर अब भाजपा दबाव बनाने की स्थिति में नहीं रह गई है। अब स्थिति ऐसी बन गयी है कि इसी वर्ष होने वाले बिहार विधानसभा चुनाव में सीटों को लेकर नीतीश कुमार भाजपा पर अतिरिक्त अभाव बनाएँगे, इससे इंकार नहीं किया जा सकता है। पिछले 2 वर्षों के अंदर देश के विभिन्न राज्यों में हुए विधानसभा चुनाव में भाजपा को करारी हार देखने को मिला है। वर्ष 2018 में जहां भाजपा देश के 21 राज्य में शासन कर रही थी, वहीं वर्ष 2019 के अंत तक 16 राज्यों में सिमट कर रह गई। करीब 2 वर्षों से भी कम अवधि में भाजपा ने महाराष्ट्र, राजस्थान, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश तथा झारखण्ड जैसे राज्यों में सत्ता खो दिया। केवल किसी तरह हरियाणा में सरकार बचाने में कामयाब रही। पिछले 11 फरवरी को दिल्ली विधानसभा चुनाव परिणाम ने भी भाजपा को निराशा



हाथलगी है। उसे इस तरह के चुनाव परिणाम की उम्मीद कर्तव्य नहीं थी। इस वर्ष के अंत में विहार विधानसभा का चुनाव होना है, जहां जनता दल यू तथा लोक जनशक्ति पार्टी के साथ भाजपा का गठबंधन है। दिल्ली चुनाव परिणाम के बाद भाजपा अब अपने सहयोगी दलों पर टिकट को लेकर दबा बनाने की स्थिति में नहीं रह गई है। व्योंग किसी भी हाल में यहां पुनः राजग गठबंधन की

सरकार कायम रखना उसकी प्राथमिकता होगी।

वहीं दूसरी तरफ अगले वर्ष पश्चिम बंगाल में भी चुनाव होने हैं। पश्चिम बंगाल में भाजपा के पास वैसा कोई कद्दावर नेता नहीं है जो कि ममता बनर्जी का मुकाबला कर सके। पिछले लोकसभा चुनाव में देश के अन्य भागों की तरह पश्चिम बंगाल में भी जो सफलता मिली थी वह नरेंद्र मोदी के छवि का जादू था। लेकिन विधानसभा चुनाव में उसे ऐसी सफलता तब ही मिल सकती है जब मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को चुनावी देने वाला कोई बड़ा करिश्माई नेता सामने आए। फिलहाल ऐसा कोई भाजपा के तरफ से दिखाई नहीं दे रहा है। पश्चिम बंगाल करीब में 28 प्रतिशत वोट अल्पसंख्यकों का है जो पूरी तरह वर्तमान समय में भाजपा के विरुद्ध में ममता बनर्जी के साथ खड़ा दिखाई दे रहा है। भाजपा के हाथों से लगातार राज्यों की निकल रही सत्ता केंद्रीय नेतृत्व के लिए चिंता का विषय इसलिए भी है क्योंकि लोकसभा में बहुमत होने के बावजूद राज्यसभा में पहले से ही संख्या बल कमी पार्टी झेल रही है। और यदि हाथों से राज्यों की सत्ता खिसकने का सिलसिला इसी तरह जारी रहा तो सरकार की मुश्किलें और बढ़ जाएंगी।

## तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री बनाने के लिए तेजप्रताप ने दिया नारा

2020 के बिहार विधानसभा चुनाव में राजद की जीत और अपने छोटे भाई को सीएम की कुर्सी पर बिठाने को लेकर लालू के बड़े लाल तेजप्रताप ने नया नारा दिया है तेजप्रताप ने इस बार संकल्प लिया है कि तेजस्वी को हर हाल में बिहार का मुख्यमंत्री बनाकर रहेंगे। इसके लिए उन्होंने खास रणनीति बनाई है।

### नारा दिया-तेज रफ्तार, तेजस्वी सरकार

तेजप्रताप यादव ने नया नारा दिया है-तेज रफ्तार, तेजस्वी सरकार। इस नारे के जरिये तेजप्रताप ने संकल्प ले लिया है कि 2020 के चुनाव में तेजस्वी को बिहार की राजगद्दी पर बिठाकर ही दम लेंगे। तेजप्रताप यादव ने अपने आवास पर अपने नए नारे और स्लोगन के साथ पोस्टर भी जारी किया है।

उन्होंने ऐलान किया कि वे तेज रफ्तार से हर जिले, हर गांव और हर टोलों में धुआंधार अभियान चलाएँगे। बता दें कि तेजप्रताप यादव इन दिनों लगातार कई जगहों का भ्रमण कर रहे हैं। मसौंदी में उन्होंने जनसभा को भी संबोधित किया और सीएम नीतीश पर अटैक किया था। हालांकि वे खुद अपना पुराना



विधानसभा महुआ की बजाए दूसरा विधानसभा तलाश रहे हैं जहां से वे चुनाव लड़ सकें। वे खुद भी

कह चुके हैं कि वे कहां से चुनाव लड़ेंगे अभी स्पष्ट नहीं हैं।

# किशनगंज जिले में स्टूडेंट पुलिस कैडेट नामक प्रोग्राम का शुभारंभ



पुलिस मुख्यालय और शिक्षा-विभाग के दिशा-निर्देश में किशनगंज जिले में स्टूडेंट पुलिस कैडेट नामक प्रोग्राम चलाया जा रहा है जिसमें जिले के कुल 22 विद्यालयों के 40-40 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। इन्हें पुलिस के चिन्हित पदाधिकरियों तथा सम्बन्धित स्कूल के शिक्षकों द्वारा ट्रेनिंग दी जा रही है।

ये स्टूडेंट पुलिस के कार्यों को नजदीकी से देखेंगे, जानेंगे और समझकर आम जनता में भी जागरूकता लायेंगे। पुलिस जनता की मित्र है और जनता के सहयोग के लिए ही है, यह भाव विकसित करना तथा समय समय पर पुलिस के विभिन्न कार्यों में सहयोग करना इनका ध्येय होगा। इसी सिलसिले में दिनांक 5 फरवरी को जवाहर नवोदय विद्यालय के ये बच्चे किशनगंज थाना का भ्रमण किये जहाँ कोढ़ोबरी थानाध्यक्ष नीरज निराला, किशनगंज थानाध्यक्ष राजेश तिवारी एवं अंचल निरीक्षक इशाद अलम ने थाना के कार्यों की जानकारी दी। फिर वे एसपी कार्यालय पहुंचे और एसपी से मुलाकात कर पुलिस के विभिन्न कार्यों की जानकारी ली। पुलिस के प्रति डर का भाव आम आदमी में ना हो, वही अपराधी तत्वों पर कड़ी कार्रवाई हो, इसके महत्व

को बखूबी समझाया गया। बच्चों को ट्रैफिक रूल्स और नशाबंदी के प्रति भी जागरूक किया गया। जीवन अनमोल है और हम सभी को कानून का पालन करना चाहिए - ऐसा इन बच्चों ने संकल्प भी लिया।

किशनगंज पुलिस द्वारा किये जा रहे कार्यों की बच्चों ने प्रशंसा की और कई बच्चों ने भविष्य में पुलिस सेवा में अपना करियर बनाने की इच्छा भी जताई। पीड़ित जनता को त्वरित न्याय दिलाने में पुलिस की भूमिका को समझा और भविष्य में सदा पुलिस के कार्यों में सहयोग करने का प्रण भी लिया। इस अवसर पर

बच्चों ने एसपी एवं अन्य पुलिसकर्मियों के साथ ढेर सारी तस्वीरें- सेल्फी भी खिंचवाई। इस मौके पर एसपी ने कहा की शीघ्र ही महिलाओं और बच्चियों के लिए सेल्फ-डिफेन्स ट्रेकीनक और मार्शल आर्ट की विशेष कक्षाओं का आयोजन किया जायेगा। उन्होंने अपने छात्र जीवन की बेहतरीन यादें भी बच्चों के साथ शेयर की और अपने जीवन-संघर्षों की चर्चा करते हुए उन्हें अपने जीवन में समाज-राज्य-राष्ट्र के लिए कुछ अच्छा करने को प्रेरित किया, साथ ही सभी बच्चों को भविष्य के लिए बहुत शुभकामनाएँ भी दी।



# साइबर क्राइम से सेप्टी को लेकर किशनगंज एसपी कुमार आर्थि ने जारी किये विशेष दिशा-निर्देश



अक्सर हम देखते और सुनते हैं की अमुक आदमी का पैसा उसके बैंक एकाउंट्स से गायब हो गया, या किसी ने उसके कार्ड से अवैध तरीके से निकासी की या शौमिंग की, दुसरे एकाउंट्स में ऐसे भेज दिए या ऑनलाइन वॉलेट में ट्रान्सफर कर लिए. बहुधा ऐसे अपराधों में अबतक समुचित कारबाई नहीं हो पाती थी. अब इन समस्याओं से इफेक्टिव तरीके से निवटने के लिए साइबर सेफ पोर्टल की सुविधा भारत सरकार द्वारा लांच की गयी है. गृह मंत्रालय के निदेश पर इस पोर्टल में विभिन्न एजेंसियां, बैंक्स और अन्य सम्बंधित भी शामिल किये गए हैं जो ऐसे साइबर अपराधों से व्यापक तरीके से समुचित कारबाई कर सकते हैं। साइबर सेफ नामक पोर्टल से ऐसे अपराधियों के मोबाइल नम्बर, बैंक एकाउंट्स, पे लिंक्स, यूपीआई इत्यादि ब्लॉक किया जा सकता है और पीड़ितों का पैसा

मोबाइल नंबर को ब्लॉक किया गया, हजारों बैंक एकाउंट्स को सील किया गया, लगभग 3000 मामलों में पीड़ितों के अकाउंट में धोखाधड़ी कर हडप गया पैसा भी वापस मिल गया। अतः भारत सरकार के इस पोर्टल का वृहत एवं समुचित प्रयोग किये

जाने की आवश्यकता है। इसके लिए विस्तृत रूप से इन बिन्दुओं का पालन करना होगा:

किशनगंज जिले के पुलिस कापान कुमार आशीष ने निर्देश जारी करते हुए कहा की साइबर और वित्तीय अपराधों से निपटने के लिए हम सभी को दक्ष होना होगा। नयी तकनीक के साथ साइबर क्राइम का प्रारूप और दायरा भी बढ़ रहा है। मोबाइल फोन के एसएमएस से लेकर हर कॉल तक पर साइबर अपराधियों की नजर है। एटीएम से निकाले जाने वाली रकम और बैंकों से होने वाले ट्रांजैक्शन तक भी साइबर अपराधी पहुंच चुके हैं। इनसे बचने का एकमात्र विकल्प सावधानी और जागरूकता है। साइबर क्रिमिनल एटीएम या क्रेडिट कार्ड का बन टाइम पासवर्ड (ओटीपी) हासिल कर चपत लगा रहे हैं। वेलकम किट से चेक की क्लोनिंग बैंकों में खाता खोलने के बाद दी जाने वाली वेलकम किट को भी साइबर अपराधी हथियार बना रहे हैं। वेलकम किट में दिए गए चेक बुक पर अकाउंट नंबर नहीं लिखा होता है। ऐसे में चेक की संख्या को खुरचकर विशेष सॉफ्टवेयर के जरिए क्लोन तैयार कर लेते हैं। इसके बाद कस्टमर से किसी ने किसी बहने चेक के बारे में जानकारी हासिल कर क्लोन चेक से रकम पार कर देते हैं। वेबसाइट पर लिंक भेजकर सरकारी विभागों में नौकरी का विज्ञापन देखते ही साइबर अपराधी वैसी ही फेक वेबसाइट तैयार कर लिंक के जरिए बेरोजगारों से रकम जमा करा रहे हैं। महज दस हजार रुपये और छह से सात घंटे में मैं फेक वेबसाइट तैयार हो जाती है। इसके बाद लिंक में दिए गए अकाउंट नंबर में रकम जमा कर जालसाज चंपत हो जाते हैं। इतना ही नहीं, नौकरी के नाम पर ठगी के लिए ट्रिवटर, फेसबुक, बाटसेप का भी इस्तेमाल हो रहा है। एसपी कुमार आशीष ने बताया की साइबर क्रिमिनल कम व्याज पर लोन का झांसा देकर भी खेल खेलते हैं। इन सबों से बचने के लिए जरुरी सावधानी बरतना अति आवश्यक है। पूरी जानकारी एवं पर्याप्त सतर्कता के अभाव में अक्सर लोग इंटर्नेट एवं ऑनलाइन ठगी के शिकार हो जाते हैं। आमजनों की गाढ़ी मेहनत की कमाई यूं व्यर्थ जाया न हो तथा ऐसी अप्रिय स्थिति का सामना ना करना पड़े, इसके लिए क्या करे.... क्या ना करे....?

## क्या करें

एटीएम का इस्तेमाल करने से पहले आप यह देख लें कि बोर्ड पैनेल पर किसी प्रकार की दूसरी वस्तु न खड़ी हो (स्क्रिमिंग से बचने के लिए)

ट्रांजैक्शन के समय एटीएम पिन नम्बर को हथेली से छुपा दें। ट्रांजैक्शन रसीद न छोड़ें।

कृपया अपने एटीएम पिन को हर तीन महीने पर बदल दें। यह बैंक द्वारा दी गई सलाह है।

क्रेडिट कार्ड रसीद को सुरक्षित रखें ताकि ट्रांजैक्शन की जालसाजी का पता लगा सकें। अपने रसीदों को मासिक विवरण से मिलान कर लें।

केवल ऐसे ही क्रेडिट कार्ड को साथ में रखें जिनकी आपको काफी आवश्यकता हो।

ऐसे कागज (बिल) जिन पर आपके क्रेडिट कार्ड का नम्बर दर्ज हो बारीक टुकड़ों में फाड़ दें।

अपने घर को बदलने से पहले ही अपने कार्ड निर्गतकर्ता को पता बदलने की सूचना दे दें।

यदि आप अपना क्रेडिट कार्ड खो देते हैं, तो कृपया



उसकी सूचना तुरंत दें, सम्बंधित बैंक या हेल्पलाइन में फोन करके तुरंत उसे ब्लाक कराएं, कानूनी कारबाई के लिए नजदीकी थाएं में संपर्क करें।

यदि आप नवीनीकरण/अपग्रेडेशन के समय कार्ड को नष्ट करें तो उसे फेंकने के पहले सदैव उसे एक कोने से दूसरे तक पूरी तरह से काट/तोड़ दें।

## ऐसा न करें

बैंक से भेजा गया कार्ड यदि क्षतिग्रस्त हो या सील खुली होने की स्थिति में आए तो उसे स्वीकार न करें।

अपने डेबिट या क्रेडिट कार्ड पर पिन नम्बर न लिखें।

जिन डेबिट/क्रेडिट कार्ड का आप कम इस्तेमाल करते हैं उन्हें अपने साथ न रखें।

अपना डेबिट/क्रेडिट कार्ड नम्बर/एटीएम पिन किसी को न बताएं।

अपना कार्ड किसी को न दें, भले ही वह अपना पहचान बैंक का कर्मचारी की क्यों ना बताएं।

किसी अजनबी या गार्ड द्वारा एटीएम मशीन में आपको मदद करने की पेशकश के बहकावे में आने से बचें।

किसी अज्ञात/अवैध स्रोत के साथ आप अपने खाते के विवरण को साझा न करें।

किसी अनपेक्षित स्रोत से आए अजनबी ई-मेल एटेचमेंट को न खोलें या इन्स्टेंट मेसेज डाउनलोड लिंक

पर क्लिक न करें। किसी भी संदेहास्पद ई-मेल को तुरंत डिलीट कर दें।

जब आपको कोई फोन कॉल आए और क्रेडिट कार्ड का विवरण मांगा जाए तो आप उसे कोई जानकारी न दें। (इसे विशिष्ट कहते हैं।)

किसी असुरक्षित वेबसाइट पर आप कभी अपने क्रेडिट कार्ड का विवरण न दें।

किसी भी ई-मेल में अपने खाते से संबंधित मांगी गई कोई भी गोपनीय सूचना जैसे कि- पासवर्ड कस्टमर आइडी, डेबिट कार्ड नम्बर, पिन, सीवीवी2, डीओबी की जानकारी कभी न दें, भले ही वह ई-मेल किसी भी सरकारी प्राधिकारों जैसे कि आयकर विभाग, आरबीआई या वीजा या मास्टर कार्ड से जुड़ी किसी कंपनी का ही क्यों न हो।

अपने बैंक खाते से जुड़ी किसी समस्या या खाते के विवरण तथा पासवर्ड अदि किसी सोशल नेटवर्किंग साइट या ब्लॉग पर नहीं दें।

अपने मोबाइल फोन में अपने एटीएम पिन नम्बर जैसे विवरण को सुरक्षित न रखें।

इतनी सतर्कता के बावजूद भी अगर किन्हीं के साथ ऐसी घटना घट ही जाए, तो अविलम्ब नजदीकी थाने में संपर्क करें, साइबर सेफ सुविधा का उपयोग करने का आग्रह तुरंत करें।

सतर्क रहे सुरक्षित रहें, आपकी सहायता के लिए किशनगंज पुलिस सदैव तत्पर है।

# सत्याग्रह स्मारक निर्माण हेतु अनिश्चितकालीन सत्याग्रह



## अभिजीत

अमहान स्वतंत्रता सेनानी, अखंड बिहार के प्रधानमंत्री व प्रथम मुख्यमंत्री तथा आधुनिक बिहार के निर्माता "बिहार के सरी" डॉ. श्रीकृष्ण सिंह (श्रीबाबू) ने महात्मा गांधी के सविनय अवज्ञा आंदोलन के दैरान गांधी के आह्वान पर दांडी के ऐतिहासिक नमक सत्याग्रह की तरह बिहार के गढ़पुरा में भी नमक कानून को भंग किया था। इसके हेतु डॉ. श्री कृष्ण सिंह मुंगर से सैकड़ों आजादी के दीवानों के जर्थे के साथ गढ़पुरा तक, लगभग 100 कि.मी. की अत्यंत कठिन रास्तों की पदयात्रा कर वहाँ के दुर्ग गाँधी में हजारों देशभक्तों की उपस्थिति में 21 अप्रैल, 1930 को नेनियां मिट्ठी से नमक बनाकर बिट्ठिश हुकूमत के काले नमक कानून को भंग किया था। उस चुटकी भर नमक ने सूरज अस्त नहीं होने वाले ब्रिटिश हुकूमत की चूलें हिला दी थीं। इस आंदोलन में बनारसी बाबू, बिन्देश्वरी बाबू, कारी बाबू, दामोदर बाबू, कारी बाबू, बुद्ध नेनियां जैसे सैकड़ों हजारों लोगों ने अपनी आहुति दी थी। उन सबके त्याग, तपस्या और बलिदान का प्रतिफल हमारी आजादी है। पर दुर्भाग्यवश स्वतंत्रता संग्राम की अनमोल विरासत, बिहार का दाढ़ी और श्रीबाबू की कर्मस्थली

82 वर्षों तक पूर्णतः उपेक्षित रही। वर्ष 2011 के 11 सितंबर तक यह पावन नमक सत्याग्रह स्थल मनुष्य एवं पशुओं के मलमूत्र त्याग का स्थान बना था। नमक सत्याग्रह गौरव यात्रा समिति, बेगूसराय के सदस्यों तथा गढ़पुरा के ग्रामीणों एवं जिलेवासियों के सहयोग से इस स्थल पर श्रमदान द्वारा साफ सफाई की गयी। मीडिया में रिपोर्ट्स आने के बाद 82 वर्षों बाद पहली बार उस ऐतिहासिक स्थल पर श्रीबाबू की जयंती मनी और सरकारी स्तर पर जिलाधिकारी एवं मंत्री के नेतृत्व में वहाँ एक कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

इसके बाद 06 मई, 2012 को नमक सत्याग्रह गौरव यात्रा समिति के साथियों के आग्रह पर उप-मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी और तत्कालीन पर्यटन मंत्री नमक सत्याग्रह स्थल पहुंचे और कला संस्कृति विभाग से स्मारक निर्माण हेतु भूमि अधिग्रहण के लिए 26 लाख रु. जिला प्रशासन को उपलब्ध करवाया। पर प्रशासनिक उपेक्षा के कारण दुर्भाग्य से यह काम नहीं हो सका।

अधिकार यात्रा के दैरान मा. मुख्यमंत्री को ज्ञापन तथा 21 अक्टूबर 2012 को उन्हें स्थल पर आने का निमंत्रण भी दिया गया। उन्होंने निकट भविष्य में आने का आश्वासन भी दिया। बिहार शताब्दी वर्ष व "बिहार

केसरी" श्रीबाबू के 125 वें जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में और ऐतिहासिक नमक सत्याग्रह आंदोलन की 82 वीं वर्षगांठ पर देश में पहली बार 19 अप्रैल से 21 अप्रैल तक श्रीकृष्ण चौक (नगर निगम) बेगूसराय से गढ़पुरा के ऐतिहासिक नमक सत्याग्रह स्थल तक एक 34 कि.मी. लंबी 3 दिवसीय पदयात्रा "नमक सत्याग्रह गौरव यात्रा" निकाली गयी। जिसमें हजारों बच्चे, बुजुर्ग और महिलाओं ने बड़े ही उत्साह से हिस्सा लिया। गाँव-मुहल्लों में लोगों ने इस ऐतिहासिक पदयात्रा का जबरदस्त स्वागत किया।

नमक सत्याग्रह के 82 वर्षों बाद और आजादी के 65 वर्ष बाद इस स्थल पर पहली बार 15 अगस्त, 2012 को तिरंगा झंडा भी फहराया गया।

पर सिस्टम की उपेक्षाकृत सोच के कारण स्मारक स्थल उपेक्षित ही रहा। आश्वर्यजनक रूप से नमक सत्याग्रह के नायक श्रीबाबू के 125 वीं जयंती को भी जिला प्रशासन द्वारा यहाँ नहीं मनाया गया।

नमक सत्याग्रह गौरव यात्रा समिति, बेगूसराय ने गढ़पुरा ग्रामवासियों व जिलेवासियों के साथ मिलकर इस स्थल को दांडी, राजघाट, शांतिवन, शक्ति स्थल इत्यादि की तरह विकसित करने हेतु लगातार प्रयास जारी रखा।



प्रथम "गढ़पुरा नमक सत्याग्रह गैरव यात्रा" के प्रति लोगों के उत्साह को देखते हुए निर्णय लिया कि इस गैरवशाली व ऐतिहासिक पदयात्रा को प्रतिवर्ष उसी रास्ते से नमक सत्याग्रह की वर्षगांठ पर 19 से 21 अप्रैल के बीच बेगूसराय से गढ़पुरा तक आयोजित किया जायेगा।

इस निर्णय के आलोक में वर्ष 2018 से यह पदयात्रा अब 17 से 21 अप्रैल के बीच मुंगर से चलकर बेगूसराय के रास्ते गढ़पुरा तक आयोजित की जाती है। समिति के आमंत्रण व सांसद श्री राजीव रंजन सिंह (ललन) के प्रयास से 22 दिसंबर, 2013 को सुबे बिहार के मा.मुख्यमंत्री श्री नीतिश कुमार "बिहार केसरी" की कर्मभूमि गढ़पुरा के ऐतिहासिक नमक सत्याग्रह स्थल पर नमन करने हेतु पहुँचने का कार्यक्रम तय हुआ। फिर समिति के लोगों ने तय किया कि पुरे जिले में एक रथ के माध्यम से सभी गांवों और शहर में जाकर आप जनता को जागरूक किया जायेगा। और जब मुख्यमंत्री नीतिश कुमार वहां पहुँचे तो उस दिन सम्पूर्ण गढ़पुरा गांधी टोपी और तिरंगे से पट गया था। यह कार्यक्रम ऐतिहासिक था, बिहार का कोई मुख्यमंत्री पहली बार यहां पधरे थे। इस अवसर पर उन्होंने नमक सत्याग्रह स्थल के विकास हेतु लगभग 2,68,00,000.00 रुपया की योजनाओं का तथा जिले को लगभग 3,40,00,00,000.00 रुपया की योजनाओं का तोहफा दिया।

2014 में यहां तत्कालीन मुख्यमंत्री जीतनराम माझी पथारे। 2015 में मा. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस कार्य की सराहना की। बावजूद इसके भूमि-अधिग्रहण की प्रक्रिया आजतक शून्य ही है।

इस बीच बगैर भूमि-अधिग्रहण के बहां एक अवैध, अधूरे व वृत्तिपूर्ण स्टूकर को खड़ा कर दिया गया और गलत जानकारी देकर 2017 और 2019 में सीएम नीतीश कुमार से उद्घाटन करवाकर अपने पापों



पर पर्दा डालने का खेल किया गया। समिति ने दोनों बार मुख्यमंत्री को जानकारी देकर इसे रोकने का काम किया।

भष्ट व लुटेरे ठेकेदारों, अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों, राजनेताओं व समाजसेवियों के नापाक गठबंधन के कारण स्वतंत्रता संग्राम की इस अनमोल

विरासत, बिहार के दाढ़ी व आधुनिक बिहार के निमार्ता "बिहार केसरी" श्रीबाबू की कर्मभूमि गढ़पुरा का ऐतिहासिक व गैरवशाली नमक सत्याग्रह स्थल आज भी अपने उद्घारक की बाट जोह रहा है।

राज्य के उपमुख्यमंत्री व दो-दो मुख्यमंत्री तथा देश के लोकप्रिय प्रधानमंत्री द्वारा संज्ञान लिये जाने के

बाबूजूद पिछले 6 वर्षों में 6 इंच जमीन का भी अधिग्रहण नहीं होने, स्मारक निर्माण कार्य को माननीय मुख्यमंत्री के सपनों के अनुरूप और स्वीकृत नक्शे व डिजाइन के अनुसार संपन्न नहीं करने तथा अवैध व त्रूटिपूर्ण निर्माण की अविलंब जांच नहीं करने से बेगूसराय कि जनता काफी आहत है।

इस गंभीर, चिंताजनक व शर्मनाक स्थिति पर सरकार, समाज और सिस्टम का ध्यानाकर्षण कराने हेतु गढ़पुरा नमक सत्याग्रह गैरव यात्रा समिति ने सत्याग्रह के पथ पर आगे बढ़ने का निर्णय लिया है। समिति ने सर्वसम्मति से आगामी 27 जनवरी को दिन के 11 बजे से समाहरणालय के निकट अनिश्चितकालीन सत्याग्रह पर बैठने का निर्णय लिया।

समिति की मांग है कि नमक सत्याग्रह स्थल पर मा. मुख्यमंत्री धोषणा के अनुसार स्मारक निर्माण हेतु भूमि-अधिग्रहण की प्रक्रिया को अविलंब पुरा किया जाय और स्वीकृत नक्शे व डिजाइन के अनुसार यहां दांडी की तरह भव्य नमक सत्याग्रह स्मारक का निर्माण सुनिश्चित किया जाए। साथ ही वहां पर हुये अवैध, अवूर्धे व त्रूटिपूर्ण निर्माण के लिए दोषी लोगों पर विधिसम्मत कार्रवाई सुनिश्चित कर कठोर कार्रवाई की जाये। इसी माँग के साथ 27-01-2020 को सभी नमक सत्याग्रह के बुजुर्ग एवं युवा साथियों ने समाहरणालय के दक्षिणी द्वार के समीप सत्याग्रह पर बैठे। इस सत्याग्रह कार्यक्रम में 90 वर्ष के बुजुर्ग मथुरा सहनी, हरिहर दास, 75 से 82 वर्ष के सोनेलाल मुखिया, विशुदेव पासवान, आनंदी पासवान, राजेन्द्र ठाकुर इत्यादि लगातार मौजूद थे। सत्याग्रह के ठीक दो दिनों के बाद इसको समर्थन देने जिले के राजनीतिक व सामाजिक व्यक्ति तथा संस्थाओं का सहयोग, समर्थन व सहभागिता मिलने लगी। इनमें भाजपा नेता व शिक्षाविद सर्वेश कुमार, शिक्षाविद भगवान प्रसाद सिन्हा, प्रसिद्ध लेखक व पत्रकार सुधाशु रंजन, कांग्रेस नेता राकेश सिंह, जदयू नेता जीतेन्द्र कुमार जीवू रालोसपा जिलाध्यक्ष श्याम बिहारी वर्मा, राजद अध्यक्ष

जिला मुख्यालय बेगूसराय में सत्याग्रह के दसवे दिन जिलाधिकारी के आश्वासन पर सत्याग्रह कि समाप्ति पर 71 डिसम्बर जमीन अधिग्रहण को ले जिला भू अर्जन कार्यालय से 14-02-2020 को बिभाग के द्वारा जमीन कि मापी के लिए नियुक्त किया गया राजनाथ प्रसाद (अमीन) को, जिन्हे 14-02-2020 को सत्याग्रह स्थल पर जा कर जमीन कि मापी करनी है।

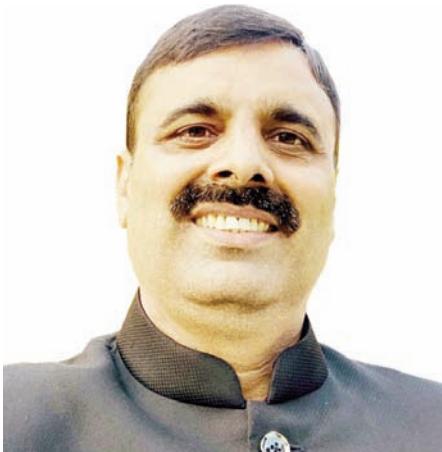
मोहित यादव, लोजपा जिलाध्यक्ष प्रेमकुमार पासवान, कुन्दन पासवान, भाज्युमो नेता सौरभ सिपी, राममूर्ति चौधरी, इत्यादि प्रमुख थे। पांच दिनों तक जिलाधिकारी के द्वारा इस मसले पर संज्ञान नहीं लिये जाने पर सामाजिक संगठन के द्वारा आक्रोश मार्च भी निकला गया। सत्याग्रह के आठवें दिन 03 फरवरी को जिला के बकील संघ के लोगों ने आगे बढ़कर समर्थन दिया। सत्याग्रह कार्यक्रम में जिले के वरिष्ठ अधिकारी वशिष्ठ कुमार अम्बस्ट, विजय महाराज, प्रमोद कुमार, नीरज शाडिल्य इत्यादि पहुंचे और एक प्रेस को संबोधित करते हुए कहा कि जब महामहिम राज्यपाल ने अधिसूचना जारी कर दिया है, तब भी जिला प्रशासन का इस सम्बन्ध में ध्यान नहीं देना अनैतिक, व असंवैधानिक है। महामहिम राज्यपाल के आदेश का अनुपालन नहीं करना कानूनी रूप में अपराध जैसी घटना है। सत्याग्रह के नौवें व दसवें दिन 04 फरवरी को सभी दलों के नेताओं ने सत्याग्रह कार्यक्रम में पहुंचकर एक स्वर से भव्य नमक सत्याग्रह स्मारक के निर्माण हेतु भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया पूरी करने की मांग की। इस अवसर पर भाजपा नेता नीरज शाडिल्य, जदयू नेता मुकेश कुमार जैन, सीपीआई नेता अनिल अंजान, सीपीएम अंजनी कुमार सिंह, कांग्रेस नेता ब्रजेश कुमार प्रिंस, आप नेता सुशील कुमार सिंह, अभिषेक जायसवाल, भाज्युमो नेता धीरज भारद्वाज, रालोसपा नेता रविंद्र सिंह, विधान प्रियरंजन इत्यादि मौजूद थे। सर्वदलीय बैठक के बाद अंजनी कुमार सिंह की अगुवाई में समिति के पदाधिकारियों ने जिलाधिकारी के आमंत्रण पर दसवें दिन उनके कक्ष में वार्ता की। इस वार्ता में जिलाधिकारी अरविंद कुमार वर्मा ने

राजनीतिक दलों के नेताओं व समिति के पदाधिकारियों को आश्वस्त किया कि वह लंबित भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया पर तुरंत काम करेंगे और इस हेतु जो भी जरूरी कदम उठाने की जरूरत होगी करेंगे। सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल को डीएम ने बताया कि महामहिम राज्यपाल के आदेश का अनुपालन सुनिश्चित किया जायेगा तथा जनभावनाओं का आदर किया जायेगा। डीएम के आश्वासन के बाद सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल की सलाह पर अनिश्चितकालीन सत्याग्रह फिलहाल स्थगित कर दिया गया।

इस अवसर पर जानकारी देते हुए समिति के संस्थापक सह राष्ट्रीय महासचिव राजेव कुमार ने बताया कि सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल को मिले आश्वासन पर उन्हें उम्मीद है कि युवा जिलाधिकारी के कार्यकाल में नमक सत्याग्रह की स्मृतियों के अक्षुण्ण रखने हेतु भूमि अधिग्रहण कर भव्य स्मारक निर्माण हेतु सभी जरूरी कदम उठाए जायेंगे। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन के द्वारा होली से पहले कुछ ठोस व निर्णयक पहल अपेक्षित है, यदि ऐसा नहीं होता है तो फिर सत्याग्रह के पथ पर आगे बढ़ने का रासा खुला है। समिति के पदाधिकारी व कार्यक्रम संयोजक रामसेवक स्वामी यादव ने बताया कि सत्याग्रह के लिए मुकेश विक्रम यादव, रमेश महतों, सुशील सिंहानियां, डोमन महतों, संजीव पोद्दार, जोगिंदर नोनियां इत्यादि ने लगातार लगातार कड़ी मेहनत की और उनसबके समर्पण व सेवाभाव से स्मारक निर्माण को पुरा करने हेतु आयोजित यह अनिश्चितकालीन सत्याग्रह 10 दिनों तक शांतिपूर्ण व सुव्यवस्थित रूप से आयोजित किया जा सका है।



# इंसान में भ्रम



मृत्युंजय कुमार सिंह

अध्यक्ष, बिहार पुलिस एसोसिएशन

मोह - भ्रम, ज्ञान के बाद यदि अज्ञान का जन्म होता है तो वह मोह - भ्रम, ज्ञान "जहर" है किन्तु उससे ऊपर उठ कर ज्ञान के बाद यदि नम्रता का जन्म होता है तो वही ज्ञान "अमृत" होता है। और वे अमृत देश - समाज के एकता - अखंडता को अमरत्व प्रदान करता है। रामचरितमानस के एक वाक्या उद्धृत करता हुआ लक्षणों के वध के लिए विष्णु जी राम अवतार में अयोध्या में जन्म लिए। विधि के विधान के तहत चौह वर्ष का वनवास राम को होता है। सीता और लक्ष्मण भी वनवास में साथ होते हैं। उसी समय के कई ज्ञान - उपदेश - कल्याण आज उद्घाटन बने हुवे हैं। पंचवटी में लक्षणजी प्रभु से पूछते हैं कि आप मुझे समझाकर यह बताएं कि ज्ञान, वैराग्य और माया का स्वरूप क्या है? आपकी भक्ति क्या है? तथा ईश्वर तथा जीव में क्या भेद है? फिर वे अंत में इन प्रश्नों के पूछे जाने के पीछे अपना उद्देश्य बताते हुए कहते हैं कि प्रभु! जिससे मेरे जीवन में जो शोक, मोह और भ्रम विद्यमान हैं वे दूर हों तथा आपके चरणों में अनुराग हो जाए। लक्षणजी के द्वारा पूछे गए ये प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। परमार्थ तत्त्व के लिए जिज्ञासापूर्वक किए गए इन प्रश्नों तथा भगवान राम के द्वारा दिए गए उनके उत्तर को 'मानस' में रामगीता के नाम से जाना जाता है। इसमें लक्षणजी अपने प्रश्नों के माध्यम से मनुष्य के साथ जुड़ी भी शाश्वत समस्याओं का समाधान प्रभु से पाना चाहते हैं। भ्रम में अर्जुन भी कुशक्षेत्र के रणक्षेत्र में भगवान कृष्ण के माध्यम से इसी प्रकार की समस्याओं का समाधान प्राप्त करते हैं और वह उपदेश भागवत गीता के रूप में प्रसिद्ध है। पंचवटी में लक्षणजी के प्रश्नों को सुनकर भगवान राम उनसे कहते हैं - लक्षण! तुमने प्रश्न तो बहुत से कर दिए पर मैं इनका उत्तर बहुत विस्तार से न देकर संक्षेप में ही सब समझऊँगा। और साथ-साथ प्रभु ने यह भी कह दिया कि मैं जो कुछ कह रहा हूं उसे तुम मन, बुद्धि और चित्त लगाकर सुनो। लक्षणजी के द्वारा कहे गए तीन शब्द शोक, मोह और

भ्रम तथा प्रभु के द्वारा भी प्रयुक्त तीन शब्द मन, बुद्धि और चित्त ये आपस में पूरी तरह एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। अंतःकरण चतुष्य में मन ही शोक का केंद्र है। किसी घटना को देख या सुनकर मन में ही पीड़ा की अनुभूति होती है। परिवार, समाज तथा देश में घटने वाली हजारों घटनाएं हैं जिनसे व्यक्ति के मन में शोक उत्पन्न होता है। और जिस प्रकार शोक की समस्या मन से जुड़ी हुई है, भ्रम की समस्या का संबंध बुद्धि से जुड़ा हुआ है। भ्रम, व्यक्ति की बुद्धि में उत्पन्न होता है। मानस में इसका सकेत देवर्षि नारद के प्रसंग में वर्णन आता है कि देवर्षि नारद के अंतःकरण में यह अभिमान उत्पन्न हो गया कि मैंने सब विकारों को जीत लिया है। उस समय भगवान उनके इस गर्व को नष्ट करने के लिए अपनी माया को आदेश देते हैं। देवर्षि अपनी विजय-गाथा सुनकर जब खिरसाग से लौटते हैं तब मार्ग में उहें एक नए नगर का दर्शन होता है। उस नगर के स्वामी, राजा शीलनिधि हैं तथा उनकी कन्या है

! यह हमारे मन की वृत्ति का ही एक चित्रण है। जब हमारे मन में कोई प्रलोभन उत्पन्न होता है, कोई आकांक्षा उत्पन्न होती है, कोई वासना उत्पन्न होती है तो उसकी पूर्ति के लिए मन में जो व्यग्रता जागृत होती है, उसका सकेत ही इस प्रसंग के माध्यम से मिलता है। आज देश में कुछ लोगों के मन में भ्रम उत्पन्न हो गया है। बुद्धि होते हुवे भी भ्रम में हैं। देश - समाज आशांत हो रहा है। ज्ञान होते हुवे भी धरना - प्रदर्शन हो रहा है। प्रेम भाईचारा कमज़ोर हो रहा है। देश की एकता - अखंडता पर प्रहर हो रहा है। आज देश - समाज में लोगों को भ्रम क्यों होते हैं? तथा इनसे मुक्त होने की पद्धति क्या है? इसके उत्तर में हम ऐसा मानते हैं कि ये तो रहेंगे ही और व्यक्ति को इस शब्दों से ऊपर उठ कर सबके साथ प्रेम - भाईचारे में रहना पड़ेगा, जीना पड़ेगा। सभी भारतीय माँ भारती के संतान हैं। माँ भारती सभी के लिए महत्वपूर्ण है। आधुनिक चिकित्सा-पद्धति में डॉक्टर जिस प्रकार कई रोगों के विषय में यही धारणा



जिसका नाम विश्वमोहिनी है। वस्तुतः वह एक वास्तविक नगर नहीं था, अपितु भगवान के संकल्प से निर्मित एक माया-नगर था। वह नगर पहले भी नहीं था और बाद में भी नहीं था। नारद वहां चले गए फिर उनके भीतर एक तीव्रतम का आकांक्षा का उदय हो गया। वे उस कन्या से विवाह करने के लिए व्यग्र हो उठे। यद्यपि देवर्षि नारद के जीवन में धर्म, कर्म, पूजा-पाठ आदि सब सम्यक रूप से विद्यमान हैं, पर उस समय उनकी जो मनस्थिति हो गई वह तो मानो 'कामगीत' का ही उदाहरण है। उस समय उहें जप-तप आदि का विस्मरण हो गया। वे केवल इसी सोच में निमग्न हो गए कि कैसे शीघ्र ही इस कन्या की प्राप्ति मुझे हो जाए

रखते हैं कि वे ठीक नहीं हो सकते और व्यक्ति को उनके साथ ही रहना होगा, जीना होगा, ठीक उसी प्रकार इन समझाओं को भी असाध्य और अपरिहार्य माना जाता है। पर अध्यात्म तत्त्व एवं मैं इसे स्वीकार नहीं करता। वस्तुतः मानव जीवन में ये जो समस्याएं दिखाई देती हैं उनका कारण स्वयं के भीतर है। और यदि हम उसे समझ लें तो बाहर दिखने वाली समस्याओं का समाधान अपने आप हो जाएगा। जिहें भ्रम में फिकर है कल की वे जग रहे रात भर, जिहें यकीन है ईश्वर पर वे सोए रहे रात भर। एक अंत में सदेश :-

मन - चित्त में भ्रम हो तो कोई अपना नहीं समझो प्रेम - भाईचारा तो कोई पराया नहीं

# अलग सोच व अंदाज की बजह से अमरदीप झा गौतम पहंचे शिखर पर

अपनी अलग सोच व काम के अलग अंदाज की बजह से अमरदीप झा गौतम ने एलिट इंस्टीचूट को शिखर तक पहुंचा दिया है। बच्चों के साथ सप्ने देखना, उसके सप्ने बुनना और फिर उन सप्नों को अंजाम तक पहुंचाने के लिए दिन-रात की मेहनत का ही नतीजा है कि हर साल एलिट इंस्टीचूट देश को बेहतर इंजीनियर और डॉक्टर देता रहा है। अगर 2019 के रिजल्ट पर नजर डालें, तो 178 जेईई मेन, 23 जेईई एडवांस्ड, 69 नीट-मेडिकल में और 2018 में 165 जी-मेन में, 30 बच्चे जी-एडवांस और नीट-2018 में 63 बच्चों को क्वालिफाइड करवा चुके अमरदीप झा गौतम का सफर काफी लंबा है।

18 सालों से हर दिन बच्चों के बीच रहते, उनसे फ्रेंडली बातें करते, उनकी प्रॉब्लम को सुनते और फिर उस प्रॉब्लम को दूर करने में लग जाते।

इस दौरान एक बार भी उनके चेहरे पर थकान का भाव नहीं आता। एलिट इंस्टीचूट की सफलता के पीछे उनकी बेहतर सोच और बेहतर कर्म ही है कि वो आज बच्चों को बेहतर सुविधा के साथ-साथ बेहतर पश्चाचर प्रोवाइडर करवा रहे हैं।

## स्मार्ट स्टडी और प्रैक्टिकल-एप्रोच...

पत्ना में एलिट इंस्टीचूट ऐसा पहला हुआ, जो अपने बच्चों की सुविधा और उसके ज्ञान को उन्हीं की लैंग्वेज में समझाने का ट्रैंड शुरू कर पाने में सफल हो पाया। एलिट अपने स्टूडेंट्स के लिए स्मार्ट-स्टडी के साथ-साथ मॉडर्न स्टडी-पैकेज भी मुहैया करवा रहा है।



अब दसवीं पास स्टूडेंट्स को मेडिकल व इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए थ्री इयर कोर्स भी सबसे पहले यहीं शुरू करवाया जाएगा।

एलिट इंस्टीचूट के संस्थापक और डायरेक्टर अमरदीप झा गौतम ने बताया कि बच्चों के स्किल को अपडेट करने के लिए हर 45 दिनों पर बच्चों की काउंसिलिंग करायी जाती है।

इसमें स्टूडेंट्स की इनजी, उसका लेवल, उसकी समझदारी का आंकलन करने के बाद उसकी कमियों को दूर करने की दिशा में भी काम किया जाता है।

सिर्फ कोचिंग हीं नहीं बल्कि सेल्फ स्टडी के लिए लाइब्रेरी, डिस्कशन हॉल, ऑन लाइन और ऑफ लाइन सिस्टम के साथ-साथ इंगिलिश की पढ़ाई भी मुहैया करवायी जा रही है।

## योग-विज्ञान और कल्पना-शक्ति के सदुपयोग के प्रयोग

एलिट संस्थान एक ऐसा संस्थान हो पाया, जहाँ छात्र-छात्राओं को नियमित-रूप से योगासन, प्राणायाम और ध्यान के प्रयोगों से उनको शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक संवर्धन का लाभ मिलता है। वहीं संस्थान के निदेशक अमरदीप झा गौतम का शोध "रिदमिक-

एकशन" के माध्यम से बच्चों को प्रकृति के साथ अपनी कल्पना-शक्ति को जोड़ना सिखाया जाता है।

## जनरल लाइफ के एग्जांपल से प्रॉब्लम दूर...

कुछ स्टूडेंट्स की शिकायत रहती है कि वे सवाल करने से डरते हैं।

अगर सवाल करते हैं, तो सही जवाब नहीं मिल पाता है।

लेकिन, एलिट इंस्टीचूट में बच्चों को आने वाले सब्जेक्टिव परेशानी को जनरल लाइफ के एग्जांपल देकर समझाया जाता है।

एलिट इंस्टीचूट के डायरेक्टर अमरदीप झा गौतम ने बताया कि "मेरे इंस्टीचूट में टीचर और स्टूडेंट के बीच के गैप को कम किया जाता है। फ्रेंडली माहील होने की बजह से बच्चे आसानी से अपनी पढ़ाई कर पाते हैं, साथ ही उनके सवालों का सही-सही जवाब भी दिया जाता है"।

12 टीचर और 10 नन टीचिंग स्टॉफ के साथ मॉडर्न टीचिंग हब के रूप में तब्दील हो चुका एलिट इंस्टीचूट बच्चों के सवालों के जवाब पर खरा उत्तर रहा है। यहाँ पर इंजीनियरिंग और मेडिकल दोनों के ही

एक्सपर्ट द्वारा इसकी पढ़ाई करवायी जाती है।

## विरासत में मिला शिक्षण कार्य...

बेगूसराय के सांस्कृतिक व सामाजिक परिवेश से आगे बढ़ने के बाद अमरदीप झा गौतम पटना साइंस कॉलेज और बी.एच.यू. से अपनी पढ़ाई करने के बाद संघ लोकसेवा आयोग के लिये चुने गये, पर उन चीजों में मन नहीं लगने के कारण शिक्षण-कार्य में जुट गये।

अमरदीप झा गौतम के माँ और पिताजी भी बिहार-सरकार के सेवा-निवृत शिक्षक हैं, जिन्होंने लगभग 28 वर्षों तक बिहार की शिक्षा में अपना योगदान दिया।

ऐसे में श्री गौतम ने शिक्षण का दायित्व विरासत के तौर पर ग्रहण किया।

वह फिजिक्स के विख्यात शिक्षक हैं और बच्चों को खेल-खेल में फिजिक्स को आसान बना कर समझाने के हुनर में माहिर हैं।

## फिजिक्स से सोशल एविटिविटी तक...

एलिट इंस्टीचूट के डायरेक्टर अमरदीप झा गौतम को जब भी मौका लगता है कि वो सोसायटी के गंभीर मसलों पर अपनी कलम भी चिन्होंने लगाते हैं।

फिजिक्स के जानकार अमरदीप झा गौतम एक साथ कई विधाओं में महारत रखते हैं।

मसलन कि उनकी लिखी नाटक 'आप्रपाली', 'सुदामा', 'मेरी आवाज़', 'चंद्र-पृथ्वी', 'शबरी' 'सीता' और 'द्रौपदी' ने उनकी लेखनी और उनके विचारों को बहुआयामी सिद्ध किया।

वहीं उनकी कवितायें, शायरी की बेहद रोमांचकारी प्रस्तुति लोगों को झूमने पर विवश कर देती है।

गाना लिखने का शौक और उसकी अदायगी एलिट इंस्टीचूट के एनुअल-फंक्शन में दिख जाती है।

## एनुअल फंक्शन की मरती...

एनुअल फंक्शन में अपने लिखे गीत, नाटक, भाषण और काव्य पाठ के साथ उसे बच्चों की आवाज में पिरोकर पेश करवाया जाता है।

समाज के विभिन्न-वर्गों के विभूतियों और देश के लिये समर्पित व्यक्तियों को "सरस्वती-सम्मान", "प्रतिभा-सम्मान" और "बाबा-नागार्जुन सम्मान" से अलंकृत किया जाता है।

स्वभाव से निर्भल अमरदीप झा गौतम ने बताया कि हरेक के अंदर एक्टर छिंगा रहता है। ऐसे में उसे उभार कर निकालने का दायित्व भी हम जैसे लोगों का ही है, इसलिए इस दिन को भी बच्चे काफी यादगार बनाते हैं और मैं भी इसमें जमकर जुट जाता हूँ।

## मेधावी बच्चों को दी जाने वाली सुविधाएं...

■ ज्ञानोदय योजना के अंतर्गत एलिट-21 प्रोग्राम चलाया जाता है।

■ इसमें वैसे 21 बच्चों का सेलेक्शन किया जाता है जो गरीब होते हैं।

■ उनके अंदर जबरदस्त मेधा रहती है, साथ ही उसके घर की वार्षिक आय एक लाख या उससे कम हो।

■ गरीब बच्चों के लिए 25 परसेंट की स्कॉलरशिप दी जाती है।

■ लड़कियों को पूरे साल बीस परसेंट की छूट उपलब्ध करवायी जाती है।

■ 2019 से ग्रामीण-परिवेश के स्टूडेंट्स को कंप्यूटर की पढ़ाई और ऑनलाइन-टेस्ट के प्रैक्टिस के लिये कंप्यूटर-लैब की व्यवस्था की जायेगी।

■ प्रैक्टिकल-एप्रोच से फिजिक्स, केमेस्ट्री, मैथ और बायोलॉजी पढ़ाया जाता है।

## सम्मान और पुरस्कार...

■ 2012 में स्थानीय न्यूज चैनल की ओर से बेस्ट मोटिवेटर का अवार्ड मिल चुका है।

■ 2013 में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के समूह द्वारा युवा शिक्षा सम्मान।

■ 2014 में शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए शिक्षा-रत पुरस्कार।

■ 2015 में आईनेक्स्ट-अखबार के द्वारा एजुकेशनल एविचर्स-अवार्ड।

■ 2015 में केन्द्रीय शिक्षा राज्यमंत्री से सरस्वती-

सम्मान।

■ 2016 में पत्र-पत्रिकाओं द्वारा लालबहादुर शास्त्री सम्मान।

■ 2016 में युवा विज्ञान-विशेषक सम्मान।

■ 2017 में जागरण-समूह द्वारा गुरु-सम्मान।

■ 2018 में गैर-सामाजिक संगठन द्वारा युवादार्शनिक सम्मान।

2018 में चंपारण में युवा-कविरत सम्मान।

## प्रोफाइल :

नाम- अमरदीप झा गौतम

प्रख्यात शिक्षाविद, फिजिक्स-टीचर, कैरियर-काउंसलर, साहित्यकार, सामाजिक कार्यकर्ता, राजनीति-विशेषक सामाजिक चिंतक और एलिट इंस्टीचूट के संस्थापक और निदेशक।

**अमरदीप झा गौतम के बारे में कुछ खास बातें:**

पिता : श्री तेज नारायण झा।

माता : श्रीमति नगीना झा।

जन्म तिथि : 12 फरवरी, बेगूसराय।

शौक : भौतिकी पढ़ाना, काव्य-लेखन और वाचन, गजल लिखना, किताबें पढ़ाना, सामाजिक-जागरूकता को बढ़ाना।

फैवरेट मूवी : पेज श्री, आँधी, ब्लैक, डोर, पिंजर, आमिर, बाहुबली, मणिकर्णिका।

बेस्ट एक्टर : अमिताभ बच्चन।

बेस्ट एक्ट्रेस : कोंकणा सेन और कंगना राणावत।

गजल : जगजीत सिंह और गुलाम अली।

फैवरेट नॉवेल : कर्मभूमि, गोदान, दिनकर और निराला की कवितायें, जयशंकर प्रसाद की कामायनी, वाजपेयी जी की मेरी "इक्यावन कवितायें" का संग्रह शामिल हैं।

इंस्पायरिंग पर्सन द्वा अमिताभ बच्चन, हेके पल ऐसा लगता है कि वो कुछ न कुछ सीख रहे हैं जिज्ञासा है।

आधियां बहुत तेज हैं कुछ दीप ज़िलमिलाते हैं !

ये वही हैं जो अंधेरों से रौशनी चीर लाते हैं !!



# बिहार विधानसभा चुनाव के लिए चिराग ने अभी से ही शुरू कर दी तैयारी कहा इस बार राजद का सूपड़ा साफ तय है



दिल्ली विधानसभा चुनाव के परिणाम आने के बाद ही बिहार विधानसभा चुनाव की तैयारी शुरू हो गयी है। लोकजनशक्ति पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने बिहार के सभी 243 सीटों पर चुनाव कि तैयारी शुरू कर दी है, साथ ही आगामी चुनाव के लिए अपना स्लोगन बिहार फर्स्ट, बिहारी फर्स्ट भी जारी कर दी है।

लोजपा फिलहाल एनडीए के साथ है और ये लगभग तय है कि आगामी चुनाव में चिराग भाजपा और जदयू के साथ ही चुनावी मैदान में उतरेंगे लेकिन उनके पार्टी के नेता चिराग को ही बिहार के अगले मुख्यमंत्री के रूप में देख रहे हैं।

हालांकि चिराग अभी जमुई से दूसरी बार सांसद हैं एवं बिहार विधानसभा चुनाव में उनकी क्या भूमिका होगी उन्होंने अभी स्पष्ट नहीं किया है। चिराग लेकिन अपने भाषणों में 2020 के मुख्यमंत्री के रूप में नीतीश कुमार को ही देख रहे हैं। पिछले दिनों वैशाली में गुहमंत्री अमित शाह ने भी एक कार्यक्रम में संबोधित करते हुए कहा था कि बिहार में एनडीए के नेता नीतीश ही होंगे और उनके ही नेतृत्व में भाजपा जदयू व लोजपा एक साथ चुनाव लड़ेंगी। बिहार में बीजेपी और जेडीयू की सहयोगी लोक



जनशक्ति पार्टी ने फैसला किया है कि वो इस साल अक्टूबर - नवम्बर में होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए अपना अलग घोषणा पत्र जारी करेगी। घोषणा पत्र का नाम बिहार फर्स्ट बिहारी फर्स्ट विजन डॉक्युमेंट 2020 रखा जाएगा। इस घोषणा पत्र में पार्टी अगले पांच सालों के लिए बिहार के विकास का अपना रोड मैप लोगों के सामने रखना चाहती है। घोषणा पत्र के 14 अप्रैल यानि भीमराव अब्बेडकर की जयंती के दिन पटना में जारी किए जाने की संभावना है।

**चिराग पासवान ने किया कमिटी का गठन**

पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान ने घोषणा पत्र का मसौदा तैयार करने के लिए एक सात सदस्यीय ड्राफ्टिंग कमिटी का गठन किया है। कमिटी में अध्यक्ष के तौर पर चिराग पासवान में अलावा 6 अन्य सदस्य शामिल किए गए हैं।

इनमें पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव अब्दुल खालिक और बिहार प्रदेश अध्यक्ष प्रिंस राज भी शामिल हैं। चिराग पासवान ने कहा- हम विजन डॉक्युमेंट का मसौदा तैयार करने के लिए सीधे गांव स्तर पर जनता से संवाद कर उनका फीडबैक लेंगे।

# बिहार की बेटी वंदना तीसरी बार बनी दिल्ली की विधायक पिता जनसंघ के रहे थे सक्रिय कार्यकर्ता

अनूप नारायण सिंह

मुजफ्फरपुर की बेटी लगातार तीसरी दफे विधायक बनी है। बन्दना शर्मा आम आदमी पार्टी के टिकट पर दिल्ली के शालीमार बाग सीट से चुनकर विधानसभा पहुंची है। जानकारी के अनुसार बन्दना शर्मा के पिता ब्रजकिशोर शर्मा मुजफ्फरपुर के पारू के छाप गांव की रहने वाले थे। बन्दना का सम्मुखीन मुजफ्फरपुर के जीरोमाइल स्थित बथना गांव में है। विधायक के मायके के लोग मुजफ्फरपुर शहर के मझालिया में रहते हैं। बन्दना शर्मा के लगातार तीसरी दफे विधायक बनने पर उनके परिवार और रिश्तेदारों में काफी खुशी है। बन्दना शर्मा की मां ने खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि लोगों के कामों में लगातार सेवा भाव से लगे रहने के कारण ही वह फिर से विधायक चुनी गई है। उनकी मां ने बताया कि चुनाव प्रचार में वह जाना चाहती थी लेकिन बेटी ने मना कर दिया था। मां ने बताया कि 5 भाई बहनों में बन्दना तीसरे नंबर पर हैं। उनके पति दिल्ली में ही विजयेस करते हैं। बता दें कि बन्दना शर्मा के पिता ब्रजकिशोर शर्मा जनसंघ और भाजपा से जुड़े हुए थे। कई दफे अटल बिहार वाजपेयी और आडवाणी के साथ भी उनकी मुलाकात हो चुकी थी। वे राजनीति में काफी सक्रिय थे लेकिन वे कभी विधायक तक नहीं



बन पाये। लेकिन उनकी बेटी ने जीत की हैट्रिक लगाकर

उनके सपनों को साकार कर दिया।

## जगदानंद के बहाने राजद का गेमप्लान

अनूप नारायण सिंह

एक समय बिहार राजनीति की धूरी रहे लालू प्रसाद यादव भले ही रांची जेल में बंद हैं लेकिन फिर भी उनके समर्थकों के बीच उनकी छवि पर कोई असर नहीं पड़ा है। यही कारण है कि एक बार फिर वे अपनी पार्टी राष्ट्रीय जनता दल के सर्वसम्मिति से अध्यक्ष चुन लिये गये हैं। किसी भी दल के इतिहास की यह विरल घटना है कि लगातार कोई 12वां बार अध्यक्ष बना हो। भारत की दलीय राजनीति में भाजपा, माकपा या भाकपा में किसी भी व्यक्ति को इस तरह अध्यक्ष नामित करने की परंपरा नहीं है। हां, सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस में नेहरू, गांधी परिवार का बोलबाला रहा है। कांग्रेस की ही तरह क्षेत्रीय दलों जैसे सपा, तेदेपा, द्रमुक, अन्नाद्रमुक, टीएमसी, लोजपा, जेडीयू, जेएमएम, बीजद, रकपा, भालोद आदि दलों में भी एक ही परिवार की चलती है। बहरहाल, लालू प्रसाद यादव को राष्ट्रीय अध्यक्ष नामित करने से पहले राजद के प्रदेश अध्यक्ष की कमान सर्वर्ण जाति के जगदानंद सिंह को सौंपी जा चुकी है। राजपूत जगदानंद सिंह को प्रदेश अध्यक्ष बनाये जाने को राजद का गेमप्लान माना जा रहा है। राजनीतिक विशेषकों का

कहना है कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की साफ-सुथरी छवि से निपटने के लिए ही उन्हीं के मित्र रहे जगदानंद सिंह को प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया है। जगदानंद को मिली नई जिम्मेदारी को लालू के बड़े पुत्र तेजप्रताप यादव और छोटे पुत्र तेजस्वी प्रसाद यादव के बीच तनाव को कम करने के प्रयास के रूप में भी देखा जा रहा है। साथ ही राजपूत नेता को प्रदेश अध्यक्ष की कमान देने के पीछे आरजेडी की सोशल इंजिनियरिंग की भी कोशिश है। जगदानंद सिंह राजद की स्थापना काल से ही पार्टी के सदस्य हैं। लालू राबड़ी शासनकाल के दौरान महत्वपूर्ण विभागों के मंत्री भी रह चुके हैं। बेदाग छवि के जगदानंद सिंह एक जमाने में नीतीश के साथी हुआ करते थे और पटना की सड़कों पर एक ही रिक्षे पर बैठकर जाते हुए लोगों ने उन्हें देखा है। बक्सर से राजद सांसद रहे जगदानंद सिंह को लोग बिजुरिया बाबा के नाम से भी पुकारते हैं क्योंकि इन्होंने अपने शासन काल में बिजली और सिंचाई के लिए बहुत कार्य किया था। बहरहाल, राजद का गेमप्लान इससे भी समझा जा सकता है कि पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यकों की राजनीति करने वाले राजद ने पहली बार किसी सर्वर्ण को प्रदेश अध्यक्ष की कमान सौंपा है। इसके राजनीतिक

निहितार्थ तो हैं ही। इसके पीछे पारिवारिक कारण भी है। बिहार में अगले वर्ष विधान सभा का चुनाव होना है। यहां एनडीए गठबंधन से राजद का सीधा मुकाबला है। पूर्व प्रदेश अध्यक्ष रामचंद्र पूर्वे का लालू प्रसाद के बड़े बेटे तेजप्रताप खुलेआम विरोध करते रहे हैं। पूर्वे के फैसले को लेकर तेजस्वी और तेजप्रताप के बीच विवाद की खबरें अक्सर आती रहती थीं। इसी वजह से पार्टी को एक ऐसे नेता की तलाश थी, जिसकी साफ छवि हो और पार्टी के लिए एक अभिभावक के तौर पर काम कर सके। जगदानंद की छवि एक झामनदार और कर्मठ नेता के तौर पर होती है। जगदानंद की गिनती उन समाजवादी नेताओं में होती है जो विवादों से दूर रहे हैं और पार्टी के भीतर सभी गुटों द्वारा सम्मानित हैं। शांत स्वभाव वाले सिंह को राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद और उनके परिवार का करीबी माना जाता है। तेजस्वी यादव भी सिंह के प्रति सम्मान भाव रखते हैं। इससे इतर नीतीश कुमार द्वारा संसद में नागरिकता कानून का समर्थन किये जाने की वजह से उनकी पार्टी में विद्रोह की स्थिति बनती दिख रही है। जदयू के थिकटैक के रूप में जाने जाने वाले पार्टी उपाध्यक्ष प्रशांत किशोर को नागरिकता कानून पर नीतीश का समर्थन नागवार गुजरा।

# अस्थमा के लिए इनहेलर्स हैं सही : डॉ. सुधीर कुमार

अनूप नारायण सिंह

बेरोक जिंदगी अभियान के दूसरे चैप्टर ने आज मल्टी मीडिया जागरूकता अभियान अस्थमा के लिए इनहेलर्स हैं सही को लॉन्च किया। यह नया अभियान अस्थमा के विषय में जागरूकता और शिक्षा पर फोकस करता है और साथ ही इसमें इन्हेलर्स के साथ चिकित्सा और मरीज को लगातार इस बात के लिए प्रेरणा भी दी जाती है कि वह अवरोध रहित जीवन जिए। इस अभियान का उद्देश्य इनहेलेशन थेरेपी के कलंक को मिटाना है और मुख्य मुद्दों और थेरेपी से जुड़े मिथकों के विषय में बताते हुए इसे अधिक सामाजिक स्वीकृति दिलाना है। इससे अभिभावकों और फिजिशियन के बीच अधिक संवाद करने में मदद मिलेगी और मुख्य रूप से यह बताया जाएगा कि इनहेलर्स बच्चों के लिए उपयुक्त हैं और सभी स्तरों की गंभीरता के लिए इनहेलर्स एडिक्टिव नहीं हैं और ओरल सोल्शन्स की तुलना में इससे अच्छे परिणाम मिलते हैं। डॉ. सुधीर कुमार, डीएम पट्ट्योनोलॉजिस्ट और संस्थापक, रामकृष्ण चेस्ट सुपर स्पेशियलिटी अस्पतालों ने कहा, इनहेलर्स बहुत महत्वपूर्ण हैं और इसका अंदाजा इस बात से लगाया

इस अभियान का उद्देश्य इनहेलेशन थेरेपी के कलंक को मिटाना है और

मुख्य मुद्दों और थेरेपी से जुड़े मिथकों के विषय में बताते हुए इसे अधिक सामाजिक स्वीकृति दिलाना अधिक सामाजिक स्वीकृति दिलाना

है। इससे अभिभावकों और फिजिशियन के बीच अधिक संवाद करने में मदद मिलेगी और मुख्य रूप से यह बताया जाएगा कि इनहेलर्स बच्चों के लिए उपयुक्त हैं और सभी स्तरों की गंभीरता के लिए इनहेलर्स एडिक्टिव नहीं हैं और ओरल सोल्शन्स की तुलना में इससे अच्छे परिणाम मिलते हैं।

जा सकता है कि 16 % माइल्ड अस्थमा मरीजों को जान का खतरा है। 30-37% वयस्क अस्थमा के

मरीज गंभीर अस्थमा के शिकार हैं जिन्हें मामूली अस्थमा था और अस्थमा के कारण जिन 15-20% मरीजों की मौत हुई उन्हें माइल्ड अस्थमा था। यह अपने आप में एक गंभीर विषय है जिसको अनदेखा नहीं किया जा सकता। तमाम शोधों में यह बात सामने आयी है कि बच्चे और वयस्क, माइल्ड अस्थमा को लेकर नियमित इलाज नहीं करते। असल जिंदगी में नियमित चिकित्सा का पालन करने का यह प्रतिशत मात्र 30% है। इसलिए वास्तविक जीवन में देखें तो अधिकांश मरीज किसी प्रकार से इनहेलर का उपयोग तभी करते हैं जब उसकी आवश्यकता होती है। इस अवसर परे डॉ. मनीष कुमार, सहायक प्रोफेसर, बाल रोग विशेषज्ञ, इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज पटना ने कहा, ज्ञानों को यह तथ्य नहीं छिपाना चाहिए कि उन्हें अस्थमा है और यह बहुत जरूरी है जितना जल्दी हो सके इसका सही दबाओं जैसे इनहेलेशन थेरेपी से इलाज किया जाए। समय से पहलान करना और सभी उपचार को साधारण लाइफस्टाइल में बदलाव लाते हुए अस्थमा को मैनेज करने में अच्छी मदद मिलती है। अस्थमा को जल्दी पहचान कर और सही उपचार योजना तैयार कर-के उस पर आसानी से नियंत्रण किया जा सकता है।



Dr. Manish Kumar

Dr. Sudhir Kumar

# गुरु डॉ. एम रहमान को मिला बिहार रत्न सम्मान 2020



अनूप नारायण सिंह

वेद और कुरान के ज्ञाता गुरु डॉक्टर एम रहमान को शिक्षा के क्षेत्र में उनके द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए संस्कृति फाउंडेशन मूने विंग की तरफ से बिहार गौरव सम्मान 2020 से सम्मानित किया गया उन्हें यह सम्मान रेलवे के महाप्रबंधक दिलीप कुमार डॉ नीतू नवगीत गंगा बचाओ अभियान के प्रमुख विकास चंद्र गुड़ बाबा पत्रकार अभियान आद्या ने संयुक्त रूप से प्रदान किया। बिहार की राजधानी पटना के नया टोला गोपाल मार्केट में सिविल सर्विसेज की कोचिंग क्लास चलाने वाले डा एम रहमान की कहानी जल्द ही सिनेमा के पद्दे पर दिखाई दी। गरीब बच्चों के सपने को पंख देने वाले रहमान पर अभिनेता सुनील शेष्ठी की प्रोडक्शन हाउस फिल्म बना रही है। इस साल के अंत तक यह फिल्म रिलीज होगी। आईएएस के इंटरव्यू में दो बार फेल होने के बाद डॉ. रहमान ने कोचिंग खोला और अब तक हजारों छात्रों को अफसर बना चुके हैं। खास बात यह है कि वे गरीबों से फीस के नाम पर सिर्फ एक रुपए लेते हैं। रहमान बताते हैं कि मैंने अपनी जिंदगी में गरीबी देखी है। मैंने प्रण लिया था पढ़ाई के रास्ते में किसी छात्र के लिए गरीबी को रोड़ा नहीं बनने दूंगा। कोचिंग में जो बच्चे पढ़ते हैं उससे इतर 27 ऐसे बच्चों को अपने साथ रखता हूं जो बेहद गरीब हैं और उनका कोई ख्याल रहने वाला नहीं है। उनके पालन-पोषण से लेकर पढ़ाई और सभी तरह

की जिम्मेदारियां उठाता हूं कोचिंग में पढ़ने वाले कई बच्चे मेरी जिम्मेदारियों को देखते हुए एक-दो हजार या पांच हजार रुपए फीस के तौर पर दे देते हैं। 22 साल हो गए, कभी किसी से फीस नहीं मांगती। जो बच्चे सफल होकर निकले और आज ऊंचे पदों पर बैठे हैं, वे अर्थिक तौर पर मदद करना चाहते हैं। मेरा एक सपना है कि भविष्य में गुरुकुल संस्था खोलूं जहां गरीब और असहाय बच्चों को मुफ्त शिक्षा के साथ उनका पालन-पोषण भी हो। गुरुकुल में वैसे बच्चे रहेंगे जिनका इस दुनिया में कोई सहारा नहीं है। कोचिंग से निकले बच्चों से जब बात होती है तब कहता हूं आप सब मेरे इस सपने को साकार करने में मदद करना। रहमान बताते हैं कि 1997 में यूपीएससी में दूसरी बार इंटरव्यू में असफल होने के बाद मैंने रहमान एम के नाम से कोचिंग की शुरूआत की। तब 10-12 बच्चे ही क्लास में थे। 1998 में एक लड़के का चयन



यूपीएससी में हुआ। यह लोगों के बीच फैल गया कि एक सर बिना फीस के आईएएस की तैयारी करते हैं। इसके बाद गांव-गांव से लोग पढ़ने आने लगे। 22 साल में 40 से ज्यादा बच्चे यूपीएससी में सलेक्ट हो चुके हैं। बीपीएससी में चार सौ से ज्यादा बच्चे सफल हो चुके हैं। चार हजार से ज्यादा बच्चे इंप्रेक्टर और सब-इंप्रेक्टर हैं। 2007-08 बैच की एक छात्रा पिंकी गुप्ता अभी प्रधानमंत्री सुरक्षा सलाहकार बोर्ड में कार्यरत है। बच्चों को मुफ्त शिक्षा देने के साथ रहमान हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए भी काम करते हैं। रहमान बताते हैं कि 1994 में दिल्ली से एमए कर रहा था। इसी दौरान ब्राह्मण परिवार की एक लड़की अमिता कुमारी से प्यार हुआ। समाज हमारी शादी के खिलाफ था। इसके बावजूद हमने 1997 में पटना के बिरला मंदिर में शादी की। इस वजह से अब तक 13 फतवे जारी हो चुके हैं। रहमान ने बताया कि दस साल तक हमें किराये पर कोई घर नहीं मिला। पति-पत्नी होकर भी हमें अलग-अलग रहना पड़ा। 2007 में मित्र की मदद से मुझे किराये पर मिला तब हम दोनों साथ रहने लगे। 2008 में एक बेटा हुई, जिसका नाम अदम्या है। 2012 में बेटा हुआ उसका नाम अभिज्ञान है। इसके बाद कोचिंग सेंटर का नाम रहमान एम क्लासेज से बदलकर अदम्या अदीति गुरुकुल कर दिया। उनके इस अभियान में नवादा निवासी और उनके संस्थान के व्यवस्थापक शिक्षाविद मुन्ना जी उनकी छाया की तरह 1994 से उनके साथ है।

# वरिष्ठ फ़िल्म पत्रकार अनूप नारायण सिंह को मिला बिहार रत्न सम्मान 2020

संस्कृति फाउंडेशन एवं हेलिपंगु मेन द्वारा बिहार की विभूतियों को सम्मानित करने के लिए बिहार रत्न सम्मान समारोह का आयोजन आज कलिदास रंगालय, पटना में किया गया। फ़िल्म पत्रकार अनूप नारायण सिंह को इस कार्यक्रम में पत्रकारिता के क्षेत्र में सम्मानित किया गया। गुरु डॉक्टर एम रहमान गुरुपीत सिंह मुकेश हिसारिया साई रसोई की अमित जायसवाल समेत पूरे बिहार से 45 लोगों को इस सम्मान से सम्मानित किया गया इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि वरीय रेलवे अधिकारी दिलीप कुमार समाज सेवी गुडू बाबा ठीक 24 के बिहार झारखण्ड ब्यूरो प्रमुख अमिताभ ओझा पटनदेवी मंदिर के पुजारी बाबा विवेक डा नीतु नवगीत जी समाजसेवी अंजू जी बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित थे। मूल रूप से छपरा जिले के मशरख प्रखण्ड के अस्ना पंचायत निवासी पत्रकार अनूप नारायण सिंह बिग गंगा चैनल के कार्यक्रम भोजपुरिया टानाटन के माध्यम से काफी लोकप्रिय हुए हैं। नवा सम्मान मिलने पर टीम अस्नव मीडिया के प्रमुख डॉ विजय राज सिंह शैलेश कुमार सिंह भूषण कुमार सिंह बबतू बिहार पुलिस एसोसिएशन के अध्यक्ष मृत्युंजय कुमार सिंह टीम शुक्रिया वशिष्ठ मुकेश कुमार सिंह ज्योतिषाचार्य मुकेश पाठक बिग गंगा के चैनल हेड राजीव मिश्रा अभिनेत्री श्यामली श्रीवास्तव राकेश तिवारी अनिल पाँल ने बधाई दी है।



## अखिल भारतीय युवा यादव महासभा ने अजय जमादार यादव को उपाध्यक्ष किया मनोनीत

अखिल भारतीय युवा यादव महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष दिनेश यादव एवं बिहार प्रभारी पवन यादव के अनुशंसा पर बिहार युवा यादव महासभा के प्रदेश अध्यक्ष अजय यादव ने सारण-छपरा निवासी जमादार यादव को अखिल भारतीय प्रदेश युवा यादव महासभा को उपाध्यक्ष पद पर मनोनीत किया है।

इनके मनोनयन से यादव समाज को सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक एवं राजनीतिक रूप से सशक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेंगे। इसके लिए प्रदेश अध्यक्ष अजय यादव को बधाई दिया है। बधाई देने वालों में जितेन्द्र यादव, राजकुमार सिंह यादव इत्यादि शामिल थे।



# ब्रजेश कुमार जालान भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर चुनावी ताल ठोकने की तैयारी

अनूप नारायण सिंह

बिहार के सुरसंड विधानसभा क्षेत्र से ब्रजेश कुमार जालान भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर चुनावी ताल ठोकने की तैयारी में लगे हैं जनकपुर रोड नगर पंचायत के पार्षद रह चुके विमल जालान के परिवार का इलाके में अच्छा-खासा प्रभाव है।

ब्रजेश कुमार जालान 2005 से 2010 तक जनकपुर रोड नगर पंचायत के पार्षद थे इस दौरान उन्होंने क्षेत्र में सड़क बिजली पानी स्वास्थ्य क्षेत्र में काफी बेहतरीन कार्य किया है, सीतामढ़ी के सुरसंड विधानसभा क्षेत्र से चुनावी तैयारी में लगे ब्रजेश कुमार जालान कहते हैं कि संघ से बचपन से ही जुड़ाव रहा है उनके जीवन में संघ का काफी प्रभाव है, छात्र जीवन में ही वे भारतीय जनता पार्टी से जुड़ गए और पार्टी के एक सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में जन सेवा में लगे हुए हैं बिहार के उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी राजनीति में उनके आदर्श हैं।

उनके पिता बजरंग प्रसाद जलान सीतामढ़ी में व्यवसाय के क्षेत्र में बड़े नाम के रूप में जाने जाते हैं साथ ही साथ इनके परिवार ने पुरी में विद्यालय मंदिर तालाब का निर्माण करवाया है लोगों के सुख दुख में सहभागी रहते हैं ब्रजेश बताते हैं कि सुरसंड विधानसभा क्षेत्र में 70 फीसदी वैश्य मतदाता है उसके बाद भूमिहार यादव व अन्य जातियों के मतदाता ऐसे में इस सीट पर वैश्य समाज की दावेदारी बनती है वे पार्टी से लंबे अंतराल से जुड़े हुए हैं इसलिए उनकी दिली तमन्ना है कि अगर पार्टी उन्हें टिकट देती है तो वह कमल खिलाएंगे क्षेत्र की समस्याओं के बारे में बताते हैं कि यहां पर जो भी काम होना चाहिए जनप्रतिनिधियों के द्वारा नहीं हुआ सरकारी योजनाओं में लूट मची हुई है आधारभूत संरचना चरमराई हुई है सरकारी अस्पताल नहीं है बाढ़ की समस्या प्रतिवर्ष इस इलाके के विकास की गति को कम कर देता है सड़क बिजली पानी सब कुछ बबांद हो जाता है सरकारी योजनाओं में लूट है बंदरबांट है स्थानीय स्तर पर रोजगार का आभाव है अनुमंडल में कॉलेज नहीं है इस कारण से छात्रों को बाहर जाना पड़ता है मुख्यमंत्री की घोषणा के बावजूद यहां कॉलेज नहीं बना पुरी में राष्ट्रीय स्तर के स्टेडियम निर्माण भी अधर में लटका हुआ है यहां के लोग रोजगार के आभाव में सूरत पंजाब की तरफ पलायन करते हैं।

उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार के नेतृत्व में इस बार बिहार की जनता ने मूड़ बना लिया है कि बिहार में फिर एक बार नीतीश कुमार के रूप में सरकार मुख्यमंत्री और भाजपा जदयू लोजपा की सरकार बने केंद्र में जिस प्रकार नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में लोकप्रिय



सरकार है उसी प्रकार बिहार में नीतीश कुमार के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी के सहयोग से सरकार का निर्माण पुनः होगा। उन्होंने कहा कि केंद्र और राज्य में एक ही दल और गठबंधन की सरकार होगी तो विकास की गति तेज होगी सुरसंड का दुर्भाग्य है कि आजादी के इतने वर्षों बाद भी यहां विकास की गति पूरी तरह से अवरुद्ध है।

उन्होंने कहा कि वे भी कहीं बाहर जाकर व्यवसाय कर सकते थे लेकिन एक बिहारी होने के नाते उन्होंने स्थानीय अस्तर पर ही अपने व्यवसाय को गति दी जिससे ज्यादा से ज्यादा लोगों को रोजगार मिल पाया है उन्होंने अपने पुत्र शैलेश जलान को ऑस्ट्रेलिया में बिजेनेस मैनेजमेंट करवाने के बाद वापस बिहार बुलाकर उन्हें भी बिहार में ही व्यवसाय करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। ब्रजेश कहते हैं कि

शराबबंदी जैसे कठोर कानून बनाकर बिहार में नीतीश कुमार ने लोगों के सामाजिक स्तर को ऊपर उठाया अपराध में कमी आई है केंद्र सरकार ने कई अहम मुद्दों पर जनता से किए वादों को पूरा किया है ऐसे में लोगों का झुकाव एनडीए गठबंधन की तरफ है पार्टी के एक समर्पित कार्यकर्ता होने के नाते व अस्थानी साथ क्षेत्र में सक्रिय होने के कारण वे भी चाहते हैं कि पार्टी उन्हें सुरसंड की जनता की सेवा करने का मौका दें अगर पार्टी ने टिकट देती है तो वे रिकॉर्ड मतों से विजयी होकर दिखाएंगे। बाढ़ के समय में उनकी तरफ से दर्जनों कैप क्षेत्र में लगाए जाते हैं उनके दरवाजे मुसीबत में फंसे लोगों के लिए सदैव खुले रहते हैं बिना किसी राजनैतिक फायदे के लोगों की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहते हैं उन्होंने कहा कि समाज सेवा उन्हें विरासत में मिली है।

# बिहार में खिलाड़ियों के लिए बने विशेष नीति : अधिकारियों द्वारा दिया गया सम्मान

पैरा एथलेटिक्स शेखर चौरसिया के सम्मान में आयोजित हुआ समारोह



**सासाराम -** बिहार में प्रतिभावान खिलाड़ियों के लिए विशेष नीति बनाने की जरूरत है! सहायता और प्रोत्साहन के अभाव में बिहार के खिलाड़ियों की प्रतिभाएं दबकर रह जाती हैं। यह तो बातें सामाजिक संस्था पहल के अध्यक्ष अखिलेश कुमार ने जमुहार स्थित नारायण मेडिकल कॉलेज सभागार में सामाजिक संस्था "पहल" द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में कहीं। यह समारोह पैरा एथलेटिक्स स्वर्ण पदक विजेता शेखर चौरसिया के सम्मान में किया गया था।

उन्होंने कहा कि शेखर चौरसिया अब तक राष्ट्रीय स्तर के प्रतियोगिताओं में 7 स्वर्ण पदक के अलावे करीब दो दर्जन पदक प्राप्त कर शाहाबाद और रोहतास का नाम रोशन किए हैं। इसके बावजूद ऐसे खिलाड़ियों की उपेक्षा दुखद है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2018 में ऐसे के अभाव में शेखर प्रतियोगिता में भाग लेने स्पेन नहीं जा सके। सरकार को इस तरह के खिलाड़ियों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

सम्मान समारोह को संबोधित करते हुए गोपाल नारायण सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ एम एल वर्मा, पहल के अध्यक्ष अखिलेश कुमार तथा गोपाल नारायण सिंह विश्वविद्यालय के सचिव गोविंद नारायण सिंह ने कहा कि संसाधन की सीमा असीमित नहीं होती है और अपने पराक्रम तथा दृढ़ इच्छाशक्ति के बदौलत उपलब्ध संसाधन में ही कामयाबी हासिल करना सफल जीवन का उद्देश्य होता है। उन्होंने शेखर चौरसिया को आश्वासन दिया कि उसे जब भी जरूरत पड़े उसको मदद के लिए गोपाल नारायण सिंह विश्वविद्यालय हर संभव मदद करने के लिए तैयार हैं। सम्मान समारोह को सासाराम के प्रखंड प्रमुख राम कुमार देवी ने भी संबोधित किया और शेखर के उच्चल भविष्य की कामना की।

इस अवसर पर शाहाबाद महोत्सव आयोजन समिति के तरफ से कुलपति डॉ एम एल वर्मा, पहल के अध्यक्ष अखिलेश कुमार तथा गोपाल नारायण सिंह विश्वविद्यालय के सचिव गोविंद नारायण सिंह ने संयुक्त रूप से प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया। वहीं सबल संस्था की तरफ से अरुणिष पांडे, रोहित कुमार तथा रियांश में शॉल देकर सम्मानित किया। जबकि विद्यार्थी परिषद के नेता मयंक उपाध्याय ने प्रतीक चिन्ह तथा ट्रैक सूट भेट की। शेखर चौरसिया को भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष प्रमोद सिंह, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय

इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ विजय सिंह, राजद नेता विमल कुमार सिंह, सोन कला केंद्र इसके जीवन प्रकाश, किसान नेता महेंद्र सिंह, विवेक कुमार, रोहतास डिस्ट्रिक्ट के फाउंडर अंकित वर्मा, जद यू के शिकंजय सिंह और शैलेश कुमार, पूर्व नगर पार्षद मनोज पासवान, बंटी सिंह, राहुल कुमार, सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे।

सम्मान समारोह का संचालन अधिवक्ता मनोज कुमार अज्ञानी तथा धन्यवाद ज्ञापन नारायण मेडिकल कॉलेज के जीएम उपेंद्र सिंह ने किया।

विदित हो कि दिनारा प्रखंड के गूनसेज गांव निवासी शेखर चौरसिया का वर्ष 2010 में सड़क दुर्घटना में बुरी तरह जख्मी हो गए थे जो 4 वर्षों तक जिंदगी और मौत से अस्पताल में जुटे रहे लेकिन पैर पर खड़े होने के बाद उन्होंने एथलेटिक्स को अपना लक्ष्य आया तथा चंद वर्षों में पैरा एथलीट की दुनिया में कई ऊंचाइयां प्राप्त की। इस अवसर पर शेखर चौरसिया ने का कि आज मुझे बहुत गर्व हो रहा है कि अपनी मातृभूमि पर पहली बार मुझे समारोह आयोजित कर सम्मानित किया जा रहा है देश के कई भागों में सम्मानित होने का मौका मिला है लेकिन अपनी मातृभूमि पर पहली बार सम्मानित होने से मैं अभिभूत हूं।

# दरभंगा स्नातक एमएलसी चुनाव में युवाओं की पसन्द बन के उभर रहे हैं रजनीकांत पाठक

दरभंगा स्नातक एमएलसी चुनाव ज्यो ज्यो नजदीक आ रहा है त्यों त्यों भावी उम्मीदवार का सम्पर्क अधियान तेज हो रहा है। इन दिनों युवा समाजसेवी रजनीकांत पाठक की चर्चा बहुत तेजी से उभरा है। आपको बता दे कि दरभंगा स्नातक निर्वाचन क्षेत्र के 4 जिला दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर और बेगूसराय के कुल 77 प्रखंड हैं। लगभग 101 बूथ पर पंजीकृत स्नातक मतदाता वरीयता क्रम में अपना मत डालेंगे। वर्तमान में दिलीप चौधरी सिटिंग एमएलसी है। इनके पिता नीलाम्बर चौधरी भी कई टर्म रह चुके हैं। इस सीट पर इस बार बखरी बेगूसराय निवासी रजनीकांत पाठक भी दावा ठोक रहे हैं। मतदाता पंजीकरण में काफी सक्रिय दिखे। रजनीकांत पाठक का कहना है कि इस बार 60 से 70% नए मतदाता आये हैं जिसमें युवाओं की संख्या सर्वाधिक है। और ये इस बार वंशबाद को खत्म करेंगे। हमारे बिहार संवाददाता अनूप नारायण सिंह से रजनीकांत पाठक के साथ बातचीत के मुख्य अंश-

संवाददाता के सवाल-दरभंगा स्नातक एमएलसी चुनाव में आप भी मैदान में हैं। क्या लग रहा है। रजनीकांत पाठक-जी बिल्कुल। मैं मिथिलावाद के नव संकल्प व नव विकल्प की मूल अवधारणा को लेकर चला हूँ। हर जगह चर्चा में हूँ। आम स्नातक विकल्प के रूप में देख रहे हैं।

संवाददाता-आपके सामने वर्षों से जमे दिलीप चौधरी हैं और हाल ही में काग्रेस छोड़ जदयू में आ गए हैं। फिर आप उनके सामने कैसे टिकेंगे?

रजनीकांत पाठक-देखिये वे कहाँ थे और कहाँ आ गए हैं। यह सवाल नहीं है। सवाल यह है कि उन्होंने



पिछले 6 वर्षों में मिथिला के लिये क्या किया है? सदन में कभी भी मिथिला विश्वविद्यालय को केंद्रीय विश्वविद्यालय बनाने की मांग क्यों नहीं किया? आज मधुबनी, बेगूसराय सहित सभी कॉलेज में छात्र हैं। लेकिन पढ़ाने के लिये प्रोफेसर/अध्यापक नहीं हैं। एमएलसी के विकास मद की राशि कमिशनयुक्त रहता है। जिसके कारण विकास की गुणवत्ता कही नहीं दिख रही है। ऐसे तमाम मुद्दे हैं जिसे इसबार मतदाता उठा रहे हैं। इसलिये इस बार दरभंगा के स्नातक मतदाता दल नहीं दिल से फैशला लेंगे और दिल में रजनीकांत बस चुका है। वे कही नहीं हैं।

संवाददाता-बेगूसराय के ऋषि कॉलेज में छात्र जी संख्या 32 हजार के करीब हैं। लेकिन पढ़ाने के लिये मात्र 20 से 22 अध्यापक/प्रोफेसर हैं। ऐसा क्यों?

रजनीकांत पाठक-ये सवाल आपको सरकार व उनके प्रतिनिधि से करना चाहिए था? खैर

आपने इस बड़ी समस्या पर सवाल किया है। इसके लिये आपको धन्यवाद देता हूँ।

देखिये अकेला ऋषि कॉलेज विश्वविद्यालय बनाने की तमाम अहर्ता रखता है। वर्षों से बेगूसराय में एक अलग विश्वविद्यालय की मांग उठती रही है। दुर्भाग्य है कि हमारे स्नातक एमएलसी जो अभी सरकार में हैं वे एक भी सवाल सदन के माध्यम से नहीं उठाये हैं। आज बखरी और बलिया में एक भी डिग्री कॉलेज नहीं

है। मधुबनी और समस्तीपुर का भी वही हाल है।

**संवाददाता-** आप चुनाव में कौन कौन मुद्दा को लेजर स्नातक मतदाता के बीच जा रहे हैं?

रजनीकांत पाठक-दरभंगा विश्वविद्यालय को केंद्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा मिले, बन्द उद्योग चालू हो, मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर और बेगूसराय के वित्तरहित कॉलेज कर्मी का अनुदान सरकार सीधा उनके खाते में भेजे, समस्तीपुर और बेगूसराय को मिलाकर एक विश्वविद्यालय बने, शिक्षक से सिर्फ शैक्षणिक कार्य किया जाय, मिथिला विकास बोर्ड का गठन कर सरकार स्पेशल अटेंसन दे ताकि मिथिला के विकास को गति मिले। एमएलसी विकास मद की राशि कमीशन मुक्त हो और राशि का उपयोग स्कूल कॉलेज के परिसर में हो सभी कॉलेज में एक स्मार्ट रुम हो जिसमें अध्यन का वातावरण हो।

**संवाददाता-** आखरी सवाल किस दल का समर्थन मिलने जा रहा है।

रजनीकांत पाठक-मुस्कुराते हुए दरभंगा स्नातक के मतदाता इस बार दल नहीं दिल से फैशला लेने जा रहे हैं। मिथिला स्टूडेंट यूनियन के साथ साथ कई सामाजिक व शैक्षणिक संगठनों के अलावा बुद्धिजीवियों का आशीर्वाद और स्नेह मिल रहा है। हम दल की परवाह छोड़ दिल में जगह बना रहे हैं। मतदाता मालिक हैं और मेरी नैया मतदाता मालिक के हाथ में ही



# शिल्पकार समाज में सामाजिक-आर्थिक एवं राजनीतिक पिछड़ापन का उदय आखिर कैसे हो?



गौतम सुमन गर्जना



प्राचीन भारत से लेकर आधुनिक भारत के कालक्रम में शिल्पकार को बहुआयामी भूमिका का निर्वाह करने वाले व्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है। शिल्पकार शिल्पवस्तुओं के निर्माता

और विक्रेता के अलावा समाज में डिजाइनर, सर्जक, अन्वेषक और समस्याएं हल करने वाले व्यक्ति के रूप में भी कई भूमिकाएं निभाता हैं।

इसलिए शिल्पकार केवल एक वस्तु निर्माता ही नहीं होता और शिल्पवस्तु (क्राफ्ट) केवल एक सुंदर वस्तु ही नहीं होती बल्कि इसका सुजन एक विशेष कार्य के लिए, ग्राहक की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए किया जाता है।

**वस्तुतः** शिल्पकार एक समस्या समाधानकर्ता के रूप में कुशल भूमिका निभाता है (विशेषतः ग्रामीण भारत में)। उदाहरण के लिए, उपभोक्ता या

ग्राहक शिल्पकार से कह सकते हैं कि वह एक ऐसा वस्तु या सामान बनाये, जिसे वे आसानी से पकड़ सकें और उससे दैनिक व हर तरह के जरूरी कार्य कर सकें। इस संबंध में शिल्पकार यानि कि कसेराठठेरा, ताप्रकार, बढ़ई, स्वर्णकार, लोहार, कुम्हार आदि ऐसे सामान व वस्तुओं को इस तरह से डिजाइन करेगा कि उसे आसानी से पकड़ा जा सके और वह उस वस्तु को इस प्रकार का आकार देगा कि न तो वह बहुत भारी हो और न ही बहुत बड़ा। इस तरह स्पष्ट है कि ग्राहक शिल्पकार को एक समस्या को हल करने के लिए देता है कि वह उनके

लिए जरूरत के सामान तैयार करे। शिल्पकार जिस जीवंतता के साथ कार्य करता है, वह उसे एक सांस्कृतिक प्राणी और सौन्दर्योपासक (वस्तु की सुंदरता की उपासना एवं आराधना करने वाला) बना देती है। विभिन्न वस्तु एवं उत्पाद का निर्माण उसके लिए एक साधना हो जाती है। अपनी इसी साधना को इन्द्रधनुषी आभा प्रदान करने में वह लगा रहता है। गहराई से देखें तो शिल्पकार द्वारा निर्मित उत्पाद उपयोगिता, सौन्दर्य, अंतसंपर्कों को बढ़ावा देने का उपादान होता है। शिल्पकार की विशिष्टता उत्पाद की कलाकारी और सजावट नहीं बल्कि ग्राहक की समस्याओं हेतु उपयुक्त एवं कल्पनाशील हल ढूँढ़ने में शिल्पकार का कौशल है। ऐसे में ग्राहक की जिम्मेदारी भी बनती है कि वह शिल्पकार को प्रोत्साहित करे जिससे कि वह हर समय नई और उत्साहजनक वस्तु का सुजन एवं उत्पादन करे। इस दृष्टि से ग्राहक और शिल्पकार के मध्य संबंध और उपयोगी अंतसंपर्क ही शिल्पकला के सर्वोत्तम विकास में सहायक है।... एक प्रकार की चिडिया जिसके बोतने पर ऐसा जान पड़ता है कि कोई शिल्पकार किसी धारु या वस्तु को पीट या गूंथ कर उनके लिए उनकी जरूरत की सामग्री बना रहा हो। लेकिन यह दुर्भाग्य है कि भारत देश की आजादी में महत्वपूर्ण व अग्रणी भूमिका का निर्वहण कर अपना सबकुछ होम करने वाले भगवान विश्वकर्मा के पुत्र कसेरा-ठठेरा, स्वर्णकार, बढ़ई, कुम्हार लोहार एवं ताप्रकार यानि शिल्पकार समाज आज सामाजिक पिछड़ापन, सामाजिक न्याय एवं राजनीतिक भागीदारी के अधिकारों से वंचित है, जबकि परंपरागत इस शिल्पकार समाज के बिना मानव सभ्यता-संस्कृति तथा विकास की परिकल्पना कर्त्तव्य संभव नहीं है।

शिल्पकार समुदाय के बड़े-बुजुर्गों और इनके पूर्वजों को पूरा यकीन था कि आजादी के बाद उनकी पीढ़ी को राजनीतिक व सत्ता की भागीदारी में महत्वपूर्ण स्थान मिलेगा, जिससे उनकी अस्मिता व अस्तित्व की गैरवशाली पहचान कायम रहेगी, लेकिन यह छलावा आजादी के 73 सालों बाद भी राजनीतिज्ञों के दगाबाजी के रूप में साबित होती दिख रही है। जिससे शिल्पकार समाज आज शोषित समाज का रूप लेकर अपनी फुटी किस्मत पर आठ-आठ आंसू बहाने को विवश है। आज राजनीति विचारधारा के लोग गांधीवादी, मार्क्सवादी एवं समाजवादी नजरिए से शिल्पकार की यथार्थवादी पीड़ा को नहीं देख पाते। दलित और अति पिछड़ों के मामले में आज भी मानवीय और लोकतांत्रिक हितों की बात न्यायपूर्वक नहीं सोची जाती, जिस कारणवश आजादी के 73 वर्षों बाद भी देश का प्रमुख समुदाय शिल्पकार राजनीतिक भागीदारी से वंचित है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि आज कोई भी पार्टी या दल शिल्पकार की ताकत या उनकी प्रतिभा को समझ नहीं पा रही है, जिस वजह से राजनीतिक भागीदारी में इस शिल्पकार समुदाय को जगह नहीं दी जा रही है। राजनीतिक दलों का ऐसा मानना है कि कसेरा-ठठेरा, बढ़ई, स्वर्णकार, लोहार, कुम्हार, लहरी, गडेरी, तांती ऐसी अन्य छोटी-छोटी जाति व पिछड़ी,

जातियों के बोट हमारे किसी भी चुनाव को प्रभावित नहीं कर सकते, इसलिए इन जातियों की राजनीतिक भागीदारी शुन्य ही रखनी है। यही किरण है कि आजादी के बाद से आज तक राजनीतिक दलों की वर्चस्वादी नीति कायम है। अफसोस तो यह है कि शिल्पकार समाज सत्ता परिवर्तन की कूवत रखने के बाद भी केवल एकजुटता के अभाव में वह खुद को निरिह व कमज़ोर मान राजनीतिक व सत्ता की भागीदारी को एक सपना समझ बैठा है।

जब यह देश आजाद हुआ था तो इस समुदाय के लोगों की आंखों में उम्मीद की नई किरण जगी थी। अधुरी इच्छा को पूरी करने की उम्मीद, सुख-शांति व समृद्धि का ख्वाब, राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित का सपना, न्याय, विकास व समतावादी विचारधारा का भरोसा! पर अफसोस है कि आजादी के इन्हें सालों बाद भी ये उम्मीद, ख्वाब, इच्छा और भरोसा सब धेरे के धेरे रह गए। वह कभी हकीकत में नहीं बदले, परिणाम स्वरूप सबसे सुदृढ़, मजबूत व प्रतिभावान शिल्पकार समुदाय ने तृत्वविहिन हो आज समाज का सबसे कमज़ोर व असहाय बनकर राजनीतिक व सत्ता की भागीदारी से कोसों दूर है।

शिल्पकार समाज सूजन, सौंदर्य व विकास के मजबूत वाहक हैं। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक शिल्पकारों ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर अपने कौशल से देश को सजाने व संवारने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। राजा से लेकर साधारण किसान तक के लिए हर उपकरणों का निर्माण कर मानव सभ्यता के विकास में सर्वस्व होम करने वाले शिल्पकार की दशा-दुर्दशा असहनीय है। इन्हें सदैव गिरा रहने के लिए एक साजिश के तहत सबसे पहले आजादी के बाद तेजी से आए भारतीय विकास योजनाओं में समुचित भागीदारी से वंचित रखा गया, तत्पश्चात मशीनीकरण के विकास के बाद परंपरागत शिल्पकारों के हाथ से उनके पुर्वजों के व्यवसाय छीने गए और इन्हें असहाय व निरिह महज इसलिए रखा जा रहा है कि भविष्य में वह कभी उठने की दुस्साहस न कर सके। राजनीतिक महत्वाकांक्षी लोग ने यह संकल्प ले लिया कि छोटी जातियों को सदैव छोटा ही रख उन्हें राजनीति व सत्ता की भागीदारी में सटने तक से वंचित रखा जाय। जबकि भारतीय संविधान के अनुसार लोकतंत्र में सभी जाति, सभी समुदाय और सभी पंथ के लोग एक समान हैं। ऊच-नीच, अमीर-गरीब और हर धर्म-मजहब के लोगों को राजनीति व सत्ता की भागीदारी में समान अवसर मिले। राजनीतियों को इस तरह के कुर्तिस व संकीर्ण सोच से बाहर आकर भारतीय लोकतंत्र व संविधान की रक्षा हेतु शिल्पकारों को उनके हर हक-हकूक उपलब्ध कराने चाहिए न कि चुप करो के हाथ पैर बांधकर विकास की दोड़ में खुला छोड़ दे, जिस कारणवश परंपरागत शिल्पकार राजनीतिक-धार्मिक व सामाजिक रूप से दिनोंदिन अत्यंत पिछड़ता चला जाए। भारतीय अर्थव्यवस्था की आधारशिला में परंपरागत शिल्पकारों का उल्लेखनीय योगदान सदैव रहा है और सदैव रहेगा भी। शिल्पकारों की

सहनशीलता को कायरता समझने की भूल राजनीतियों को त्यागनी होगी, अन्यथा कहीं ऐसा न हो कि भीतर ही भीतर शिल्पकारों की एकजुटता राजनीतियों को दीमक की तरह खाकर उनकी पार्टी व दल और उनकी राजनीतिक महत्वाकांक्षा को नाकाम कर दे।

वर्तमान समय की आर्थिक चुनौती के समाधान के लिए कुटीर उद्योगों व व्यवसायिक पुनरुत्थान बहुत जरूरी है। आज लोहकारों, सोनारों, ताप्रकारों के धातु, संवर्धन एवं गलाई के कारखाने बंद हैं और बड़ी-बड़ी कंपनियों ने इनके कार्य क्षेत्र पर अपना आधिपत्य जमाकर शिल्पकारों के रोजी-रोटी और उनके पेट पर लात मार उसे मरने पर विवश कर रहे हैं। शिल्पकारों के आर्थिक संकट ने उन्हें विशेष कमज़ोर बना दिया है। राज्य और केन्द्र की सरकार पर पुंजीपतियों का आधिपत्य है। सरकार वही करती है, जो पूंजीपति चाहते हैं। पेड़-पौधे और जंगलों से लेकर बड़ी-बड़ी इमारतों पर पूंजीवाद का कब्जा है। गरीब व दबे-कुचले छोटी जाति व शिल्पकारों का धंधा-व्यवसाय बंद है। लोग बेरोजगारी, भूख व तंगहाली से परेशान होकर दम तोड़ने के कगार पर हैं, लेकिन सरकार इन शिल्पकला आविष्कारक के प्रति पता नहीं मौन क्यों हैं...?

गैरतलब हो कि समस्त सृष्टि, जिस सुन्दर रूप में दृष्टिगोचर हो रही है, वह परंपरागत शिल्पकारों के अथक मेहनत, लगन, जोश, उर्जा और जूनून की देन है। एक ऐसा सत्य है, जिस पर पूरी दुनिया को गर्व है। आज भी शिल्पकारों द्वारा रची गई कृतियों के वर्णन से वैदिक व पौराणिक ग्रंथ भरे पड़े हैं। शिल्पकारों ने अपनी मेहनत व लगन से जो कालजीय इबारत लिखी है, वह वर्तमान में अमिट है।

सृष्टि के रचयिता भगवान विश्वकर्मा के वंशज अपनी तकनीकी कौशलता से संपूर्ण सृष्टि को रचाने बासाने में आज भी क्रियाशील है। इस तरह हम देखते हैं कि मानव सभ्यता को नया आयाम देने का कार्य परंपरागत शिल्पकारों ने ही किया है, इसमें कोई सदेह नहीं।

लेकिन यह दुर्भाग्य है कि वैदिक-पौराणिक और आधुनिक युगों में अपने हुनर से एक अलग ऐतिहासिक पहचान स्थापित करने वाले शिल्पकार समुदाय के लोगों के जीवन स्तर में कोई बदलाव नहीं आ पाया है, क्योंकि इनके लिए सरकार या राजनीतियों द्वारा कोई नीतिगत योजना बनाया नहीं गया। पुरी दुनिया को अपनी प्रतिभा से सजाने व संवारने वाले शिल्पकार समाज आज भी आर्थिक पीड़ा से पीड़ित हो राजनीतियों के शोषित हैं।

बहरहाल सरकार को चाहिए कि इस दिशा में ध्यानाकृष्ट कर फिलहाल शिल्पकार विकास आयोग का गठन करे और इनके प्रगति व उन्नति के लिए कोई कारगर योजना राज्य स्तर पर चलाए। इस तरह के सकारात्मक कार्य निश्चित रूप से सिर्फ कारों के लिए जीवनदान और रामबाण लाने वाली सरकार और राजनीतिज्ञ निश्चितरूप से इस शिल्पकार समाज के भाग्य विधाता साबित होंगे।

# राजस्व मंत्री के द्वारा सड़कों का किया गया शिलान्यास

हरगांव को पक्की सड़क से जोड़ा जाएगा 13 सड़कों का किया गया शिलान्यास



राजेश पंजिकार (ब्यूरो  
चीफ)



बिहार सरकार के भूमि सुधार एवं राजस्व मंत्री रामनारायण मंडल के द्वारा बाराहाट प्रखण्ड के विभिन्न गांवों मेंलगभग 6 करोड़ की लागत से बनने वाले 13 सड़कों का शिलान्यास करते हुए, कार्य आंभ हो हुआ। इस दौरान उन्होंने उपस्थित कार्यकर्ताओं एवं ग्रामीणों को संदेश देते हुए कहा कि एनडीए की सरकार सबका साथ सबका विकास में विश्वास करती है। और यही हमारी पहचान है उन्होंने

कहा कि सरकार हर गांव को पक्की सड़क से जोड़ने के लिए कृत संकलिप्त है। इस मौके पर ग्रामीण कार्य प्रमंडल के कार्यपालक अभियंता, सहायक अभियंता जेई रेखा कुमारी सहित भाजपा प्रखण्ड अध्यक्ष सुभाष साह, ललित किशोर सिंह, मुख्या भोला पासवान, रमेश मंडल आनंद शंकर झा, बाल्मीकि भगत नीरज झा, सहित सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद थे 12 प्रखण्ड में पिछले कई दशक से विभिन्न गांव में जाने हेतु सड़क पक्की था कच्ची सड़क थी। बाराहाट क्षेत्र में जिन सड़कों के निर्माण हेतु माननीय मंत्री के द्वारा शिलान्यास किया गया वह निम्न है। बंसी टोला धोषपुर से मोहनपुर पीएमजीएस एस वाई रोड 19.7 लाख की लागत से राधा भवन ताड़ी से ताड़ी पीएमजीएस एस वाई रोड 78.35 लाख

की लागत से गांव से मेन रोड 15 लाख की लागत से भेड़ा पच टकिया राजघाट पथ 40.59 लाख की लागत से तारडीह गोटिया से पथरा दासो डीह बधनगामा पथ 42.19 लाख गजंडा सिमरिया पथ 52.73 लाख सीताराम पंडित के घर से श्री राधे तक 1246 लाख दासू डीजे पथरा दसूटी बधनगामा पथ 45.69 लाख केनवा टीकर सीरादे पथ 11.40 लाख गोविंदपुर राय टोला से गोविंदपुर पथ 31.01 लाख नवटोलिया से दुबराजपुर पथ 67.95 लाख बाबू डीह चौपाल से भगलपुर दुमका मुख्य मार्ग तक 65.59 लाख एवं रामदेवकिता से पंजवारा तक 24.05 लाख की लागत से कुल 6 करोड़ की राशि के सड़कों का शिलान्यास किया गया।

# वन एवं पर्यावरण विभाग के द्वारा की जा रही अनोखी पहल बांस की खेती से समृद्धिशाली होंगे जिले के किसान



राजेश पंजिकार(ब्यूरो चीफ)



वन एवं पर्यावरण विभाग बांका जिले के किसानों को बांस की खेती के लिए समृद्ध करेगा. जिले में बांस का उपयोग बहुत अधिक है इसके मुकाबले उसका उत्पादन बहुत कम है .एक अनोखी पहल के तहत जिले के बैसे बंजर भूमियों पर पर भी बांस की खेती की जाएगी, जिससे इस क्षेत्र के किसान समृद्ध होंगे ,और रोजगार के भी अवसर मिलेंगे..इसके लिए सरकार ने योजना भी तैयार की है. जिससे क्षेत्र में अधिक से अधिक बांस की खेती हो सके इससे गरीबों के उत्थान के साथ ही पर्यावरण संरक्षण में भी सुधार

हो सकेगा .इसके लिए राज्य सरकार की ओर से पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग ने काम शुरू कर दिया है .किसानों एवं युवाओं को बताया जाएगा कि बांस की खेती से बेहतर ,बेतहाशा बढ़ रहे प्रदूषण पर किस प्रकार सेनिजात मिल सकती है .यही नहीं युवा बुजुर्गों व महिलाओं को रोजगार के भी अवसर मिलेंगे. इस संदर्भ में बांका वन एवं पर्यावरण विभाग के वन प्रमंडल पदाधिकारी राजीव रंजन ने चर्चित बिहार को बताया कि बांस से कागज साड़ी ,टोकरी, सहित दो दर्जन से अधिक सामग्री बनने के साथ ही भवन निर्माण में भी अब इसका इस्तेमाल हो रहा है .मौजूदा समय में इन परिस्थितियों का निर्माण और प्रशिक्षण लेबर कर रहे हैं .सरकार लोगों को बांस से सामग्री बनाने में कुशल बनाने में कुशल बनाने के लिए जिला स्तर पर चार विभाग कृषि ,उद्यान ,आत्मवन व वन विभाग को जिम्मेदारी सौंपी गई है.

वन प्रमंडल पदाधिकारी राजीव रंजन ने आगे बताया कि किसानों को स्किल्ड डेवलपमेंट के लिए वन विभाग प्रशिक्षण देगा .पर्यावरण संरक्षण के लिए बांस की खेती को बढ़ावा दिया जाएगा. इसके तहत बांका जिले में भी हरियाली लाने की योजना तैयार की गई है. राष्ट्रीय बांस मिशन के तहत ग्रामीण इलाकों में बांस की खेती को बढ़ावा दिया जाएगा .जिससे अधिक से अधिक बांस की खेती हो सके .इसके लिए वन विभाग की ओर से ग्रामीण इलाकों के किसानों को बांस की खेती का विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा .साथ ही क्षेत्र में जागरूकता अभियान भी चलाए जाएंगे. जिले के बांस की खेती करने वाले किसानों की सूची भी तैयार की जा रही है. जिससे इसके आधार पर उन्हें बांस की खेती से जोड़ा जाएगा. जिससे इसके उनके रोजगार के अवसर बनेंगे और वह आत्मनिर्भर होंगे. जीविका दीदी के जरिए हरियाली आएगी बांका



जीविका दीदी के साथ वन प्रमंडल पदाधिकारी राजीव रंजन

जिले में बन विभाग ने जीविका दीदियों के जरिए भी जिले में हरियाली लाने की पहल की है। इसके लिए पायलट प्रोजेक्ट के तहत क्षेत्र में 5 जीविका समूहों को मुख्यमंत्री निजी पौधशाला योजना से जोड़ा जाएगा। राजीव रंजन ने आगे बताया, इस समूह से जुड़ी जीविका दीदी अपनी निजी जमीन पर 20 20 हजार पौधों की नरसरी तैयार करेगी।

जिससे वन विभाग पौधों की खरीद कर उसका उपयोग जल जीवन हरियाली अभियान के तहत जिले में बन क्षेत्रों का दायरा बढ़ाने और पर्यावरण संरक्षण के लिए करेगा। इसके एवज में जीविका समूह को जीवित पौधों की कीमत के तौर पर प्रति पौधा 11 की दर से भुगतान की जाएगी। जीविका समूह को नरसरी तैयार करने के लिए प्रथम किस्त के तौर पर 40 फीसदी राशि का भुगतान भी करेगा। इसके बाद शेष राशि पौधा खरीद के बाद ही जाएगी। इस योजना से जुड़ी दीदी अपने स्वरोजगार शुरू कर सकेगी। जिससे यहां महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिलने के साथ-साथ जीविका समूह के सदस्यों की आर्थिक स्थिति

सुधरेगी। इससे पूर्व इस योजना का लाभ सिर्फ क्षेत्र के किसानों को दिया जाता था। बांका जिले के वन विभाग की एक अनोखी पहल के तहत जल जीवन और हरियाली मिशन को धरातल पर लाने हेतु विशेष पहल भी जारी है। वृक्षारोपण के तहत जिला क्षेत्र में दस हजार पौधे लगाने का लक्ष्य है। जिसके तहत 28 प्रजातियों के वृक्ष में लगाए जाएंगे। जिसमें प्रमुखतः बरगद, बेल, फलदार वृक्ष में आम, जामुन कटहल, आंवला, इन प्रजातियों के पौधे लगाए जाएंगे। मुख्यतः सागवान, चिलमिल, बरगद, पीपल आमला, शरीफा आदि विभिन्न प्रजातियों के पौधे सड़कों के मुख्य किनारों पर पौधे लगाने का लक्ष्य है। अमलतास नीम बेल बेल पीपल भी लगाने का लक्ष्य है। साथ ही सुपाहा वन क्षेत्र में ट्रीटमेंट प्लाट लगाने की भी योजना है। विभाग की यहां किसान को हर सुविधा उपलब्ध होगी। वहां बांस से विभिन्न वस्तुओं का निर्माण किया जाएगा। जैसे अगरबत्ती की छड़ी अगरबत्ती की छड़ी और पान की डंडी एवं अन्य तरह कीसा सामग्री जो बांस से तैयार होती हो, का निर्माण कराया जाएगा।

सरकार के द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए बांस की खेती को बढ़ावा देने की योजना तैयार की है। इसके लिए क्षेत्र में किसानों का डाटाबेस तैयार किया जा रहा है। जिससे भी बांस



की खेती कर सकेंगे वहीं क्षेत्र में किसानों को बांस की खेती के लिए जागरूक किए जाने के अभियान भी चलाए जाएंगे। साथ ही जीविका जल जीवन - हरियाली - अभियान के साथ ही साथ महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए पायलट प्रोजेक्ट के तहत जिले की पांच जीविका समूह को मुख्य निजी पौधशाला योजना से जोड़ दिया गया है। जिन्हें अपनी निजी जमीन पर 20 20 हजार पौधों की नरसरी तैयार करने की जिम्मेदारी दी गई है।

**राजीव रंजन  
वन प्रमंडल पदाधिकारी  
बांका**

# जल और जंगल से ही बचेगा जीवन

बिहार ने जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर सार्थक पहल कर देश और विश्व के सामने एक नजीर पेश करने का सार्थक प्रयास किया है। इसमें दो राय नहीं कि अब ऐसी स्थितियां बनती जा रही हैं कि जल, जीवन और हरियाली के संरक्षण से जुड़े कार्यक्रम सारे देश में ही चलाने होंगे। इसमें सरकार और समाज को मिल-जुलकर भाग लेना होगा। हमें उन तालाबों को फिर से जीवित करना होगा जो विकास की दौड़ में दफन हो गए या धनलिप्सा की वजह से अतिक्रमित कर लिये गये। अगर बात दिल्ली की ही करें तो जब देश आजाद हुआ था, उस समय दिल्ली में 363 गांव थे, जिनके आसपास 1012 तालाब थे। आबादी बढ़ने और दिल्ली के विकास के साथ ही कुछ गिने-चुने तालाबों को छोड़कर बाकी खत्म हो गए। कई तालाबों पर तो आलीशान कॉलोनियां बस गईं। जो तालाब आज के दिन बचे भी हैं, उनमें से ज्यादातर लगभग सूख चुके हैं। क्या यह किसी को बताने की जरूरत है कि जल है तभी कल है? अगर हमारे शहरों में बारिश के पानी को सही तरीके से संचित किया जाए तो पेयजल का मसला हल हो सकता है। हमें अपनी आने वाली नस्लों के लिए एक हरी भरी धरा सौंपनी होगी ताकि पृथ्वी पर जीवन का यह क्रम जारी रहे। पर फिलहाल तो स्थिति बेहद डरावनी सी बनी हुई है।

देशभर में वास चौतरफा नकारात्मक बातावरण से हटकर बिहार ने ह्यजल जीवन हरियालीहू की अहम जरूरत पर एक महत्वपूर्ण अभियान को शुरू करके देश को निश्चय ही एक नई दिशा दिखाने का सकारात्मक प्रयास किया है।

सवाल है कि हम जल संरक्षण को लेकर आखिर कर क्या रहे हैं? बिहार में जल जीवन हरियाली अभियान के बहाने यह सवाल तो पूछा ही जाना चाहिए। इस सवाल का उत्तर है- कुछ नहीं। बस थोड़े-बहुत सांकेतिक प्रयास। क्या होने वाला है इन सांकेतिक प्रयासों से? जो जल, प्रकृति, सुन्दर बन-उपवन व हरी भरी वसुंधरा हमें हमारे पुरखों ने दी है आज हम उन सभी का अंधाधुंध दोहन और दुरुपयोग कर आने वाली पीढ़ियों के जीने का हक छीन रहे हैं। उनके लिए हम कितना खराब संसार देकर जाएंगे। सोचकर देखिये तो कांप उठेंगे। विश्व भर में पेयजल की कमी अब एक गम्भीर संकट बन चुका है। इसका कारण पृथ्वी के जलस्तर का लगातार नीचे होते जाना है। वर्षा जल संचयन का एक बहुत प्रचलित पारम्परिक माध्यम है ट्रैच। इसके तहत छोटी-छोटी नालियां, पेन और आहर बनाकर वर्षा जल संरक्षित किया जाता है। तालाब तो है ही। जल ही हमारे जीवन का आधार है। जल के बिना धरती पर जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। हम रोटी, कपड़ा और मकान के बिना भी कुछ दिन जीवित रह सकते हैं। लेकिन, शुद्ध हवा और शुद्ध पानी के बिना बिलकुल भी नहीं। इसीलिये तो सुप्रासिद्ध कवि रहीम खानखाना ने कहा है- रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सून। पानी गये न उबरै मोती मानुष चून।

कहना न होगा कि यदि जल न होता तो सुष्टि का निर्माण ही सम्भव न हो पाता। आज भी जब हम चांद और मंगल पर बसने की बात करते हैं तो सबसे पहले ढूँढते क्या हैं? पानी ही न? यही कारण है कि जल एक ऐसा प्राकृतिक संसाधन है जिसका कोई मोल ही नहीं है। जीवन के लिये जल की महत्ता को इसी से समझा जा सकता है कि तमाम बड़ी-बड़ी स्थिताएं नदियों के तटों पर ही विकसित हुई और अधिकांश प्राचीन नगर भी नदियों के तट पर ही बसे। जल के महत्व को ध्यान में रखकर यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम न सिर्फ जल का संरक्षण करें बल्कि उसे प्रदूषित होने से भी बचायें। इस सम्बन्ध में भारत में जल संरक्षण की एक समृद्ध परम्परा रही है। ऋग्वेद में जल को अमृत के समतुल्य बताते हुए कहा गया है- अप्यु अन्तः अमृतं अप्यु भेषनं। एक वैज्ञानिक रिसर्च के मुताबिक 2030 तक देश के लगभग 40 फीसदी लोगों तक पीने के पानी की पहुंच खत्म हो जाएगी। चेन्नई में आगामी कुछ वर्षों में ही तीन नदियां, चार जल स्रोत, पांच झीलें और छह जंगल पूरी तरह से सूख जाएंगे। जबकि देश में कई अन्य जगहों पर भी इन्हीं परिस्थितियों से गुजरना पड़ेगा। ऐसा नहीं है कि यह रिपोर्ट पहली बार आई है। तीन साल पहले भी नीति आयोग ने अपनी एक रिपोर्ट में बताया था कि देश में जल संरक्षण को लेकर अधिकांश राज्यों का काम संतुष्टिजनक नहीं है। एक अहम बात यह भी है कि हाल के वर्षों में ग्रामीण अंचलों में भी जल संकट बढ़ा है। वर्तमान में ही करोड़ों भारतीयों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध नहीं हो पाता है। वर्तमान में देश की आबादी हर साल 1.5 प्रतिशत बढ़ रही है।



आशंका जताई गई है कि वर्ष 2050 तक भारत की जनसंख्या 150 से 180 करोड़ के बीच पहुंच जाएगी। ऐसे में सभी नागरिकों के लिये देश के हर क्षेत्र में जल की उपलब्धता को सुनिश्चित करना आसान नहीं होगा। जल के स्रोत तो सीमित हैं और रहेंगे भी। नये स्रोत पैदा होंगे भी नहीं! ऐसे में उपलब्ध जलस्रोतों को संरक्षित रखकर एवं वर्षा के जल का पूरी तरह संचय करके ही हम जल संकट का मुकाबला कर सकते हैं। जल के उपयोग में मितव्ययी भी बनाना पड़ेगा। जलीय कुप्रबंधन को दूर कर ही हम इस समस्या से निपट सकते हैं। यदि वर्षाजल का समुचित संग्रह हो सके और जल के प्रत्येक बूँद को अनमोल मानकर उसका संरक्षण किया जाये तो कोई कारण नहीं है कि जल संकट का समाधान न प्राप्त किया जा सके। जल के संकट से निपटने के लिये तत्काल कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाने होंगे। जैसे कि विभिन्न फसलों के लिये पानी की कम खपत वाले तथा अधिक पैदावार वाले बीजों के लिये अनुसंधान को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। देश की आजादी के वक्त दिल्ली में 363 गांव थे, जिनके आसपास 1012 तालाब थे। लेकिन आज कुछ गिने-चुने तालाबों को छोड़कर बाकी खत्म हो गए। रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक जिनके उपयोग से ज्यादा जल की आवश्यकता होती है उसके स्थान पर देसी गौवंश के गोबर और गौमूर पर आधारित उर्वरकों और कीटनाशकों को बढ़ावा देना होगा जिससे विषमुक्त आहार की पैदावार बढ़े और धरती पर मित्र जीवाणु और केंचुएं बढ़ें जिससे जल की खपत कम हो। लड़ सिंचाई पद्धति से स्थिकंलर सिंचाई या ड्रिप सिंचाई अपनानी होगी। एक महत्वपूर्ण बात और कि जहां तक सम्भव हो सके ऐसे खाद्य उत्पादों का प्रयोग करना चाहिए जिसमें पानी का कम प्रयोग होता है। मल्टी लेयर फर्मिंग करके एक ही भू भाग पर एक ही समय पांच या छह फसलें ली जा सकती हैं जिसमें पानी की खपत तो उतनी ही होगी जितनी एक फसल को जरूरत होती है। लेकिन उत्पादों की संख्या पांच या छह हो जायेगी। उत्पादन पांच गुना और जल का प्रयोग बीस प्रतिशत। किसानों की मेहनत तो उतनी है और लाभ पांच गुना। किसान भाइयों को यह जानना भी जरूरी है कि फसल के अच्छे उत्पादन के लिए जल की जरूरत नहीं होती है, बल्कि फसलों को अपनी जड़ों के आसपास नमी मात्र की जरूरत होती है जिसके सहारे वे अपना, भोजन भूमि में ही उपलब्ध उर्वरकों और लवणों के रूप में खींच सकें, बस इनी भर ही होती है सिंचाई की भूमिका। सिंचाई के नाम पर जल की बाबाई में कमी लाना इसीलिए भी आवश्यक है। आपको यह जानकर आश्र्य होगा कि विश्व में उत्पादित होने वाला लगभग 30 प्रतिशत अन्न खाया ही नहीं जाता है और यह बेकार हो जाता है।

इस प्रकार इसके उत्पादन में प्रयुक्त हुआ पानी भी व्यर्थ चला जाता है। जानकार यह भी कहते हैं कि वर्षाजल प्रबंधन और मानसून प्रबंधन को समुचित बढ़ावा दिया जाय और इससे जुड़े शोध कार्यों को प्रोत्साहित किया जाय और जल संरक्षण की शिक्षा को अनिवार्य रूप से पाठ्यक्रम में जगह दिया जाना आज की एक महत्वपूर्ण जरूरत है। बहरहाल, बिहार ने देश को जो ह्यजल जीवन हरियालीहू के माध्यम से दिशा दिखाई है, उससे देश को जागरूक करने की दिशा में भारी लाभ होगा।

# ऐलेविस्पा महांगा नहीं सबसे सस्ता

## अफवाह से बचें...



# ऐलेविस्पा हॉस्पीटल

सुपर स्पेशलिटी हॉस्पीटल

(ISO 9001:2008 से प्रमाणित)

### आपका खर्च एक नजर में

ओ.पी.डी. शुल्क : 100/- (6 महीने तक दुबारा फीस नहीं)
आई.सी.यू. चार्ज : 2500/- (प्रतिदिन डॉक्टर, नर्स खर्च समेत।)
डिलेवरी खर्च : 4000/- (पूरे डिलेवरी की दवा के साथ)

डॉयलेसिस

2200/-

डिजिटल एक्स-रे

200/-

जेनरल वार्ड

300/-

अल्ट्रासाउण्ड

600/-

सिंगल स्पेशल रूम 700/-

♦ जाँच एक्स-रे, सी.टी.स्कैन उपलब्ध ♦ 24 घंटे हर रोग के डॉक्टर उपलब्ध

## इमरजेन्सी कॉल : 76 76 780 780

### भर्ती से छुट्टी तक का खर्च

दवा, बेड चार्ज, हॉस्पीटल, ऑपरेशन चार्ज सहित, कोई अलग से खर्च नहीं

डॉयलेसिस ₹2200/- हरिया ₹8000/- हरयांसिल ₹5000/- डॉक्टर का फीस ₹1000/- 6 महीने तक दुबारा फीस नहीं

बच्चेदानी ₹12000/- एपेंडिक्स ₹6000/- बाबासीर ₹3000/- हड्डी का प्लास्टर ₹1000/-

हड्डी का सीधा टूटन ₹14000/- चिकित्सा का पत्थर का ऑपरेशन दूरीन सारा ₹12000/- ₹14000/- फिस्टुला ₹3500/-

नसबंदी - महिला : 2500/- पुरुष : 500/- 24 घंटे इमरजेन्सी सेवा

जिले के सबसे बड़े अस्पताल में स्वास्थ्य करें सुरक्षित दुग्धचार व अफवाह से बचें।

### पता :- अमरौर (अंग्रेजी डाला) बैगूसराय

लक्ष्मीनगर - दिल्ली विधानसभा सीट से भाई अभय वर्मा जी को जीत की बहुत बहुत बधाई एवं ढेर सारी शुभकामनाएं, लक्ष्मीनगर विधानसभा क्षेत्र की तमाम जनता को दिल से आभार व धन्यवाद जिन्होंने हमारी बातों पर विश्वास किया और आपार मतों से जीत दिलाया, लक्ष्मीनगर निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर रहेगा ऐसा हम सभी उम्मीद और विश्वास दिलाते हैं।



## हंसदाज भारद्वाज

प्रदेश प्रवक्ता  
भाजयुमों दिल्ली

लक्ष्मीनगर - दिल्ली विधानसभा सीट से भाई अभय वर्मा जी को जीत की बहुत बहुत बधाई एवं ढेर सारी शुभकामनाएं



## अमरेंद्र शर्मा

पूर्वांचल मोर्चा  
शाहदरा जिला  
अध्यक्ष  
दिल्ली

# भोजपुरी की मधुर स्वर है देवी

अश्कीलता दुअर्थी संवाद जैसे आरोपों को छेल रहे भोजपुरी गीत संगीत में अगर किसी एक गायिका ने कभी भी अश्कील गाना नहीं गया तथा जिसका स्टारडम सदैव भोजपुरिया श्रोताओं दर्शकों के मन में रचा बसा रहा तो वह नाम है भोजपुरी की लोकप्रिय लोक गायिका देवी का. भिखारी ठाकुर महेंद्र मिश्र जैसे भोजपुरी के युग पुरुषों के माटी सारण की अनमोल रक्षा देवी ने उनकी विरासत को भी संभालने का काम किया है. पद्मश्री शारदा सिन्हा ने भोजपुरी में जिस विरासत को खड़ा किया है, उस विरासत को लोकगायिका देवी ने काफी हद तक संभालने की कोशिश की है।

**मूल रूप से बिहार के छपरा जिले की रहने वाली देवी ने खुद के संघर्षों के बाल पर अपना मुकाम स्थापित किया देश-विदेश में हजारों स्टेज शो कर चुकी देवी ने कभी भी अपनी पारंपरिक शैली को नहीं छोड़ा. सफलता के साथ ही साथ विवादों से भी देवी का नाता रहा है. हाल ही में अपने ब्रिजिलियन मित्र के साथ शादी**

जहां एक और अश्कील और द्विअर्थी गानों का बोलबाला है, वहीं देवी ने सफल होने के लिए इन चीजों से दूरी बनाई और सुगम लोकसंगीत के जरिए अपनी अलग पहचान कायम की। मूल रूप से बिहार के छपरा जिले की रहने वाली देवी ने खुद के संघर्षों के बल पर अपना मुकाम स्थापित किया देश-विदेश में हजारों स्टेज शो कर चुकी देवी ने कभी भी अपनी पारंपरिक शैली को नहीं छोड़ा. सफलता के साथ ही साथ विवादों से भी देवी का नाता रहा है. हाल ही में अपने ब्रिजिलियन मित्र के साथ शादी



करने की इच्छा जताने वाली देवी को लेकर सोशल मीडिया पर शरारती तत्वों ने अफवाह उड़ा दी उनका पर मित्र मुस्लिम है बाद में देवी ने सफाई देते हुए कहा कि यह उनका निजी मामला है और कुछ लोग उनकी छवि को खराब करना चाहते हैं. भोजपुरी में पारंपरिक और विरासत वाले गानों को अपने स्वर में सजाने वाली देवी के प्रशंसकों की तादाद करोड़ों में है. भोजपुरी की प्रतिनिधि गायिका को पद्म पुरस्कार देने की मांग को लेकर सारण हेल्पलाइन इस वर्ष हस्ताक्षर अभियान भी चला रहा है. सफलता के सोपान पर पहुंचने के बाद भी अपनी सहजता व सुलभता के कारण देवी सदाबहार गायिका के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने में सफल हुई है।